

# “अमृत सागर”

परम संत परम दयाल



स्वामी गोविन्द कौल



# “अमृत सागर”

— —

सर्वाधिकार सुरक्षित  
श्रीमती कमलावती काचर

— ० —

प्रकाशक :

महेन्द्र नगर आश्रम—सत्संग घर (जम्मू-तवी)

भाग—II

दूसरी आवृत्ति  
1985

मूल्य : 18/- रुपये





स्वामी गोविन्द कौल



गुरुब्रह्मा, गुरुविष्णू, गुरुदेव, मशहेवरः ।

गुरु साक्षात् परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

## विनम्र निवेदन

यह जगत असत्य है, अन्धकार है । मानव मात्र को अन्धकार से मुक्त होना है । सत्य को खोजना है । वास्तव में मानव-जीवन की यात्रा अन्धकार की ओर से प्रकाश के हेतु गमन की यात्रा है । परन्तु जैसा उपनिषदों में कहा गया है कि यह जगत उस परम की उस अनन्त असीम, शाश्वत, अच्युत, निर्विकार अविनाशी परब्रह्म की रचित लीला है । माया है । मानव यहां जन्म लेकर अपने निहित लक्ष्य को विस्मरण करके लीला से, माया से भ्रमित हो जाता है । वह काम, क्रोध, मोह, अहंकारादि विषयों में फंस कर इस नश्वर शरीर, विनाशी देह तथा तत्वों पदार्थों को ही जीवन का उद्देश्य मान कर अमूल्य तथा एक मात्र मोक्ष के साधन, इस जीवन को व्यर्थ व्यतीत करके आवागमन के चक्र में फंसा रह जाता है ।

नर देह एक उपलब्धि है । मानव के पास चिन्तन शक्ति है । मनन का बल है । इसी लिए इसे मानव कहा गया है । वह स्वयं का अध्ययन-चिन्तन कर सकता है । वह इस निष्कर्ष पर पहुँच सकता है कि वह क्या है और वह क्या हो सकता है । वह अपने अन्तः का मन्थन-अन्वेषण कर सकता है । मानव एक विधेयक है । वह एक बड़े सत्य, परम लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु संकल्प भी कर सकता है और समर्पित भी हो सकता है ।

प्रकाशित भक्ति रचनाएं, जिनके रचयिता स्वामी गोविन्द कौल जी हैं । सत्य के पिपासु तथा उपासना के जिज्ञासु भक्त-जनों के लिए



सुमार्ग प्रशस्न करने में परम सहायक सिद्ध हो सकती है। इनके द्वारा जिज्ञासु अपने भीतर उस दिव्य को अनुभव करने हेतु भक्ति का बीजारोपण कर सकते हैं।

उस जगदपिता परमेश्वर, परम ज्योति के समक्ष तनिक भी जाति भेद, बड़ा, छोटा, विद्वान, अज्ञानी किसी प्रकार का भेद भाव नहीं है। उसके समीप मानव का सबसे बड़ी सम्पत्ति विनम्रता, दया, कृपा सहानुभूति तथा परोपकार है।

इन रचनाओं द्वारा जो सन्देश आदरणीय स्वामी जी ने श्रद्धालुओं, पिपासु भक्त जनों को दिया है। उसे श्रद्धा पूर्वक ग्रहण करने से अन्तःकरण की शुद्धि तथा विषयों का संक्रमण सम्भव है। स्वामी जी कहते हैं— मन से सब सकल्प हटावो।

वास्तव में यह मन ही है जो मानव को विकारों, विषयों की ओर ले जाता है और यही वह शक्ति है जिससे मानव अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर हो सकता है। स्वामी जी ने मन के संक्रमण पर अधिक बल दिया है।

मन की तीन अवस्थाएं तथा तीन ही धरातल हैं। मन की पहली अवस्था है। सामान्य सांसारिक और सामान्य भौतिक तथा पदार्थक ज्ञान की अवस्था। यह अवस्था अधिकता में है। दूसरी अवस्था है— अधोगमन। जैसे जल नीचे ही की ओर बहता है। उसी प्रकार मन भी नीचे की ओर गिरता है। यह बाहिर के सौन्दर्य, आकर्षण, क्षणिक आनंद, क्षणिक भोगों का ओर शांतिता से भागता है। परिणामार्थ मन एक सशक्त चालक तथा मानव उसका घोड़ा बन कर रह जाता है।

मन की उत्कृष्ट तथा लक्षित अवस्था है अधर्वगमन। मन का ऊपर की ओर बहाव मन का ऊपर की ओर उठना। हमारे भारतीय दर्शन के



अनुसार उपासना— योग के तीन भागों को श्रेष्ठ तथा मानव की अवस्था तथा परिस्थितियों के अनुसार स्थापित किया गया है। वे मार्ग हैं भक्ति मार्ग अथवा भक्ति योग। कर्म मार्ग अथवा कर्म योग। ज्ञान मार्ग अथवा ज्ञान योग।

प्रारम्भ करने में यह तीनों मार्ग भिन्न दिखाई पड़ते हैं, परन्तु तीनों एक ही लक्ष्य को प्राप्त होते हैं। इन तीनों द्वारा मन ही का संक्रमण, उसका ऊपर की ओर गमन तथा संशोधन सम्भव कहा गया है। इसीलिए स्वामी जी बार-बार मन ही पर बल देते हैं।

स्वामी जी कहते हैं—

“वासनायि चठ मन प्राण जठ पठ रठ”

वासना को वश में करके मन तथा प्राण को केंद्रित करें।

क्रयायि जोरय मन गछि पावुन

मन, कर्म वचन द्वारा किए गए सद्कर्मों से मन पवित्रता सम्भव है।

मनि कासु चख तय दुय लोलो

मन की दुविधा तथा द्वन्द को समाप्त करके ही परमपिता का मिलन सम्भव है।

मनि रुखमनि वुथन व्यहन दवन

भगवान को यों स्वयं में बसा लो जैसे रुकमणि उठते-बैठते, जागते-सोते भगवान कृष्ण का स्मरण धारण किए रखती थी।

पोष्य कयं च्यतस त मनस चानि प्यठ पूजायि ना।

अपने मन रूपी पुष्प को भगवान के चरणों में समर्पित करने हेतु इसमें सुन्दरता तथा सुगन्ध भरो।

उस परम सत्य, परम पिता, सच्चिदानन्द की शरण में स्वयं को



आमूल समर्पित कर, कर्ता, कर्म तथा क्रिया उसी को जानकर उसी में लीन होना ही एक सच्चे भक्त की आकांक्षा तथा उसकी आसक्ति-भक्ति की पराकाष्ठा है ॥

सभी प्रकार की विधियों का, निवारण तथा मुक्ति हेतु किए गए भजन, तप, त्याग, योग साधन सभी की चरम सीमा एक मात्र समर्पण है। यही इस ग्रन्थ का सार है।

परन्तु समर्पण के तीन स्तर हैं। एक समर्पण एक पत्थर की भान्ति है जो स्वयं को सागर को समर्पित कर देता है, परन्तु वर्षों पर्यन्त निकालने पर वह कदापि आंशिक भी भीगा हुआ नहीं मिलता है।

दूसरे स्तर का समर्पण वस्त्र जैसा है। वस्त्र पानी को जल को सोख कर भीग तो जाता है, परन्तु अपना रंग तथा अस्तित्व नहीं छोड़ता।

तीसरा तथा उच्चतम समर्पण है खांड जैसा। खांड जल में गिरती है फिर धीरे-धीरे अपना अस्तित्व मिटा देती है। वह लीन हो जाती है। उसका आमूल विलय हो जाता है। और फलस्वरूप वह सारे जल को मीठा कर देती है। सच्ची भक्ति की चरम सीमा परम में लीन होना, विलय होना और शेष अपने पास कुछ न रखना है।

आशा है भक्त-बन्धु इस भक्ति रस से ओत-प्रोत काव्य संग्रह को धारण करके भक्ति-साधना के पथ पर अग्रसर होते हुए जन्म सफल करेंगे। उनके साथ पूजनीय मातेश्वरी जी की मंगल कामनाएं हैं। मातेश्वरी के साथ पृथ्वी नाथ पंडित जी का आशीर्वाद भी भक्तजनों के साथ है।

आपका :

एक भक्तिरस पिपासु



(iii)

(iv)



त्री में  
वेत की

ए गए  
समर्पण

भान्ति  
पर्यन्त

ो सोख  
।

गिरती  
ती है।

ो मीठा  
विलय

ग्रह को  
सफल

तिश्वरी  
ओं के

पासु



श्रीमती कमलावती काचरू









पृथ्वी नाथ पंडित जी



प्राण  
नाद  
दर  
सुय  
सम  
अम  
कुनु  
सम  
बुछ  
सुय  
ग्यर  
सत  
तीन  
जिन  
वि  
अन  
जल  
सन  
पूर्ण  
थि  
भर



## अनुक्रमणिका

| भजन             | पृष्ठ नं० | भजन              | पृष्ठ नं० |
|-----------------|-----------|------------------|-----------|
| प्राण पानय      | १         | स्वप्न माया      | २६        |
| नाद लायय        | २         | शिव शिव          | २६        |
| दर दिल          | ३         | पानय वुछमो       | २७        |
| सुय बोय         | ५         | डण्ड वथ          | २७        |
| सम अमयंत        | ७         | सुय म्य          | २९        |
| अमयंत च्यतस     | ८         | लयि दारि         | ३०        |
| कुनुय पहन       | ९         | समसर             | ३१        |
| समाध हथ         | ११        | पजि पजि          | ३३        |
| वुछ चोपोर       | १२        | तोशतो            | ३४        |
| सुय पानय        | १३        | सत च्यथ          | ३५        |
| ग्यरा धार       | १४        | मनि कासु         | ३७        |
| सत च्यथ         | १६        | सत च्यत आनन्द    | ३९        |
| तीनों जगत       | १७        | ओम परि पूर्ण     | ४१        |
| जिसते भ्रम      | १९        | सज तय बोगब       | ४४        |
| बिज्ञान का जो   | २०        | आनन्द गनय        | ४६        |
| अन यति          | २१        | जल वोन           | ४८        |
| जलवय गोविन्द है | २२        | अम मिटा          | ५१        |
| सन्तो बसन्त     | २२        | लोलुन ज्यत प्योम | ५३        |
| पूर्ण पूर्ण     | २४        | वन्दयो दुन पादन  | ५४        |
| थलि थलि         | २४        | छांज्याव म्य युस | ५६        |
| भमर पानय        | २५        | मन मूहन लोल      | ५७        |



| भजन                  | पृष्ठ नं० | भजन                   | पृष्ठ नं० |
|----------------------|-----------|-----------------------|-----------|
| लोल नार सूर          | ... ५९    | न्य ज्युगि            | .. ९४     |
| सत च्यत आनन्द        | ... ६०    | ब सोज                 | .. ९६     |
| समसार सोदरस ज्ञान    | ... ६२    | ओम सोरुप ओम           | ... ९७    |
| दोधवस अन्द्री कर छोप | ... ६४    | सत व्यचार भमन         | ... १००   |
| कल बाल               | ... ६५    | लोल छुम शिव चोन       | ... १०२   |
| लोल पोशन             | ... ६६    | मन मंज लिस            | ... १०३   |
| हनि हने मन म्य       | ... ६७    | जय जय कार             | ... १०५   |
| बीद थकि मत्य         | ... ६८    | आत्म ध्यान दार        | ... १०६   |
| गुर गुर करयो         | ... ६९    | यियि तनय सोन          | ... १०८   |
| दम दम क्रम           | ... ७०    | भगवानो गयि च्यानि     | ... ११०   |
| बनि व्यसि च          | ... ७२    | दिह दोह आवुय          | ... १११   |
| मंगुन हय छुम         | ... ७४    | यीच ह्यकख तीच         | ... ११३   |
| माता राजिना          | ... ७५    | लोल नार ह्युव         | ... ११४   |
| च्यानि रोयुक         | ... ७७    | कह्यताम २ मनि         | ... ११६   |
| तोशान छसा            | ... ७९    | ईश्वर गर सोनुय        | ... ११७   |
| मोय मडिरफथ           | ... ८०    | समतायि अमृत च्यथ      | ... ११८   |
| चई सोरुय             | ... ८२    | हे निज्जन दीजे दर्शन  | ... ११९   |
| लोल आम               | ... ८५    | अरे प्यारो करो व्यचार | ... १२०   |
| बाद छुय पूर          | ... ८७    | हाव दर्शुन अकाल लाल   | ... १२१   |
| आश्चर अमर            | ... ८८    | रछि वजे लछि           | ... १२३   |
| दित दर्शुन           | ... ८८    | ही सदा शिव सीव        | ... १२४   |
| संथ वोज सतगुरु       | ... ८९    | सर्व शक्ति मान कृपा   | ... १२५   |
| कह वोञ्ज             | ... ९०    | दयो च्योन दर्शुन म्य  | ... १२७   |
| गुल सय रोस           | ... ९२    | लोल नार म्य           | ... १२८   |



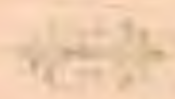
पृष्ठ नं०  
 ... ९४  
 ... ९६  
 ... ९७  
 ... १००  
 ... १०२  
 ... १०३  
 ... १०५  
 ... १०६  
 ... १०८  
 ... ११०  
 ... १११  
 ... ११३  
 ... ११४  
 ... ११६  
 ... ११७  
 ... ११८  
 ... ११९  
 ... १२०  
 ... १२१  
 ... १२३  
 ... १२४  
 ... १२५  
 ... १२७  
 ... १२८

| भजन                 | पृष्ठ नं० | भजन              | पृष्ठ नं० |
|---------------------|-----------|------------------|-----------|
| दय सोरुय रफ ताय     | ... १२९   | बरिथ प्रय करतो   | ... १४२   |
| शिव जुब जान पनुन    | ... १३०   | बोज तम बोज       | ... १४४   |
| तार छन भव दियि      | ... १३१   | जय जय आनन्द गण   | ... १४६   |
| सफलत से उठ ज्ञान    | ... १३३   | शिव शंकर ईश्वर   | ... १४७   |
| पत च्य मारान        | ... १३४   | नादा बु मरिमन्दि | ... १४९   |
| विज्ञान सुमन्दर सु  | ... १३५   | चिय हो ओसुख      | ... १५१   |
| शरमन्त वीर ति रुद्य | ... १३७   | कुनुय ओसुस       | ... १५२   |
| परम ब्रह्म ईश्वर    | ... १३८   | अस्य ओस          | ... १५३   |
| दयस पानय च पुशराव   | ... १३९   | सोन सतगुर गवय    | ... १५४   |
| म्य मन बोर भक्ति    | ... १४०   | सोन सतगुर ओस     | ... १५५   |
| कसर म्याव कर        | ... १४१   | —                |           |





| क्र.सं. | विवरण       | प्रमाण | प्रमाण |
|---------|-------------|--------|--------|
| १०००    | वि.सं. १००० | १०००   | १०००   |
| १००१    | वि.सं. १००१ | १००१   | १००१   |
| १००२    | वि.सं. १००२ | १००२   | १००२   |
| १००३    | वि.सं. १००३ | १००३   | १००३   |
| १००४    | वि.सं. १००४ | १००४   | १००४   |
| १००५    | वि.सं. १००५ | १००५   | १००५   |
| १००६    | वि.सं. १००६ | १००६   | १००६   |
| १००७    | वि.सं. १००७ | १००७   | १००७   |
| १००८    | वि.सं. १००८ | १००८   | १००८   |
| १००९    | वि.सं. १००९ | १००९   | १००९   |
| १०१०    | वि.सं. १०१० | १०१०   | १०१०   |
| १०११    | वि.सं. १०११ | १०११   | १०११   |
| १०१२    | वि.सं. १०१२ | १०१२   | १०१२   |
| १०१३    | वि.सं. १०१३ | १०१३   | १०१३   |
| १०१४    | वि.सं. १०१४ | १०१४   | १०१४   |
| १०१५    | वि.सं. १०१५ | १०१५   | १०१५   |
| १०१६    | वि.सं. १०१६ | १०१६   | १०१६   |
| १०१७    | वि.सं. १०१७ | १०१७   | १०१७   |
| १०१८    | वि.सं. १०१८ | १०१८   | १०१८   |
| १०१९    | वि.सं. १०१९ | १०१९   | १०१९   |
| १०२०    | वि.सं. १०२० | १०२०   | १०२०   |







सतचित आनन्दह गोवेन्दह निस्पन्दह नमामिहम  
चिदानन्दह सदानन्दह परमानन्दह नमामिहम  
दीनदबन्दह दयास्यन्दह निर्व्वन्दह नमामिहम  
सानि जुवह सदाशिवह गोवेन्दह नमामिहम







संस्कृत ग्रन्थालय  
संस्कृत ग्रन्थालय  
संस्कृत ग्रन्थालय  
संस्कृत ग्रन्थालय



म  
खु  
अ

वृ  
वृ  
त

छ  
दो  
यु





## प्राण पानय

प्राण पानय तूरय दवन,  
लोलऽ ग्यवन सू तऽ सू ॥

मऽठ जपऽमाल वस्य प्ययि ग्रन्थ,  
खुलऽ सपुद नादऽ व्यन्द,  
अन्द लगुम दवन तऽ दवन ॥

कुन मोचि गन्जरि त्रे,  
समतायि अमृत चि च्य,  
अनुग्रह कोर परमऽ शिवन ॥

बुछत व सुय परमऽ ज्यूती,  
वछतव तोहय ऋष्य पूती,  
तत सीती होश थवन ॥

गुरुय युक्ती छय व्यशशीश,  
च्यन बा गुरु उपदीश,  
कुल कलीश वस्य छि प्यवन ॥

छयन नो छुय तथ सातस,  
दोहस व्ययि रातस,  
युस यि ववन तस ति बवन ॥



गूढ्यन्द टोठयोय च्य दयो,  
करतऽ बा सहजऽ कयो,  
तय च्य करिथ सत भवन ॥



## नाद लायय

नाद लायय लोल हच बो  
सानि ईश्वरो वलो !  
चानि चाने कोरम्य वंऽसे  
रोस च्य क्या करो वलो ॥ नाद

दिलम्य न्यूथम मच ब् करथस

छुख ति दिलाराम सोन !

दिल बन्दय दिलबरय म्याने

क्या म्य दिल बऽरो वलो ॥ नाद

दुबः वंऽलिज फरेनय छम

याम याद छुहऽम प्यवान !

दिल फोलि पंपोष जन म्यान

म्यानि भासकरो वलो ॥ नाद

कमल पादन चानिय यय—

कमला पऽर पऽर लगी !

आयस अशि टऽर बरिथय

शेव शंकरो वलो ॥ नाद



वऽकफ म्यनिस च हालस

खत खालस सऽर सय !

पतलारय पंऽपोरि गथ

कर च्य गाशरो वलो ॥ नाद

ल लः बेमारे ब मऽरिस

चोन दर्शुन दस दवा !

त्यलि ति इखना यलि बः मरय

छुयना जरः जरो वलो ॥ नाद

चानि वापत मच ब गऽमच

सऽच ब चानि छस दऽरिथ !

गटि मंजय गाश अनतम

आश आश्चरो वलो ॥ नाद

दर्द दिलय बावि गूव्यन्द

कसच्य रोस वनतम च म्य !

लोल आमो बुकः बारेय

पनिन्य सथगोरो वलो ॥ नाद



दर दिल

दर दिल बोझ दर्दमन्दो

नाद लायय सानि गूव्यन्दो ॥



पान पुशरुम मोशरुम सोरुय  
कुन कथि हुन्द कोरुम न गुरुय  
मटि वन्य छुय सोनुय बोरुय ॥

सूर कोरनम चन्य लोल नारन  
दम दमय छस च्य गारन  
वादस चऽनिस छस प्रारान ॥

पथ च्य द्रायस कऽबील क्राने  
चानि चाने कोरम्य लाने  
म्योन हाल वन्य दयी ज्ञाने ॥

नाद

क्याजि लऽजथस बः लूक् पामन  
हाल पनुनुय वन क्या खामन  
चाख दिमना वनतम बः जामन । नाद

कुनि चोजुक नय ओस त्यलि गमय  
योद्य गेलम्य ति आलमय  
बस रोज़ खोश च्य हर दमय ॥

क्याः मे गुदरेव यि कुसु माने  
बोज़न वालि सथ गोरः म्याने

यस न गुदरऽव सु कमोह ज्ञाने ॥ नाद

छस बः बेताब न्युथम सबरऽय

क्याह कुनि सातः ह्यजिहऽम खबरय

छावनि यिख कर लोलः बबरय ॥

वन्य छः आशा दयव यिख हालय

नाव चोनुय छुय दयालय

त्यलि वनय पनुन् अहवालय ॥



પાનય પાનસ આલવ લાયત

બ્યોન બ્યોન ફલ બડગરત માયત

હોશ ગૂઘ્યન્દ લોલઃ પૂજાયત ॥

યો મ્ય ગુદરય્વ તિ કસૂ ગુદરોય્વ

અથિ યિથિય લાલા મ્ય રોવ

ગૂઘ્યન્દન સન્થન નય ત્રોબઃ ॥

ગૂઘ્યન્દન ઓય લોલય ગ્મવનય

નડવ નડવ વાળી છસ નવનય

અનગ્રહ કોરમુત છસ શિવનય ॥



## સુય બોય

સુય બોય અથ મંજ કાંહ ન શખય

ચજમ ચખય દુયી મને ॥

ચકર ચુરાસી લખય

મુકલી યસ ખ્રમ ફાસી છયને

છયનિ તસ મનિ ગંડ તય શખય ॥

સુય બોય વીદચ યિ હૃલત ઋલય

પ્રજ નાવ પાન સુય ચય અને

સત ચ્યત આનન્દ જ્યોતિ અલચય ॥



माहक छयन म कय २ परवय  
बुछ छाड़िथ छुसु ब्रोठकने  
कर व्यचार प्राव सुख दि थकय ॥

त्राव दिहि अध्यास बोड़ फखय  
गुणातीत शिव चय वुने  
ज्ञान नार दजि वास नायि रखय ॥

गरुब मचि न्यन्दरि तुल हखय  
बनि यस पानस तस नने  
करन रोस्त तौरय वोर हखय ॥ चजम

परत पान कुन व्यन्द प्राव सुखय  
ज्ञान शिव सोर सनि वोगने  
सोर पनुन क्या बावखय ॥ चजम

मो जुव कर ज्याद बख बखय  
पान सान ज्ञान दय हनि हने  
सहज भाव प्राव चली दुखय ॥ चजम

राग दोश सन्कल्प दूखय  
कर व्यचार शोदी बने  
नत मारजा फजूल जखय ॥ चजम

व्यशवय भय त्राव्य रुद्य न फखय  
ज्ञान र व खोत ज्ञन पूरि कओ  
गुव्यन्दस मनि गट न अखय ॥ चजम





## सम अमर्यत

सम अमर्यत के रिथ नोश  
छिय मद होश मस्तानय ॥

न्यशत्रय क्याह करि तथ बुद्ध  
छु बोज पर सू न्यति शुद्ध  
बीद सन्त अति गयि खामोश ॥

छिय

चोलुय ज्यन मरुनुक छ्युत  
पोतिम ब्रूठिम कोरमुत  
सोर मुत कोर फरा मोश ॥ छिय

दुयो परद थोदय तुल  
बुछ पान ह्यथ दयो कुल  
तुलख यलि त्यलि तोश ॥

छिय

कचहरो दिथ कुजा नो छु दय  
सुयय च्य ह्यथ पानस पय  
पोज वननस असि मो रोश ॥ छिय

सोनुय जुब छु सदा शिव  
बिज्ञान र व बुदय गप  
हृदय फोल जून पम्पोश ॥

छिय

पान मोठ मुत याद पोवथ  
नत क्याह प्रोबुथ त्रीबुथ  
कथ प्यठ अद खस्यी बोश ॥ छिय



अवांग मनस अगूचर

सुय वुय यि तस पूज कर

लाग दिह अभिमान पोश ॥

छिय

रुस छाज्याव सु असो

चठ व्यचार भ्रम फासो

वीद गुरु वाक्यन थव गोश ॥

छिय

वनि हे न गूव्यन्द यूत नोन

आन चलिथ वुछुन केह न ब्योन

प्रेमुक छुस आमुत जोश ॥

छिय



## अमर्यत च्यतस

अमर्यत च्यतस कर पान च्यतस

च्यतस बीद नो द्रावय हो ॥

दृशस मनस बोज तय च्यतस

च्य मंज अत्यन्त अभावय हो

सन्त बीद गन्यान तति हारतस ॥

च्य

वुठ छित फोरन ग्यवान म्यतस

वर ज़िथ रूप तय नावय हो

मूद्य रिन्द जिन्द अभाव जगतस ॥

च्य



अभिमान रोस्त च्यतस च ख्यतस  
त्रशवय ताफ शेह लावि हो  
कुन्यर ब्यन्यर न मंज मारिफतस ॥

च्यतस

रागय पोज माज मो माजस रतस  
त्राव अपज्युक चिक चावय हो  
यम्य त्रोव तस नो युन अत गतस ॥

च्यतस

दज दज मज क्याह अथ लोल ज्यतस  
माज च बोय नो हवावय हो  
रुजुम न सह तस्य पत मतस ॥

च्यतस

सुय बुय वुजा क्याह ज्यादा कतस  
गूव्यन्द सहज भावय हो  
त्राव भीद माजम पानस अच्यतस ॥

च्यतस



## कुनुय परुन

कुनुय परुन कुनुय सारुन  
कुनुय करुन पानस तस तय ॥

लोलकि नारन कोरनम म्य सूर  
हुमि यमि खोत यी कोर म्य मंजूर  
सुदूर न म्य ओस कथ छु व्यसरुन ॥



दीश दीश छाडुन ह बी छयनुन  
यस वीद ग्यवान सुय पान पनुन  
वनुन मुरुखन ह्ययी खरुन ॥

कुनुय

न्यर विकल्प वृथ न्यथ थावय  
जुवो सर्व आत्म भाव प्रावय  
त्राव दिहि अभिमान लूबस फरुन ॥

कुनुय

यस्य जोन पानस तस ह्य बीदय  
बीदय यति रुद तोत ह्य रवीदय  
वीदय वनान अति गछि डरुन ॥

कुनुन

वास नायि चठ मन प्रान जठ पठ रठ  
छठ त्राव दम्भय लूबय कपठ  
संकठ चलि लोल सूत्य मन बरुन ॥

कुनुय

रात्र छन दम दमा दमनय  
सूत्यी जान थव कत समनय  
शम नय सू हम सू परुन ॥

कुनुय

छरिसय पानस पूर्यर बन्योम  
दूर्यर न जोनुम पानय याद प्योम  
चोम प्रेयम अमृत कुनिरस छु दरुन ॥

अकिस ख्यनस ति यिन दय मशी  
गूढ्यन्द वीरव कोर मन वशी  
खुशी रोज गछि जिन्दय मरुन ॥

कुनुय





## समाध हथ

समाध हथ च्यथ रोजि गरि गरे रोजि गरि गरे  
हरे ॐ तत्सत परे लोलो परे लोलो ॥  
सूहम सू च्यथ ईकागर करे ईकागर करे  
छरिथ दय छुस गरे लोलो गरे लोलो  
गम चलि शम यियि तस युस सोरे तस युस सुरे ॥

सर्व आत्म भावय प्रावि युस मरे प्रावि युस मरे  
तस कुस मरि सू कस मरे लोलो मरे लोलो  
दुय चलिथ परत पान कुनुय स्वेर कुनुय स्वेर ॥  
व्यचार नावि क्यथ भवसर तरे भवसर तरे  
सु धर्मस प्यठ युस धरे लोलो धरे लोलो  
दिथ समाध प्रमाध गालि जिन्द मरे गलि जिन्द मरे ॥

सूत्य संतन न्यम द्यन द्यन बरे द्यन द्यन बरे  
फोल नस भाव पोश तस थरे लोलो तस थरे लोलो  
खर्य तन सु मुखन तस न कांह खरे तस न कांह खरे ॥  
परम आत्म ध्यान सुय हो धरे सुय हो धरे  
सोर पान सान जोत तम्य हरे लोलो तम्य हरे लोलो  
यि कथ सारिन्य कथ छि परे कथन छि परे ॥ हरे  
गूव्यन्द वन म तेज चार्यन चरे चार्यन चरे  
तस ननि युस लोल मन मरे लोलो मन भरे लोलो  
नत वननय क्याह जानख च शूरे जानख च शूरे ॥





## बुद्ध चोपोर

बुद्ध चोपोर पननुय तमाशा

मुचराव क्य ज्ञान न्यथरा ॥

सुमित्रता प्रसन्नता विद्या

व्यचार शम बान्धव म्यथर

ज्ञान दम व्ययि समता भ्रद्धा ॥

मुच

ततेक्षा समाधानता

बुपराम व्यर्थक म्यथर

अहिंय व्ययि मूखि यच्छा ॥

मुचराव

व्रशना ममता वासना

काम क्रूध लूभ मोह मद शथर

दम कपठ ज्ञान व्ययि आशा ॥

मुच

शुद्ध मन को बनाव चेला

आत्म ज्ञान बुप दोश ह्यथर

करतस चलि योहय दवा ॥

मुचराथ

कर बोज्ञ द्वयि पुरश अत्मा

सत्संग बुद्ध पोतुर

ज्यवि याञा ताञा मरि माया ॥

मुचराव

सन्तोश खंजांची अपना

सीवक वैराग दय शथर

ज्ञान विज्ञान वजीर ह्यथ क्षमा ॥

मुचराव



दि हे दीशस मंज आजा  
कर धर्मुक थव सथर  
यूब ओध्योग दर वान रखा ॥

मुचराब

क्या कहे गूढ्यन्द अहा  
न्वरलीफ ह्यु पवम पत्र  
छुय भवसर मंज बाह बाह ॥



## सुय पानय

सुय पानय अस्य बहानय हतसा हे  
वन हा हाल छिन वुठ फोरन हाय  
ज्यव कलन छम कस यि सत वनुन व्यपे  
ज्ञान त हैरान बीद ति तति मंद छानय ॥

यस च छारान सुय चय देवानाय  
कथ दर बदर गोरव कति मेले  
जान कर पान च हा अन ज्ञानय ॥

सुय

छिय वंद सन्त पोरान ग्यवानय  
पान मो मशराव पनुन छु चय हे  
कर व्यचार नेरी अरमानय ॥

सुय



वन क्या हाल ननि सूत्य यि ज्ञानय  
 फख न अख रछ छय तस ति चय  
 चानि सत्य कुल सिरिय जून चम कान आये ॥ सुय

प्यव चयतस म्य तस न बीद अरव दानय  
 कन थोवुम सन्त शास्त्र चे कके  
 दोन म्य तोन अथ क्या कहन ठात्य ॥ सुय

चोव सम रस मनस मस्तानय  
 बनि शान्ति फेरि रगि रगे  
 मस बनि वाणी थव रिन्दानय ॥ सुय

गिन्द पानस सूत्य शिजा मदानय  
 पनव लोरे गिंद प्रनव हाके  
 केह रिंद गिंदन जिन्द मरानय ॥ सुय

सर्वस छु गूढ्यन्द वनानय  
 बीदय छु अमिके प्रसाद म्य  
 शख गम चल्य श्रुति के प्रमानय ॥ सुय



न्यरा धार

न्यरा धार न्यर अहार  
 न्यर वेकार न्यरकारो ॥



गुर दया कर मंजु व्यवहार  
 छुस बन्द ब गोमुत लोक चारो  
 म्योन कुस च्य सिवा छारि चार ॥ न्यविकार  
 दज वलिज सोन लोल नार  
 आर सोन यथिनय हा बे आरो  
 कोरथम जिगरस म्य पार पार ॥ न्यविकार  
 सत च्यथ आनन्द अपार  
 अखण्ड अगाध चोन ध्यान दारो  
 अक्रय आत्मा च सारिक सार ॥ न्यविकार  
 मंजु म्य सम सार मंजु बो समसार  
 जोश आम प्रेयमक हडक बुकबारा  
 सम भाव प्रोव यमि मन गव तस मार ॥  
 सुय बोय नन्यामयि सथ व्यचार  
 मनि गंड शख चलिम यख बारो  
 तर्य ज्ञान नावि क्यथ अस्य भवसर तारो ॥ न्यवि  
 सुहम चे वायान छिय अस्य तार  
 प्राण सेतारस अस्य उम कारो  
 रुम रुम बोलान वन क्याह दुबार ॥  
 सोरुय छुय यि भजन नगार  
 बीदुक अथ कन धारो वारो  
 म्य च्य न बीद कांह वदिच यि पार ॥ न्यविकार  
 पारम ब्रह्मय परम अपार  
 बारम्बार च्य नमस्कारो  
 सानि जुव परम शिव टाठि यार ॥ न्य



गुण्यन्द लोल कि हा बे मारय  
 सत गुर वेदस आव चोन आरो  
 चोव हख अद्वयत अमृत चे दार ॥ न्यविकार



## सत च्यथ

सत च्यथ आनन्द विज्ञान के रबो  
 पान चोन जोन सोन जुव सदा शिवो ॥  
 नाना प्रकार ध्य बजर अन्त रस्य ग्रंथ  
 छिय करान ग्यावाम अन्त रस्य संथ  
 अन्त कुञ्जि न आख पूर्ण च व्यभवो ॥ पान  
 माज्य अष्टा दश बोजी त पोरान  
 वीद ब्रह्मा द्य च्यनि गीत ग्यवान  
 ग्यवान शीश करिथ सास बज ज्यवो ॥  
 सरिय जीव देवता त कारनय  
 चोनुय ध्यान दार नायि दारनय  
 तारनय च तिमन मंज भवो ॥ पान  
 अति वीदन ति थर थर वदि ति रुद पथ  
 साद सतजन सरस्वती मज्य शर ह्यथ  
 कथ छा म्योञा अद प्रत्यख च्य ग्यवो ॥



परम आत्म हीव सोव चानय न्यथ बो पाद  
प्रमाध गलि स्यद छव सपद्यि समाद्य  
बोज फर्यादि आर सोन यियि छवो ॥ पान

अछय योर गयितोर म्य च्य बासन  
न्यर वासन रुद कथ बकार आसन  
अथि श्वासन मनि छूनयो प्रणवो ॥  
यी वीदव वोन ती संथव ति वोन  
छाड़ान कस तोह्य तस छिन तोह ब्योन  
ओन चोलुम ब्योन जानथ कवो ॥

ब्यन्यर न जाह कुन्यर दोहय ओस  
दुय मनि कसिथ चय बोय सपधोस  
बोस मनि ताम याम प्ययि ज्ञान प्रवो ॥ पान

गूढ्यन्दन जोन रव पननुय जुव  
भक्ति बत्सल शेव न स च्यथ कांह ह्युव  
निब मन धिमव तय्य भव यव तवों ॥



## तीनों जगत

तीनों जगत के कर्ता आधार है तो हम है  
निर्गुण हैं तो हम हैं साकार है तो हम है ॥



प्याला वह पीने वाला मय और मय खाना  
साकी है तो हम है खुमार है तो हम है ॥

तिब और तबीब मुसखा दारु शफा पंसारी  
गर दर्द है तो हम हैं बीमार है तो हम है ॥

खुदी कलाम और पीर अमीर गरीब रहत  
वजीर है तो हम हैं सरकार है तो हम है ॥

बागो बगीचा माली बूटा ज़मीन और मेवा  
बुल बुल है तो हम हैं गुलज़ार है तो हम है ॥

नसरो नज़ूय नज़ाकत सतरो सफा वमानो  
शाइर है तो हम है अंश आर है तो हम है ॥

मन्दिरो हरम व गिरज़ पूजा निमाज और मास  
शागिल है तो हम है अज़कार है तो हम है ॥

ब्रह्मन व शेख क्षत्री शुद्र वेशा मुसिलम  
तस्वी है तो हम है जुनार है तो हम है ॥

सुख दुख यह हालते दो मेरी ही है यह दोनों  
मुतफिकिर है तो हम है सरशार है तो हम है ॥

ज़र ज़र गरो कसीटी लौहा ओर लौहर है  
तलवार है तो हम है सरदार है तो हम है ॥

मेरा हो खेल सारा देख देख के मस्त बना हूं  
सोए हुए हैं तो हम है बेदार है तो हम है ॥



आशक व इशिको माशोक गूढ्यन्द तूने जाना  
दीदा है तो हम है दीदार है तो हम है ॥



## जिसने भ्रम

जिसने भ्रम की फासी तोड़ी — बस वही आजाद है  
सम अमृत जिसने पिया — बस वही दिल शाद हैं ॥

आप सहित सब है भवगत दुख मेरा निवृत हुआ  
जान ता जो इस तरह है बस वही सन्त साद है ॥

बेद से है खेद होता वेद सन्त कहते है यह  
भेद जाने जो प्यारे बस वही प्रमाद है ॥

शुद्ध मन शागिर्द को जो हम समय ताली दें  
है मेरा रह ज्ञान मात्र बस वही उस्ताद है ॥

सब में मंगल है तुम्हारा तू ही प्यारा सारा है  
यह नजारा देख पारा बस वही समाध है ॥

तीन गुणों से तीत तू है जीत मन पर तीत कर  
सङ्कल्प को छोड़ देखो यह बुरी प्रमाध है ॥

आल में जबरुत व नासूत और मल कूत हूत को  
हूतल हूत का तू शाहिद सुन मेरी फर्याद है ॥



यह सरदे दाइमी है यह गरुर दाइमी  
काइमी है काइमी सब को क्या अपराद है ॥

यह जो मस्ती हमको आई लुपते एकताई है यह  
यह हकीकत आज पाई सतगुरु का प्रसाद है ॥

कुछ न डर दुनिया से हमको हम तुम्हारे हो चुके  
यह जहान दुश मन है मेरा एक तेरी इमदाद है ॥

किस की खाहिश है तुझे अब यह बड़ा अफसोस है  
ऐ गोविन्दा तू ज़रा सोच क्या तेरी बुनियाद है ॥



## विज्ञान का जो

विज्ञान का जो रब है सत चित आनन्द  
पूर्ण वही तेरा रूप अनूप है निजा नन्द ।

अस्ति भाति प्रथ रूप की दृष्टि से सब ही तू है  
तुझ बिन नहीं कोई तुझ मैं है विश्वदानन्द ॥

आनन्द स्वरूप कर याद चित से मिटा दो प्रमाद  
क्या है तेरी यह बुनियाद आजाद तू नहीं बन्द ॥

अजर अमर अगूचर शुद्ध चैतन्य मात्र  
आश्चर्य निर्वकार आनन्द कन्द और निस्पन्द ॥

खुदी का पहाड़ फोड़ो भ्रम की जञ्जीर तोड़ो  
विषियों से मन को मोड़ो पावो परम आनन्द ॥



बहमो गुमान को छोड़ो सत धाम को ही दौड़ो  
भगवत से मन को जोड़ो वह है अखण्ड आनन्द ॥

स्वयं प्रकाश कैवल आधारी निर्मल  
निर्विकल्प और निश्चल अटल और परानन्द ॥

हम हो तुम और तुम हम भेद वासना अम है  
ईश्वर का कसम है कहता तुझे है गोविन्द ॥



## अन यति

अन यति वुज्यव तस मन सूरस  
नूरस म्युल गव नूरस सूत्य ॥

छि खबर कमिलन पन बर्ग ना हिलन  
मन सङ्कल्प ना तुलन च्यानि रायि रोस्त ॥

गर्भ मंज कम्प हा कते चय रछान यति तते  
रोछ थस च्यय हा तते दोद माजे दायि रोस्त ॥





## जलवय गोविन्द है

जलवय गोविन्द है सारे दिल की आखे खोल दे  
तब नज़र आयेगा तुमको हर जगह दिलदार है ॥  
कुछ नहीं इस भाग में बादे खज़ान का दखल है  
देख कर दिल फूलता है या सदा गुलज़ार है ॥



## सन्तो बसन्त

सन्तो बसन्त बहार सतसंग  
सार सत संग सबज़ार सतसंग ॥  
श्रवणय मननय न्यद्यासन  
कर नावि साक्षात कार सतसंग ॥  
रंग बुलबुल पोशिं नूल सन्त साद  
लारि डेशि यति गुलज़ार सतसंग ॥  
ज्ञान रव खसि हृदयुक पम्पोश  
फोलि कासि सोरुय अन्धकार सतसंग ॥  
सन्त राजन हन्दि खोतय राजय  
सन्तन हुन्द धन ध्यार सतसंग ॥



कल्प वृक्ष सन्त साद स्यद करियो  
काम नायन यख बार सतसंग ॥

सन्तन सूती कर समागम

फल अम्युक अपार सत संग ॥

वन तापन रेन्द ताव शहली

ससरि सय फेरि शेह जार सत संग ॥

अभय करि वन वय भय दूर

छयत करियो नरक नार सतसंग ॥

भवसर सदुरुक छुय जहाज्य

जीव नय दियि यति तार सतसंग ॥

तिर्थन हुन्द प्रयाग राज कुस गव

सुय गव कर नमस्कार सतसंग ॥

समिथ तीर्थ तति छिय सारी

आसि यथ जायि व्यचार सतसंग ॥

कर्मय सरस्वतो धर्म जमुना

भक्ती गंगा कर सत संग ॥

यम्य कोर यि तीर्थ तस छु प्रणाम

सोनुय बारम्बार सत संग ॥

हृदय करि न्यर्मल व्यथ शागत

वाह वाह क्या रसदार सतसंग ॥

श्रदायि भावनायि मायि प्रेमसान

तोत नस यति आसि लार सतसंग ॥

गूढ्यन्द सतसंग नय मस कोर

च्यत सम ज्ञान अमृत दार सतसंग ॥





## पूर्ण पूर्ण

पूर्ण पूर्ण ब्रह्म छुयो यि जगत पूर्ण मंज पूर्ण द्राव  
पूर्ण किस पूर्णस रटिथ हयो पूर्णय शीश अथि आव ॥

गुरु मुख वन्य दिमयो शूभिदार वन्य दिमयो  
हर लूक वन्य दिमयो हर दार वन्य दिमयो ॥

टाठिस भगवान सय सर्व शक्ति मान सय  
पननिस पान सुय पननियार वन्य दिमयो ।

नाभि मज छरिथय हृदयस खारिथय  
त्रकूटी दरिथय ऊं कार वन्य दिमयो ॥

गुरु मुख वन्य दिमयो शूभिदार वन्य दिमयो ।



## थलि थलि

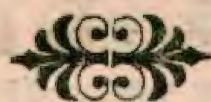
थलि थलि वुछतन सदा शिव शिव हय च्योनुय जुव  
शिव हय चोनुय जुव जुवो सुय धारनाये दार ॥  
सुय धारनारे दार जुवो करबा सत व्यचार  
करबा सत व्यचार जुवो च्यन मस न्यरव्यकार ॥

च्यन मय न्यविकार जुवो सच्चिदानन्द अपार  
सच्चिदानन्द अपार जुवो आनन्दुक भन्डार ॥



आनन्दुक भण्डार जुवो नाम रूपुक आधार  
नाम रूपक आधार जुवो सूहम य छुय सार ॥

सूहमय छुय सार जुवो तस्य मन्ज कर करार  
तस्य मन्ज कर करार जुवो गूव्यन्दो ह्यस यू ॥  
थलि थलि वुछतन सदा शिव शिवहय चोनुय जुब ॥



## अमर पानय

अमर पानय याद पाव सूरतन सुय भगवान  
सूरतन सुय भगवान जुवो मर मर हो चली ॥

मर मर हो चली जुवो वासना हो गली  
वासना हो गली जुवो भव रुगय बली ॥

भव रुगय बली जुवो ससता हो वली  
समता हो वली जुवो हृदयस मल छली ॥

हृदयस मल छली जुवो हृथ कमल फोली  
हृथ कमल फोली जुवो न्यचय यिन डली ॥

न्यश्चय यिन डली जुवो गूव्यन्द प्राव ज्ञान  
अमर पानय याद पाव सूरतन सुय भगवान ॥





## स्वप्न माया

स्वप्न माया संसार सोरुय संसार छुय भ्रम बाज्य  
समसार छुय भ्रम बाज्य जुवो ह्यस सानय यति रोज ॥  
ह्यस सानय यति रोज जुवो सन्तय वऽनी बोज  
सन्तय वऽनी बोज जुवो संसार कस द्राव सौर ॥

संसार कस द्राव सार जुवो करबा सथ व्यचार  
करबा सथ व्यचार जुवो दयो कीवल सार ॥

दयो कीवल सार जुवो सुय गछि यति स्वरुनुय  
सुय गछि यति सुरुनुय जुवो अखर छुय मरनुय ॥

आखर छुय मरनुय जुवो गूढ्यन्द गव आजाद ॥



## शिव शिव

शिव शिव करान शिवय सपद्योस ।

शिवय ओस तय शिवय रुद ॥

सुय म्योन जुव तय बो तसुन्द जुवय ।

ननि तस बनि यस आत्म बूद ॥





## पानय बुद्धमो

पानय बुद्धमो सुय पान्य पानय  
सुयय पानय बोनो कॅह ॥

पारी लगयो पनयि शिवो

च्य रोस मानय बों नो कॅह

पूजायि दह वय यन्दरे लागय

पूजा जानय ब नो कॅह

यिछ च्य शूभी करनी तिछमा

तोता जानय बनों कॅह

गुव्यन्द छुय हो सु चोन जुवय

परम शिवय वोनुख यस

स्वप्न मंज ति यिन बीद बुद्ध वोपदीय

बीद नो जन्वीज पान स त तस ॥



## डण्ड वथ

डण्ड वथ नमस्कार सन्तन

प्रणाम बारम्बार सन्तन ॥

च्यथ सरल कूमल छि वुपकऽरी

छु अनाथन हुन्द आर सन्तन ॥



तीर त्रविथ वऽजी पोत फिरनस  
ब्यायि छु सोरुय यख ति यार सन्तन ॥

रग रग रग रग बोलनय  
रुम रुम उँ कार सन्तन ॥

यथ नाव सच खण्ड सत लूकय  
तति छु सादन दरबार सन्तन ॥

यिम तसंजय तोता छि करनय  
आसि युस सीवा कार सन्तन ॥

ब्यशनो शिव ब्रह्मा आदि दोव  
करान जय जय कर सन्तन ॥

यलि यलि धर्मचि गयि गलऽनी  
त्यील प्यव ह्योन अवतार सन्तन ॥

हर मुख हर बुछि छिय हर शन  
हर सुन्दुय छु हर द्वार सन्तन ॥

सुख मय अभय आश्चर दोश  
बऽसनय वयुथ छु शेहजार सन्तन ॥

बाहवञ्ज यर्तन छु तते  
सोन्त कालय त बहार सन्तन ॥

भगवान भक्तयन पत छु फेरान  
गूव्यन्द चति पत लार सन्तय ॥





## सुय म्य

सुय म्य टोठ्योम नमना द्रामो  
राधा स्वामी राधा स्वामी ॥

अस्ति बांते प्रेयि रूप सोरुय

धार नाये सन्तव दोरुय

व्यचोरुय सुय वनि आमो ॥

राधा

शक्ति पात तम्य कोरनम ओरय

पन नुय अनग्रह म्य तोरय

जोर जोरय बोज सत नामो ॥ राधा

जन्मत हन्दि दोख तय दऽद्यी

कस हय साऽरय च्य ब्यदय

आप दायय चज तमामों ॥

राधा

पार्य लगयो सन्तन सादन

कन म्य थव्याम सत वयन नादन

सन्त पादन कर प्रणामो ॥ राधा

खुल कर्य हय सऽरी तऽरी

तस बुछान छिय चोपऽरी

पार्य पऽरी लग तस शामो ॥

राधा

लोल बोर नम पन नुय पूरय

हृदयिच गट करनम दूरय

नूर नूरय छुय सत दामो ॥ राधा



सन्तव सन्तायि अनृत च्यव  
हृदयस वुदय ज्ञान रब गव  
यव गूव्यन्द सुय सुव शामो ॥

राधा



## लयि दारि

लयि दारि त्रोपरिथ कन गछी थावुन  
भाव वन सतगुरुत हाव वोनुय ॥

दम ह्यथ दम उम पान पर नावन  
हृदय कमल फोल रावोनुय  
नाभि थान तुलिथ हृदयस छावुन ॥

भ

क्रयायि ज़ोरय मन गछि पावुन  
मस बनि शशि कलि चाववोनुय  
प्रात पीज शैने शैने त्रावून ॥

भ

संकल्पन हुग्द वाव रुकावुन  
शिनि छटि अद नो राव वोनुय  
त्रट बुजिथ मनस वट गछि दावुन ॥

भ

प्रनव शब्दस कन टाठि थावुन  
दम भ्रमिध्य वात नावोनुय  
सहस्र दलस मंज ठहरावुन ॥

भ



अनि गटि गाशि चोंग जाल वावुन  
 मान सरूर पान नावोनुय  
 गोत गोत मरिथ पान शेहलावुन ॥ भ  
 रुम रुम पानय उम भजावुन  
 शम दम मन शोम रावोनुय  
 जीथ बनि गोर गोत न्यथ टाठि गावुन ॥  
 गोफि वतिथ पान शिव मिल नावुन  
 सोख प्रावुन पजि भावो नुय  
 कुन च्यत तस बनि गोस गम त्रावुन ॥ भ  
 अन्द्री लोलक तोन्द्रय तावुन  
 गूव्यन्द पान याद पाव वोनुय  
 रिन्दो जिन्दय परम पद प्रावुन ॥



## समसार

समसार सोदरस ज्ञान पुल  
 दि तर कर पानो सुल ॥  
 वैराग कानुल लद अथ  
 सथ ठयठ भूमि कायि सथ  
 सम दृष्टी तखत कुनि रोजि न वुल ॥ दि  
 सन्कल्पन करुन डास  
 ओमुय करुन अभ्यास  
 अभ्यासुक दबाव क्युल ॥



त्रशिनायि जल छुय बर्यथय  
 सतसंग नावि वयथ तर्यथय  
 ह्यकखय चठ वास नायि हिल ॥  
 सू के खोरि हम के हम  
 लोल नम वायि नाव दम  
 ब्रोंठ वात जल जल हम तुल ॥ दि  
 सथगुर चरननय तल  
 श्रात्रन्य शनिकि पऽठय गल  
 अभिमान गाल बन मो कुल ॥ दि  
 स्वप्न दृष्टा वथ पान ज्ञान  
 हान कास त्राव दिह अभिमान  
 पान सान ज्ञान दयी कुल ॥ दि  
 चय अकि सुय छि अनन्त रूप  
 चम कावान छि सत वय दीप  
 दूर कर द्वयतचि बुल ॥  
 दिह अध्यास वास नायि ज्जुन  
 सोम्बरिथ व्यचार नार छुन  
 दजि अज्ञानुक जंगुल ॥ दितर  
 ह्यस थव शाह नय सूत्य  
 रात्र छन खत्य वीथ्य कऽत्य  
 अमि करन मन बनि शुहुल ॥ दितर  
 गूव्यन्द सदा सन्तोष्ट  
 तिमय छद्य यिम समदृष्ट  
 आसि ब्रह्म न या वातुल ॥ दि

○



## पजि पजि

पजि पजि चे रजि लमुनुय वजि सूहम सेतार  
 तस्य चमियो यस नो यि चम ज्योन मरुन भ्रम छु संसार ॥  
 गछत शरण प्यत परन रटथ चरण सत गुरस  
 द्वन्दा द्वन्द त्रोवुथ च्य चोवनख आनन्द मस  
 कोर नखो हा पानो मचि न्यंदरे हुशियार ॥ तस्य  
 दम दमय दम छि करान सूहम सूहम सू  
 पान कर सर मंज भवसर खरु उम शिव शम्बू  
 हम त्रविथ छोर सू स्वर अद लगी भवसर तार ॥ तस्य  
 दय यस पचि अन्दर स अचि नचि ह्योरि बोन सरिसूय  
 हनि हनि वजि तस यियि दय मनि दूर गछि यस दुय  
 दुय त्रविथ सुय पानय तति न व्यपान गाट जार ॥  
 वुछत अडयन चय दर नार फोत्य कम गुल त गुलजार  
 तस दयस हो छि यिमय कार क्या जबर सोन सरकार  
 छुतुनय तार आवुयकरार लार कुन रिंदो लार ॥ तस्य  
 रछवुने लछिनावे प्रेम अछ पोश छावे  
 लोल बागस व्यचार ही तमि ही तन सू नावे  
 ओर योरय छुख च पानय पान्य पानस अथदार ॥  
 रोज बोज कन दरिथय सोज गूब्यन्दस आव  
 साज सानय सुय अन्दर चाव कुजिरस क्याह करि नाव  
 अन्दर न्यबरय वुछुन पान दय कुस छु आज्ञाद गिरफतार ॥





## तोशतो

तोशतो पोश नूल पोशन आव बहार  
लोल किस सब्जस लोग म्य सब्जार ॥

गोड़ न्यथ गछत च्य निशि सतगुरु

खोदी हुन्द त्राव तति नस सर

सर कर पान मार नफबि अमार ॥

तोशतो

अन्दर म्य च्य म्य च्य न्यवर

म्य च्यय छाडान गयि म्य खबर

दुय पानस गालज छु पुरख कार ॥

नय रुद पनजान सूत्य मोहबत

नय रुद गसरन सूत्य नफरत

सोरुय छु ब्रह्म रूप ई वुछ म्य नाजार ॥

तोशतो

गदाहन शाह तय शाह न गदा

करान च्य छुख बीज तम सदा

सोरुय पानस छुय यखतियार ॥ तो

नय छुस शही मंज बोय खऽश

नय छुस गदायी मंज ब ना खऽश

यी मेलि ती हो छु म्योनय गुजार ॥

नय रोजि माल तय नय दौबलत

रिदो दमय ज्ञान गनीमत

दम नय ज्ञान थव दमय छु संसार ॥



पान छोल करान शेव शेव अस्मे  
 च्य बोय बोय ह्य टोठयोख स्य  
 गूढ्यन्दन वूछय चोपर्य पननु यार ॥ तोशतो



## सत च्यथ

सत च्यथ आनन्द गूढ्यन्दय  
 वन्दय चरणन जुव त जान ॥

अदीन सस्य छि दीन वन्दय  
 अनजान पर्यमत्य न वीद पुरान  
 कर दया ही दया स्यन्दय ॥ वन्दय

ध्यान कुय आत्म दूध मन्दय  
 थञा प्रत्य ज्ञाजान विद्यानय  
 वेरि चानि जसुदा नन्दय ॥ वन्दय

व्यण्ण ज्यण्ण कूण राम चन्दय  
 अविवीक रावतस च मारान  
 सीव चाञा चर नार व्यन्दय ॥ वन्दय

अच्यत च्यत आनन्दय  
 पूर्ण चैतन छुख ननान  
 सुख दुख पर परानन्दय ॥ वन्दय



म्य च्य सूत्य छुम समबन्दय  
म्य च छारान म्य चय मो चान  
ब गोल चय सुगन्धय ॥

वन्दय

पान ज्ञोन कर्य प्रान सन्दय  
दम दम सूहम सू सोरान  
अजपा गायत्री छयन्दय ॥

वन्दय

स्वप्रकाश आनन्द कन्दाय  
नेस्त्रय गोनी शिवय पान  
ज्ञान त्राव दिहि अध्यास गन्दय ॥

वन्दय

निष्कण्य न्यर्मल न्यर्द्वन्दय  
सदा अप्रोक्ष अध्यष्ठान  
मोन साक्षी व्यशुदानन्दय ॥

वन्दय

सुय छुय दुय गालू वन्दय  
हम्स नाद गोफायि मंज यिवाव  
अनहद नाद नाद व्यन्दय ॥

वन्द

मुह कठ कोश वासनायि वन्दय  
तस यस गोल दिहि अभिमान  
ज्यन मरुनुक त्रोव तमि जन्दय ॥

वन्द

प्रविथ तर छोनिरुक चन्दय  
कशिव हम सू नाव तरान  
च्य व्यन कॅह ना बय वन्दय ॥

वन्द



सन्तोष वैराग रन्दय

दि दिहि लंकर शूभान

रिंद जान छुख न्यस्पन्दय ॥

वन्द

वीद पुरान छिय शर मन्दय

गूढ्यन्दय चान्य गीत गेवान

तोत छुख द्वन्दा द्वन्दय ॥

वन्दय



## मनि कासु

मनि कासु चख तय दुय लोलो

दुय त्रविथ पानय सुय लोलो ॥

प्रन वय कामदोनि चोर वीद थन

महा वाक्य दोध सत्गुर चावन

चोव सुय चय ह्योव थन नय लोलो ॥

दुय

न्यत मुक्त अक्रय सोयंम प्रकाश

परि पूर्ण ईकरस ह्यु आकाश

अच्यत सत चिदा नन्दय लोलो ॥

दुय

साक्षो च्यथ गण सु अखण्ड आनन्द

न्यविकार चेतन सु व्यशुदानन्द

न्यर्मलय न्यर द्वन्दय लोलो ॥

दुय



पानस सान ज्ञान सोरुय भगवान

अस्ति बांति प्रय रुपय सुय नारान

सोरुय छुय सुय कुनुय लोलो ॥ दुय

पान प्रज्ञनाव रूप नाव वरजिथ द्राव

सोरुय दय दिहि अध्यासय त्राव

तस ध्यनय केह न बुछन लोलो ॥ दुय

थामि मन बुद्ध गय यति पथ छु चोन यार

शिन्या शूबन तति खद मत गार

नाव न्यरमल स मज्जय लोलो ॥

मन वानी अगूचर पद युस रुद

पान जनिथ रिंदय सु जिन्दय मूद

यति हरथ न कुन जय लोलो ॥

वजिर्थ सूहम छोन सू सत रुद

बूद बन्योय दम दम स्वर सुय सूद

ताकुलय सुर न जुफतय लोलो ॥ दुय

बूद नाबूद गव मौजूद कुस कसय

ज्योन मरुन अम किञ्ज अयि जन्मसय

वासनायि किञ्ज लगन जन्मय लोलो ॥

लूब छुय छ्यूब त्राव तस क्याह करि काव

वासनायि जाल चठ मुह मादय गाल

दीश काल रोस छुखना चय लोलो ॥

हृदयस यस सन्योमुत ओमय

तस मस वस करान सूहमय

खस गगनस बोज प्रनव हुय लोलो ॥



मस गय आनन्द अमृत च्यवानय  
बीद थामि गय चाञ्ज गीत ग्यवानय  
छुय सोरुय यि गूढ्यन्दय लोलो ॥ दुय



## सत च्यत आनन्द

सत च्यत आनन्द सत सदा शेवय  
जय जय जय जय जय जय बोविनय ॥

रस रस मन न्यू अम्य असवञ्ज

न्यर्द्धन्द न्यर्मल न्यथ लस वञ्ज

मंगल कल्याण ज्ञान सुन्दरय ॥

जय

त्रिगुना तीत न्यविकार शम्बू

च्यथ सांक्षी चीतन सोयम्बू

सबो का प्रभू यही देव है ॥

जय

सदा शेवय गव गंगादार

अखण्ड आनन्द अनूप अपार

ज्ञान गङ्गा जटि वसान छय ॥

जय

न्यशकल न्यर्मल कल गयि चाञ्ज

ज्यन मरनच म्य मुकलावथ ठाञ्ज

प्राव साञ्ज कऽसथ छुख मृत्यंजय

जय



दीश काल अतोत सु पीर पूर्ण  
न्यति मक्त अद्वयत चाञ्ज कुनिरञ्ज  
मस करिथ रस रस बन्धाव जय ॥

जय

गनीश धनीश शीश तय कीश  
च्य ब्रह्मा देवा दीवी महीश  
नाव रूप कुय आधार च बोड़दय ॥

जय

अमरीश्वर च अजर अमर  
चाव अद्वयत अमृत असि वर  
कर दया अथि छुय वर त अभय ॥

जय

अन्ता करण कैलाश निवासी  
ब्रह्म आकार वृति दासय  
वुप दविथ पालिथ गलिथ च न्यशक्रय ॥ जय

भक्ति वत्सल शक्ति पात नजर  
कर वर दिगम्बर च शंकर  
कर कटाक्षा बनि पापन क्षय ॥

जय

छरिथ हर हर मुख बनि आव  
अन्दर न्यबर पानय सोरुय द्राव  
च्य पान अस्य बहान च्य व्यन न मुय ॥

अनन्त जाग्रतन त स्वपनन  
स्वशफती यन च प्रकाश करन  
आनन्द गण च्यथ गण दीवय ॥

जय



पान सान शेषय ज्ञान सोरुय  
सीव तिहिन्द ज्ञान विज्ञान रवोरुय  
सुय त्राव दुय छुय गूव्यन्दय ॥ जय  
जय जय जय जय जय जय बोव्यनय ॥



## ओम परि पूर्ण

ओम परि पूर्ण नारायण च्यतगन  
तन मन अर्पन गछ च्य पथ बो ॥

सास मुख गीत ग्यावान शीशे नागय  
रागय यस चोन तस बडय बागय  
सरस्वती माज्य वीद शर मन्द छिय ग्यवन ॥ तन

न्यरविकार आधार च्य छुख सारिकुय  
न्यविकल्प गथ कर च्यय पथ बो  
न्यर्मल कीवल सत च्यथ आनन्द गण ॥

अन्तरयांमी छुख च सर्व व्यापक  
छयनय मनि गंड सारय शक  
मीलिथ गीलथ वातिथ च पन पन ॥ तन

लागय पूजायि च्यथ बुद्ध त प्राणय  
ज्ञोनमख च्य सोर पान सानय  
क्याह छडिथ अन वन २ पोशि व्यन ॥



ध्रुम फास्य छयनिम होशस यन प्योस

सम अमृत दम दम म्य च्योस

यी ओस ती बोस मुकल्योस बो तन ॥ तन

विज्ञान रव कास्तम अगिन्यान गट

फटन निशि मोकल्योस सोरि लट लट

गट गट वतिथ चय मन मूहन ॥ तन

न्यर भय आत्मा च स्वयं प्रकाश

आश च्यानि पापन बन्योव नाश

च्यटा काश चोनुय ध्यान कर क्षण क्षण ॥ तन

चुय जोनमख दिह ध्याता त ध्यानय

हसरतस अति बडय २ व्यधवानय

क्या कर जिन्द मर गोम लोलुक सन ॥ तन

अरप सऽरी चऽनी सोरूप

अनन्त अचल अखण्ड अनूप

चय न्यरगुन तार वुन छुख सो गण ॥ तन

शाम वर्ण चानि स्वरन लोग मंजजगि तार

बारम्बार चयय जय जय जयकार

यम भय वस वास चोल चानि स्मरण ।

शख चकर गदा पदम दारिथ

कोर यिमव ध्यान चोन तिम च्य तरिथ

नल्य वन माला हटि कोस्तव मन ॥ तन

न्यति शुद्ध युग न्यदंरायि मंज च मसय

गोमुत प्यठ शीश नागसय

लक्ष्मी चरण कमलन छय सीवन ॥ तन



कोर उम नमो नारायणाये

सुरि युस दम दम दमि नाये

तारि सुय वैकुण्ठ भूगिथ मूगन ॥

तन

प्रेम अमृत चाव बुद्ध साय्य शुद्ध कर

वासना द्रव्यत बुद्ध हृद रद कर

ज्ञान युथ न च्यय पानस फरक अख कन ॥

ब्रह्मा रूप जगतस वुपदावान

व्यष्ण रप पालन रुदर गालान

न्यति मुक्त चोनुय ध्यान हृदयस रवन ॥

तन

न्यथ लस वनि हृदयस मंज बसवञ्ज

हा अस वनि गरडस रवस वनि

शुद्ध मन गोम चाने चरनूदक च्यन ॥

तन

च्योन नो ह्योक कांसि करिथ व्यसतार

दीश काल रस्ति द्राख चय पथ सार

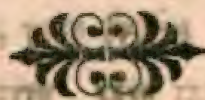
चय बोय बोय चयमुखन किथ वन ॥

तन

गूव्यन्द पानस तस म ज्ञान बीदय

ग्यवान यस पुरान त बीदय

मुकल्योरव चय वुञ्ज निश ज्यन मरन ॥ तन





## सञ तय वोगञ

सञ तय वोगञ वञ दित यस तय वन्धि दित ताय ।  
च्यतस प्योमय म्योनुय नाव तस ताय म्योनुय नाव तस ताय ॥

पूज कर व्यग्यान रव शेवस तय रव शेवस तय  
श्राविन शीनक पाठय गजिनस तय २  
पान सान जोनुम तानि खस खस ताय २ ॥  
च्य ॥ ... -- -- --

लोल नार ज्ञाजनम वालिज बस ताय २  
लाजनस लोल किस तम्य तोन्दरस ताय २  
अन्दरो रछ २ तम्य ज्ञाजनस ताय तम्य २  
च्य ॥ ... -- -- --

माजस कोर नम तम्य बस बस ताय तम्य २  
वार नय रुदम कांसि वन नस ताय कसि  
चऽवनस लोल मस तस्य पथ मतस ताय २  
च्य । ... -- -- --

बोय सुय सुय बोय वयजि व्यसरस ताय २  
ई सन्त वनान श्रोती छस तय श्रोती छस ताय २  
चावान सुय छुम सम शान्ती रस ताय सम...  
च्य ॥ ... -- -- --



बनिथ हाल पनुन ह्यक बुझ कस ताय ह्यक ....  
 लोल तिहिन्द नून प्यवान जून जखमन ताय जून  
 हीशर न वननस त बन नस ताय त बन नस तय  
 च्य ॥ ... ..

यूग गन्यान शर्मन्द वीर हरतस ताय वीर हरतस तय  
 जाय साजा सुय मंज यियि न वननस ताय २ ...  
 शिन्याह ति गछान छुय शिन्यहस ताय छुय २ ...  
 च्य ॥ ... ..

डाल कोन दिम जालस लाज नसु ताय २ ...  
 मर मर यम थर गोल वसवस ताय २ ...  
 ब्यन्यर न कुनि द्राव मंज वहदतस ताय २ ...  
 च्य ॥ .... ..

पर तोर दजान छिय च्यतस ताय २ ...  
 दरि कुस जिन्द मोर तथ गतस ताय २ ...  
 सुय सोन पानय प्यव च्यतस ताय २ ...  
 च्य ॥ ... ..

न जायोव बन्योव यस पानस ताय २ ...  
 नत वन्त क्याह स बेखबरस ताय २ ...  
 शोंगमुत क्याह जानि हुशियारस ताय २ ...  
 च्य ॥ ... ..

सुय च्य दुय त्राव माजम माजस ताय २ ...  
 पान पाव च्यतस लाग म वेहस ताय २ ...  
 ब्रह्मा रन्दरस तस्य ह्यस च्यतस ताय २ ...  
 च्य ॥ ... ..



वुछ फरख केह न च्य गूढ्यदस ताय २ ...  
 सुय २ सोरुय वुछ करु हस ताय वुछ कर २ ...  
 पोन्न वनुन मुखन निशि छुय ठस ताय निशि छुय ठस ताय  
 च्य ॥ ...



## आनन्द गनय

आनन्द गनय परि पूर्णय  
 नारायणय कर कृपा ॥

अनन्त लखन्द ही च्यथ गनय  
 गफलत से हम अब जागा  
 च्योनुर ध्यानय हृदयस ब खनय ॥

मुहने जालय यिम युथ न ह्यनय  
 रछि वञ्ज लछि नावि कर कृपा  
 मन हथ गोहम हा मोहनय ॥ नारा

च्यथ बुद्ध मन तन कर अरपनय  
 क्याह ह्यक वनिथ च्योन महिमा  
 वीदन ति थर वछ छिय मन्द छनय ॥ नारा



गाल मुह अज्ञान म्य न्यरंजनय

कामकूद तमाह कड़ तमना

गलि यि सूत्य प्रेस अमृत च्यनय ॥

सूहम हमसू स्वर राथ च्यनय

न्यर्मल न्यरद्वन्द च आत्मा

पापन सूर गोम च्यानि स्मरनय ॥

नारा

वासनाथि म्यानि जाल तम पन पतय

ज्ञान नार सूत्यन कर क्षमा

दयो त्रविथ च्य बोध बनय ॥

चीतन वासदीव साक्षी मनय

शोश नाग करन च्य नमो नमा

सास मुख गीत च्योन ग्यवान क्षन क्षनय ॥

नारा

मोकल्यो निशि अस्य ज्यन मरऽनय

आहा अजब छु तमाशा

सुय सोर पानय ब न अख कनय ॥

नारा

पोरान शास्त्र परिमत्य म्यनय

अन ज्ञान पठय यि छय म्यनि तोता

बन केह चय छुह हनि हनय ॥

नारा

संगल बन्याव कोर ध्यान यनय

अथि शंख चखर पदम गदा

च्यय मोर मुकट गरड़ वाहनय ॥

नारा

शाम वर्ण हटि छुय कोस्व मनय

नाल्य बन माला बोज सदा

शशि नागस प्यठ च पदम आसनय ॥

नारा



दीश काल रस्ति न्यत मुक्त न्यरगनय

आख वोल्सनय भक्तन्यन मुदा

कडिथ तरिथ च्य सुगनय ॥ नार

यछि हन्दि बाग पछि हन्दि वनय

अन्य भाव पोशिय कर पूजा

तरि तिम यिम मनि स्वर गोड़ दिनय ॥

नारा

कुनिरस चनिस नाव क्या वनय

गूव्यन्द छुख च व्यशतू मुखा

चय वुपदावन पालन गालनय ॥

नारा



## जल वोन

जल वोन लल वुन छुम लोल नार हय छुम लोल  
लछि नाव्य वछ जोलुम यार बे आर हय यार बेआर ॥

मन ह्यत मूहन गोमय यार हय गोमय यार हय  
मेलिना शौक तिहिन्दय छुस बेमार हय छुस बेमार हय  
गल मा अशिस लजमय दार हय लजमय दार हय ॥  
॥ लछि ॥



गीता लागान कीना वार हय कीना वार हय  
कचाह तेजिह लोल तलवार हय लोल तलवार हय  
खंजि २ वालिज सीनस पार हय सीनस पार हय ॥

॥ लछि ॥

अनन्त रूप सुय न्यरा कार हय न्यरा कार हय  
सुय गनीश बह्य गंगादार हय गंगा दार हय  
व्यष्ण रूप युग २ दारिन औवतार हय दारिन औवतार हय ॥

॥ लछि ॥

वस वस वावि खसि दशमूदार हय दशमू दार हय  
गोफि मंज नाल मति रोटुन यार हय रोटुन यार हय  
अंग अंग रंग छोट फ्यूर शेहजार हय फ्यूर शेहजार हय ॥

॥ लछि ॥

प्रनव मंज रंग २ चंग सेतार है चंग सेतार हय  
वजान बोलात जन जानावार हय जानावार हय  
गोर सय जय जय बारम्बार हय बारम्बार हय ॥

॥ लछि ॥

रंग कुठि पलंग प्रंग शुबिदार हय प्रंग शुबिदार हय  
वथरिथ भखत्यव तति कोर करार हय तति कोर करार हय  
बंद बर कर बोजा स्वर उम कार हय स्वर उम कार हय ॥

॥ लछि ॥

होर फेर मुकृत्योस आमय वार हय आमय वार हय  
सोदरस मंज चान्द डब चमकदार हय डब चमकदार हय  
जूल तति अवेजान रंगा रंगार हय रंगा रंगार हय ॥

॥ लछि ॥



वासनायि सूर यस सपुन सू पार हय सपुन सू पार हय  
त्रशि नायि मोम तायि कर्याय खार हय कर्याय खार हय  
दुख मुल मद मुह अंहकार हय मुह अंहकार हय ॥  
॥ लछि ॥

सत च्यत आनन्द सु आधार हय सु आधार हय  
चेतन मातर न्यर विकार हय न्यर विकार हय  
दोश काल रोस्त तस नमस्कार हय तस नमस्कार हय ॥  
॥ लछि ॥

मर मर वस वास रुदुम न हार हय रुदुम न हार हय  
चोवनस अद्वयत अमृत दार हय अमृत दार हय  
प्रेनुक अजब क्याह सबजार हय क्याह सबजार हय ॥  
॥ लछि ॥

शिन्या शूबन तति खदमत गार हय खदमत गार हय  
यूग गन्यान हैरान तति न गुफतार हय तति न गुफतार हय  
वननस त न वननस रुदम न वार हय रुदुम न वार हय ॥  
॥ लछि ॥

मोंगमस न म्य सुय बकार हय सुय बकार हय  
छोह मारिम न तस पथ यि लोक चार हय पथ यी लोक चार हय  
तार दिन वोल् सुय कोर निस्सार हय कोर निस्सार हय ॥  
॥ लछि ॥

दुई थव मंजयम्य सुय गिरिफतार हय सुय गिरिफतार हय  
पान जोन यम्य प्यन तस सु बेजार हय तस सु बेजार हय  
कुन ओर योर जोन चोल आजार हय चोल आजार हय ॥  
॥ लछि ॥



मृत्यु गव जाञ्ज सृत्य लोग मय तार हय लोग मय तार हय  
 वुछ गूव्यन्दय सार हय गूव्यन्दय सार हय  
 व्यचार तल वुछन कुनि संसार हय कुनि संसार हय ॥  
 ॥ लछि ॥



## भ्रम मिटा

भ्रम मिटा ही जटा धऽरी  
 शेव नाथ लगयो पडिर पऽरी ॥

लछि नावि लोल च्यानि द्वोद म्य वछ  
 रछ वञ्ज रछ यियनय मन्दछ  
 यछ म लाग थक्य प्रार्थ प्रारी ॥

कर दया युथ न व्यशियन छिक

मुहकि जगत निशि कर न टक २

हऽक आयिबुक अशि टाऽरी ॥ शिव

पम्पोश खोत कूमल च्य पाद

स्योद साद सीवन दिवन समाध

प्रमाद दज लोल नाऽरी ॥

शिवनाथ

हटि वासुक च्य जटि गङ्गा

च्यवन भंगा च असंझा

मङ्गा ही त्रिशूल दाऽरी ॥

शिव



चय शेव चय छुख शक्ती

भक्ति चानी छय मुक्ती

सद्धती चलराव पाप भाऽरी ॥

शिव

ज्ञान चरन सीवानय

ज्ञानीय छि सदा च्यानी

दिह अभि माऽनी न संसारी ॥

शिव

वे न्यथर च दरिथ

चरिथ भव सर खरिथ

तरिथ अस्य अन वऽनी ॥

शिव

अमरीश्वर अमृत चाव

अमर बनाव मोकली आव जाव

हाव मोख दोख कास साऽरी ॥

शिव

च्यदा काश च्य कांह न हव

स्व प्रकाश च्य वन्द जुव

गाश शानि आश चानि तारी ॥

शिव

अजर अमर आश्चर च हर

विज्ञान भास्कर दिगमबर

शर नेरि वर कर च याऽरी ॥

शिव

न्यस्पन्द सत च्यत आनन्द कन्द

विशोधा नन्द ही दीन बन्द

जुव वन्द बन्द बन्द कपऽरी ॥

शिव

मंगल कैवल न्यशकल

न्यरमल अचल चाञ्ज गयि कल

थल थल शिव चौपरी ॥

शिव



हे कृपालो हे शम्भू  
चय प्रभू कास क बू  
मूहम सू तव व्यचाऽरी ॥

शिव

गूढ्यन्द तस म ज्ञान केंद व्यन  
कर तन मन च्यथ अरपन  
शोंगन करन हुशयाऽरी ॥  
शिव नाथ लगयो पडिर पऽरी ॥



## लोलुन ज्यत प्योम

लोलुन ज्यत प्योम  
नत ब्योहो गोम ॥

हथ कमलय म्य वार पाठय फोल  
नन्यर गव ब्यन्यर अन्यर चोल  
सभाज व्यथानस कुन्यर गोम ॥

ह्येरि बुन वज्ज दिथ यस तस नाव  
म्योनुय प्यव च्यतस अरमान द्राव  
सुय बुय त बुय कुस यिय वन्यतोम ॥ लोलुन

मासम पान प्यठय आसम प्रय  
हर शय दय जोन त्रोव यम भय  
सोख प्रोव आनन्द अमृथ च्योम ॥

लोलुन



म्यति पत २ हाथ च्यत सुय बोय

अत गत मुकल्योम त्रावम दय

बाकय कांह नस रुजम काम ॥

लोलुन

त्रयि ताप सन्ताप कुय आम ताव

द्राव गच्छि रात्र संज गाशिग्र म्य आव

शान्ती शंबनम प्योम शेह ल्योम ॥

लोलुन

शहर गाम फीर्य चानि भावुकुय दोद

शुद्ध गव हृदय न्यरमल बुद्ध

यच्छि पच्छि प्यालन चोम ओम जोम ॥ लोलुन

कल्य वीद अति तल्य गयि कारण

शीन ही कुमल्येयि ध्यान धारन

मन म्योन भति हंदि खोत कुमलयोम ॥

लोलुन

द्वयत अद्वयत च शंखाये

गूव्यन्द चजियो ति हिन्द माये

ज्योन मरुन अम ओस सुय मोल्योम ॥ लोलुन



वन्दयो दुन पादन

वन्दयो दुन पादन यद्व

ही शुद्ध शेव शंकरो ॥



यष्टि पष्टि हन्दि कन्द नाबद

भाव सूत्य मनि थाल भरयो

सच्चदनन्द च्यथ डालि लद ॥

ही

वर्यमय खास्य प्रेयस दोद

बलो च्यत अमरो

तमना म्य न्यरम अद ॥

ही

लोल छुम चोन नीरथ हद

कृपा अमरो श्वरो

वर कर लोल चानि गय जद ॥

ही

तंग आस काम क्रूध मद

यिम शथर हा जर जरो

गालुख अद क्याजि वद ॥

ही

रछतम चय निशि नेक बद

लूख गेलन छि क्या करो

गरि खोत गरि अमि सूत्य थद ॥

ही

भक्ति वत्सल कैवल च्यद

रूपय ही आश्चरो

दीता नाथ रछ अनहद ॥

ही

जोम कार मात्रायि पद पद

स्वर ज्यन मरन अरसरो

चलन दिह व सी मद ॥

ही

क्या गोय च पूर्ण न्यश बुद्ध

बुछ करत पानय सरो

रोस्त छुख आदि अन्त त मध्य ॥

ही



गूढ्यन्द छुख कोताह स्यद  
गुणा तीथ च्योन गरौ  
थफ त्ताव दिहि डोड़ गज कद ॥

हो



## छांज्याव म्य युस

छांज्याव म्य युस ओस यमुन्दय म्य तमाह  
च्यतस प्योमो सुय बोय पानय छुस अमा ॥  
वलिज दजमो गोड़ नम लोलुनुय म्य नार  
सत गोर लगयो कोरथस मचि न्यन्दरि हुशियार  
गट चजमो दोदमो याम ज्ञान्यान शमाह ॥ च्य  
गोमो कुञ्जार चोलमो अन्यर त नन्यर गोम  
व्यन्यर त्रौवुम आनन्द अमृथय चोम  
कुलय म्य मंज मंज कुलस ब छुस जमाह ॥  
अवांज मनस अगूचर यस वीद छु ग्यवान  
बडय २ व्यदवान अति यीरन ज़न ति फलि नादान  
रिंद मूद्य जिन्दय छुय है पननुय आत्मा ॥ च्य  
ग्यवान यस वीद त पोरान सुय चोन पानय  
सत च्यथ आनन्द परि पूर्ण अधिष्ठानय  
कारन तय दीव तस्यछि करान नमो नमा ॥



छुय न वनुन तोरन वनुन क्यास ब वनय  
सुय बाये बो कुस गोमो अन्दरी लोलुन सनय  
श्रेह चे रेह गोंड नम अन्दरी म्य जम जमा ॥ च्य

न्यगुण शेवय जानुन जुव पनुन जुवय  
अखंड अपार तस दोयुम कांह नो ह्युवय  
सुय प्रजनाव दुयी त्राव स्वरांदम २ जोमा ॥

युथ छुस त त्युथ छुस अति ह्यथ गय सार्य अरमान  
शिन्यहस ति शिन्य गव तति हरान युग गन्यानय  
वन क्या क्युथ बो नाबूद तति आलमा ॥ च्य

नाव रूप वरन गुव आश्रम रोस्तुय छुय हो  
तिहुन्दुय पानय दीश कालय रोस्तुय सुय हो  
पानय जानुन गूव्यदो वन बे गमा ॥ च्य



## मन मूहन लोल

मन मूहन लोल चोन आम  
बली शाम सुन्दरी ॥

भाव दोध बर्य २ थव्य म्य जाम  
हत मत करत गोन्दरी  
तम नाह नेरि चतो दाम ॥ वलो



मनि कय ओम जोम दुध जाम

तत्याव लोल तन्दरो

आत्म ध्यान दानि मंजाम ॥

वलो

यिख नय नत वट बो जाम

यूगियन हर्दि यूगन्दरो

क्या गम लूख दिय तन पाम ॥

वलो

ओमकार स्वयाम आराम

आम श्री राम चन्दरो

छरिथ निशि द्राव गाम गाम ॥

वलो

सञा वीगञा युस छांज्याम

न्यबर्ध त अन्दरो

मनि मंज बाग बाञा सुय आम ॥

वलो

न्यर्मल न्यति मुक्त न्यश काम

बोजाम ओम कुय यन्दरो

राधा स्वामी शेवय द्राम ॥

वलो

अन्दर चास तमनाह द्राम

बुछिथ शेव मन्दरो

तति शाम सुन्दर डेशाम ॥

वलो

प्राण अपाण मिल ना व्याम

हा वुशुन त हू होन्दरो

शिव ड्यूठ प्यठ ब्रह्मान्ड वाम ॥

वलो

सहस्त्र दल वात नाव्याम

प्राण शीरिथ बन्दरो

शशि कलि अमृत्य वुज्याम ॥



पोहत कर म्य वुनि छुस बो खाम

प्येमच मस न्यंदरो

वुज नाव तम दोदुर चाम ॥

बलो

अभिमान काठ सोंभराव्याम

भक्ती नार सन्दरो

दजि गूव्यन्द वात परम दाम ॥

बलो



## लोल नार सूर

लोल नार सूर गोम वासनायि प्यचे

म्यचे सूत्यन म्युल हो गोम ॥

थोद वथित गयि न्यांदारि मचे

सोर दय जोनुम यामथ प्योम

शेतान शिव कुन द्राव बीठ कचे ॥

म्यचे

सुय बुय द्रास युस छोड़ रचि रचे

पथ कुन केह वुज नरुजम कोम

वनान वीदय क्याजि जुव कचे ॥

म्यचे

सुय बुय बो कुस दि जवाव प्रेच

बर्य २ अद्वयथ अमृथ चोम

व्रफती आयि व्रशनायि तेशि हचे ॥

म्यचे



पज्य यार्य नस खूच्य लूख र्यचे  
वैराग शम दम मन कर्योज मोम  
वाल २ वासनायि कड व्यचार वुचे ॥

सत गोरव कर कृपा क्या गोय च्य हचे  
सुथ च्य युस म्य हा छयार्याम  
चट सडुल्प मन अंद न प्रचे ॥

म्यचे

कर्म फल सूर ज्यन मरन चि प्रचे  
अम कुय अत गथ म्य मुक ल्योम  
बचायि त्रयि ताप लग्य न ताप तचे ॥

गुव्यन्द क्या वनि तोर कॅह न प्यचे  
वीद ति अथ जायि कोल हो गोम  
लोल यस दय सुन्द तस दय पचे  
म्यचे सुतिन म्यूल हो गोम ॥



## सत च्यत आनन्द

सत च्यत आनन्द दृष्टा मूहनय  
राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा कृष्ण जय जय ॥

विज्ञान सागर अजर अमर  
शाम सुन्दर श्री मुर्ली मनोहर  
कैवल न्यविकल्प जय न्यति मुक्तय ॥ राधा



न्यवास दीश काल रोस्त गव रासय

दित ह्यथ ख्यथ च्यथ रोजन उपवासय

अथ्य वनान वीद सन्त रास गव योह्य ॥ राधा

रास गव गालन द्वयतुक भासय

रास गव करुन सङ्कल्प सन्यासय

रास गव समाध यञ्ज व्यथानय ॥

राधा

रास गव पान सान कृष्ण ज्ञानुन कुल

रास गव पानस सूत्य करुन कुलस म्युल

रास गव मनोनाश रास वासनायि ख्यय ॥

रास गव यूग गन्यान रास गव भक्ति भाव

रास गव प्रावुन मरी सहज भाव

रास गव जिन्द मरुन रास सहज क्रय ॥

राधा

बुद्ध राधा शुद्ध गयि चानि आशिय

ही न्यरञ्जन मूहन च्यदा काशय

न्यर्मल न्यरद्वन्द स्वप्रकाशय ॥ राधा

जागृत सपुन स्वशप्ती थानय

चैतन्य कृष्ण संद्य गिन्द नव्य थानय

द्वारिका वृन्दाबन मथरा रासुय ॥

राधा कृष्ण

मनि रखमनि वुथन व्यहन दवन

ख्यवन च्यवन च्य कृष्णस सु स्वरन

कैह न व्यन जानान छय च्य मुय मुय ॥ राधा

वासनायि मुमतायि पूतनायि यछा

मूहन बब नय दिहि अघ्यास व्यह भरा

चावन गूपाल दाम अकि मारथनय ॥

राधा



अज्ञान कमसन सृज्य कम कम असर  
काम क्रूध आदिक मार्यथक जर जर

न्यरबल करिथ सुति गोल थनय ॥ राधा

बाल कृष्ण वृच गूपिये तम्ब लवेथ

प्रेम रस मस च्याविथ मुकलावेथ

सारिनय हंदि खुत आसख च्यानी य ॥

राधा

अन्द वन्द गुढ्यन्द पूशनय भक्ती

अथ्य भक्ती बनान जीवन मुक्ती

सख्ती चज कर सर पैदर पय ॥

राधा



समसार सोदरस ज्ञान

समसार सोदरस ज्ञान पुल

दि तर कर पानो सुल ॥

वैराग कानुल लद अथ

सथ ठठ्य भूमिकायि सथ

सम दृष्टी तखत कुनि रोजि न बुल ॥

दितर

सङ्कल्पन करुन डास

ओमय करुन अभ्यास

अभ्यासुक दबाव क्युल ॥

दितर



तृणायि जल छुय बर्यथय

सत संग नावि कयथ तर्यथय

ह्यक चठ वासनायि हिल ॥

दितर

सू के खोरि हम के हम

लोल नम वाय नाव दम दम

ब्रोंठ नाति जल जल हम तुल ॥

दितर

सतगुरु चरणनय तल

श्रावणि शीनका पठिय गल

अभिमान गाल बन मोकुल ॥

दितर

स्वप्न दृष्टावत पान जान

हान कास प्राव दिहि अभिमान

पानसान जान दयी कुल ॥

दितर

चय अक्य सुद्य छि अनन्त रफ

चमकावन छि सतवय दीफ

दूर कर द्वयतच बुल ॥

दितर

दिहि अध्यास वासनायि ज्युन

सोम्बरिथ व्यचार नार छुन

दजि अज्ञानुक जंगल ॥

दितर

ह्यस थव शाहनय सूत्य

रात्र घन खत्य वथ्य कृत्य

अमि करनु मन बनि शिहुल ॥

दितर

‘गुण्यन्द’ सदा सन्तुष्ट

तिमय रुध यिम समदृष्ट

आसि ब्रह्मण या वातुल ॥

दितर





## दोध्वस अन्द्री कर छोप

दोध्वस अन्द्री कर छोप क्या क्याह च्य ब नाद लायना ।  
 लोल नार सूर हा कोर थम कैह च्य म्योन आर आय ना ॥ दो  
 श्रावनि शीन हू गोलस सत गोरो चानि मायिना  
 वन्दयो र्यद शुद्ध पादन लगयो चानि ग्रायि ना ॥ दो  
 लोग नस तम्य बाल पानय लोल चे नो कायि ना  
 दिहि अध्यास दोद हन हन कोरन कैह वुय वायि ना ॥  
 मोत ब गोसो कोत म्य गोहम छोर मख जायि जायि ना  
 छायिन ब्रंथ छिम गछान सत गुरो चानि रायि ना ॥ दो  
 मचि न्यन्दरे वुज नविथ सुत ब कुन द्रायि ना  
 सुय बोय पानय ओसुस दुय असम छायि ना ॥ दो  
 गुर कृपा यस छय आसन सु बे परवायि ना  
 स्यदच अछ रछ छि डोलान बर नल तस दायिना ॥ दो  
 भवसरय तार लोगमुत चानि सूत्य कृपायि ना  
 परम पारय च्य ब कोरथस गोस नो हायि जायि ना ॥  
 पोष्य कर्य च्यतस त मनस चानि प्यठ पूजायि ना  
 समाध ध्यान च्यानि व्यथानय आयिना ॥ दो  
 गुस ब छारान सु ब पानय कोरमो त्राहि त्राहि ना  
 भ्रम किञ्ज छारनि पानस अस्य चोपोर द्रायि ना ॥  
 कम कम वीर गूव्यन्दों डाल्य मृत्य मायायि ना  
 रोज शरन सत गुरन हुन्छ चरण सायि ना ॥  
 दोदस अन्द्री कर छोप क्याह क्याह ब नाद लायिना ॥





## कल वाल

कल वाल चोवथस मय बाय प्याल प्याल  
साल यित त्रिजगथ पाल वोञा सोन ॥

नल्य बो छनसो प्रेम पोशि माल

आनन्द मस म्य चावीय सुय  
मीलिथ गछत तस युस छु बेखत रवाल ॥

साल

मेलि नय जल जल नत बन मोतवाल  
चाल तो दुइ हुन्द बार बोय

जल जल धियि सुय मौक लावि कलि काल ॥

बाल पान फयूर मुत छुस बो बाल बाल

बाल पान छोडुंम न थारय म्य  
पानय थारय पान सय हवाल ॥

गजिथम दिह अभिमान च म्य जाल  
ज्ञान नोव थस पान स्वप्रकाशय

गाश म्य ओनथो मंज शेव शिवाल ॥

साल

भक्तयन रछुवुन पान दोन दयाल

दुई म्य गंज राविय पानय सुय  
कुनुय जानय सुय रटिथ नल्य नाल ॥

साल

हनि हनि मंज सुय छु दिवुन डाल  
रंग रंग तंसजय चालय छय

रिन्दन छुय चलान अद्वयत दुशाल ॥

साल



आदि दीव निवन छु गूढ्यन्दस साल

अद्वयत चोट दिवान छुस सुय  
कुनुय छु सोरुय सुयबे जवाल ॥

साल



## लोल पोशन

लोल पोशन करेय पोश बनी  
न्यस्द्वय गोनी शिवस करु पूज ॥

अरग करतो मनस त प्राणस

बुद्धि पोश लाग तस्य पूजि भगवानस  
शिनि साक्षी सुन्द छुय म्य सेनी ॥

न्यद

ओमकार त्रशुल लोयनम छलय  
दिय अभिमानुक तुल नम कलय  
दई जाम छचव गयी न्यथ नाञ्जी ॥

पूजा पूजि युजख सोरुय छु पानय

पानय पानस छु पूज करानय  
सोरुय सुय छु सजि वोग जी ॥

न्यद

हअर तस प्यव यूग त गज्जान  
वीद शरमन्द गछिथ छि ग्यवान

आश्चरस गयि बड़ि बड़ि मुनी ॥ नस्य



ईक वट रट मन तय ब्ययि प्रान

सोरुय शिव कुनि नो छु शेतान

गूव्यन्दो पानस छुव वनी ॥

न्यस



## हनि हने मन म्य

हनि हने मन म्य न्यूथम अस वजो शंकरय

गुणातीतय शेव रूपय जान नोव थस च्य गरय ॥

ज्ञान चे गंगायि मंज श्रान कोर गंगा धरय

दिह अभिमान मल म्य छोल हो दुई म्य चच्य हरी हरय

अहं कारस भस्म कोर थम कस वनय भस्माधरय ॥

कर कटाक्षा ही शम्बूनाथ तर अकिक्षन मात्रय

व्यशन शिवय शिव छु व्यशन जोन होव्य शम्बरय

टाठि शुभान जिन्द मरुन जिन्द मीरथ नो मरय ॥

परम आनन्द मस ब चोवथस रस म्य लोग लमरीश्वरय

व्यचि कति म्य च्य सिवा बो च्य सिवा हो मरय

जगतचि बुनियाद करतो रिन्द पानय च्यय सरया ॥

सर कोर हो संकल्पन चेज्जा हा कोर मृत खरय

सदा बूज थम मुदा कोड़थम बोय लगय गदा धरय

मस ब कोरथस छुतुथ आनन्द ही आनन्दी श्वरय ॥



पान परमानन्द पूर्ण द्राख करिथय सरय  
 भ्रम म्य कोसुथ गम म्य कोसुथ ज़र म्य चोल ही अजरय  
 वीद ग्यवि थकि मत्य वीदनं ति वछ थर थरया ॥

कुस ग्यवी हो गोथ चोनुय करथ दया सागरय  
 वञ्ज दि गूव्यन्द पनिस पानस नेर छाड़ुन शंकरय  
 दुय त्रविथ सुय हो पानय गम म्य चोल दिगम्बरय ॥



## वीद थकि मत्य

वीद थकि मत्य यस छि ग्येवानय  
 मन ह्यथ गव म्य सुय जानानय ॥

प्रेम च पोशि थर यलिम्य फोजी

मस गव म्य चविथ दुर्यभ्य गजी  
 दुय अलि गजतय सुय हा पानय ॥

मयि मारिफथ छुम चावानय  
 आरि फव चव गयि मस्तानय

मस्त कोरनस वहदथ खानय ॥ मन  
 कोर म्य पान सर मंज भव सरय

हनि २ मंज वुछ मख म्य हरय  
 विद्या तीथ हा हा चोनुय थानय ॥



वीद ओस यिनय ताफ ओस प्यनय  
 जीव इश्व त्यलि ओस ज्यनय  
 हर तस प्यव यूग ज्ञानय ॥ मन  
 वन हा वननय छुन यिवान  
 गूव्यन्द क्याह गेवि गछि न्यर्वान  
 गुना तीत हा छुय चोनुयपानय ॥ मन



## गूर गूर करयो

गूर गूर करयो ही अगूरो ही अगूरो  
 च छुखा सो प्रकाश बहा पम्पूरो बहा पम्पूरो ॥  
 बुछि थन क्यय पंम्पूर, नुरुक नूरो नुरुक नूरो  
 दिह अभिमानस कोरनय सूरु कोरनय सूरु  
 सूर गछिथ रुदुख च नुरुक नूरो नुरुक नूरो ॥  
 च छुरव स्वर तय बहा तंम्बूरो बहा तंम्बूरो  
 बछुस हो मस तय च तम्पुक सरुरो २  
 प्रेमुक तोवथम म्य हा तन्दूरो ना तन्दूरो ॥ गू  
 मन सय युस मारि सुय छु बहदूरो सुय छु बहदूरो  
 वननय म्योनुय कोरुथ मंजूरो कोरुथ मंजूरो  
 दुय त्राव च्य पान वोथ म्य गोरुहो वोथम्य गरुरो ॥ गू०



मन पम्पोशस प्रेमुक व्यूरो प्रेमुक व्यूरो  
 प्यूर च्यत शाम रंग हा बम्बूरो हा बम्बूरो  
 रठ तख राग दीश संकल्प चूरो संकल्प चूरो ॥ गू०

आदि दीव चोव थस मस भर पूरो मस बर पूरो  
 दुई हुन्द ह्यस च्य कोरथम दूरो कोरथम दूरो  
 जोलमय मूह कुय शमह कोफूरो शमह कोफूरो ॥

गू०

आनन्द मस च्यथ खोत म्य सोरूरो खोत म्य सोरूयो  
 राज यूग राज बोज साज सन्तूरो साज सन्तूरो  
 गूव्यन्द कलंदर अनि मन सूरुओ आनि मन सूरुओ  
 गूर गूर करयो ही अगूरुओ ही अगूरुओ ॥



## दम दम क्रम

दम दम क्रम सान दम वाल खार वारो वे  
 शम यियि त गम चलि हम गलि उम कारो वे ॥

सत गुरु कर दया वोज कया म्योन चारो वे  
 कर कया बर गोम यावुन लोक चारो वे ॥

आदि दीवस सत गोरस गोड़ कर नमस्कारो वे  
 शेर बन्दर अनन्दर अचि जि अद बार वारो वे ॥



गोड़ प्रकरम कर यति मूला दारो वे  
थान थान फेर नेर बात दशमो द्वारो वे ॥ शम

ब्रह्म रोन्दरय मंज द्वाद शान्तस लारो वे  
शम प्राव सहस्र दल तीथ कर करारो वे ॥

विजि २ वुजि शशि कल च्यत अमृत दारो वे  
फोलि हृथ कमलय फेरि अद शेह जारो वे ॥ शस

अनहद मंडलय बोज तोफ नगारो वे  
गोफि मंज नाल मति रहुनै पजि यारो वे ॥

सत गोर कृपा अति थय बकारो वे  
शिन्य छटि अनि गटि गाश अनिदियि तारो वे ॥ शम

भ्रूमदि मंज जोत क्या चमक दारो वे  
गतस दरुन चालुन लोल नारो वे ॥

जून डबि मंज जूल क्याह रंगा रंगारो वे  
वथरिथ पलंग प्रंग तति शूबिदारो वे ॥ शम

हारव रोस्तुय छुय जुव यति तारो वे  
भवसर तारि कीवल सत व्यचारो वे ॥

सम सार भ्रम बऽच्य शूर्य ग्युंदुन दोह तारो वे  
कर व्यचार दयस रोस्त न यति कांह सारो वे ॥ शम

शम दम वंराग सन्तूश मन मारो वे  
मन मोर यिमव तिमय परम पारो वे ॥

ओम गव सूहम ओम सोरूय सारो वे  
ओम गव पनुन पान ओम दारि नायि दारो वे ॥



बोन गूव्यन्दन छोढ ज्यूठ कलन न व्यस्तारो वे  
नोन सीर वनुन टाठि करान मारो वे ॥ शम



## वनि व्यासि च

वनि व्यसि च सथ गोरसय  
वन कोस पूजा कर सय ॥  
बछ सय पतिमे प्रारे-प्रारस दछिने दारे  
दम - दम अमरी श्वर सय ॥ व०  
बछ सय न्यथ प्रवातस  
पूज कर शक्ति नाथस  
जर २ श्री बास कर सय व  
वोथ हा सुले मूले  
प्रारस तूले मूले  
भवानि भूतिश्वर सय व  
क्षन क्षन रातर छनय  
पूजा कर तन मनय  
गंगीय गंगा वर सय ॥ व  
छाज्योम सुबह त शामय  
सोज्स कोत पैगामय  
गर कति कलना करसय ॥



छाज्योम जरा जर सय  
गर छुस मनि मन्दर सय  
शक्ति शिव शंकर सय ॥

व

लोल सूत्य लायस नादय  
सीवस पम्योश पादय  
गरि २ तस आगर सय ॥

व

द्रायस तोशान तोशान  
गोन्द कर प्रेयम क्यान पोशन  
मुश ताख मुशक अम्बर सय ॥

व

दोह गोम प्रारान प्रारान  
अशि कनि खून छस हारान  
इय नत अद मां मर सय ॥

व

पक हा सथ गोर राये  
वनि दिम जाये जाये  
जायि जायि जटा दर सय ॥

व

छोडुम गोविन्द नावय  
भाग्य वानि भक्ति भावय  
विजि विजि व्यशम्बर सय ॥

व





## मंगुन हय छुम

मंगुन हय छुम मंगित ओनुम,  
मंगल करि पानु गूयन्दु गू ॥

कमल सरस अन्दर वुछुम,  
कमलि रोछुम गूयन्द गू  
ततिय वुछुम ततिय हय छुम  
मनि मंजु रोछुम गूयन्द गू ॥

तस्य निशि भोवुम  
तमीय होवुम  
तोनुय छोवुम गूयन्द गू  
छुय म्योन मोलुय  
गूयन्द कोलिय,  
वोव तस्य ब्योलुय गूयन्द गू

सूहम लोलय तस्य दिचह शोलह  
सीरय बु रवोलय गूयन्द गू  
सोगनम मूलुय दितनम अतूलय  
अनिथ म्य तूलुय गूयन्द गू ॥

मुछुम गोबुय बानहछ दोबुय,  
लभिथ म्य लोभुय गूयन्द गू,  
लभिथ पानय नोन जानान  
अनि भाग्यवानय गूयन्द गू





## माता राज्ञिनि

माता राज्ञिनि दया कर  
ओरय मुचराव तय च बर  
मऽज राज्ञा दया कर ॥

ओ

जगतिच्य छख च माता  
सारिच्यो छखय दाता  
क्या ग्यवव च्योनुय बजर ॥

ओ

आसविन्य छख दयावान  
भक्तन छख चि बखशान  
माजि हुन्द छुय च्य थजर ॥ ओर

शिवस शक्ति चि आसान  
मुह गट छक चि कासान  
शक्ति पातिच्य नजर कर ॥

ओ

सर्व व्यापक च आसान  
जायि जायि छकय भासान  
तुलि मुलि छुये च्योन भर ॥ ओ

दरबार च्योन छु प्रजालान  
प्रथ तरफ गाह छु त्रावान  
बुछ नस किच्य दितय नजर ॥

ओ

मायि हत्य आयि लारान  
डेढि तल ठिये प्रारान  
अख कृपा दृष्टि च कर ॥ ओ



सिंध वाजि तन छि नावान  
तीज जल मन छख सावान  
मन कुय छखय गाशर ॥

डयक सीत्य प्रदिक्षन दिवान  
साष्टांग परण प्यवान  
सन्मुख असि निचि च तर ॥ अर

तुलि २ व्यन छि चारान  
रंग २ पोश छि सुम्बरान  
शेरि लागोय नेरि शर ॥

ओ

अशि वानि गुढ़ छिय दिवान  
मनि फलि अर्ग छि लागान  
अथ च दारतय ओरय सर ॥ ओर

प्राण कुय दीप आलवान  
भावकुय दुध छि भावान,  
भाव सोनुय कबूल कर ॥

अपिज्य पज्य मंत्र परान  
यजर छकय चिय जानान  
गलतस चि करतय स्यजर ॥ ओर

कड़तय चि असि अस्मान  
रोज तय सदा मेहरवान  
छक सना तन चय अमर ॥

ओ



बन्सरी छु च्येय कुन बनान  
अक होत ज़ारी करान  
बुज्ज ति दितय अभय वर ॥ ओ



## च्यानि रोयुक

च्यानि रोयुक च्यानि खोयुक चानि मोयुक छुम कसम ॥

सिर्य मन्दछन जूनि गव गश  
च्योन हसुनुय बुछिथ

चय म्योन जुव च्य न कांह ह्युब  
चानि रोयुक छुम कसम ॥

गुल छि मन्द छान दर गुलिस्तान  
सुम्बलिस तान सुत्य ह्यथ

बुद्ध अम्बर अतिरि नऽफय  
चानि बोयक छम कसम ॥

बुछ अकिय मोये अवेजान  
कुल जमीनो आसमान

दीव कारन जीव सडिरय  
चानि खोयुक छम कसस ॥



गोवेन्दुन चई दरमन्द  
ब्योन न्तय बद बयो  
मोल मज्जय सोरुय कने  
चानि खोयुक छुम कसम ॥

ज म हकयो जाह ब वनिथ  
थि च छुख तथि हो लगय  
कुन वनून त्यय छुम न फोरान  
चानि कुनि रुक छुम कसम ॥

नून वछाव मंज सोद रस  
पय ह्यने ब्येयन वनव  
पान सुय गोल कस वने वोडा  
चानि सनिरुक छुम कसम ॥ च्या

रुम किजा द्रास छारने च्य  
पान चय ओसुख पतव  
बय ना आसो कौन वने ।  
चानि ननिरुक छुम कसम ॥

बय ना रुदुस कुनि शाये  
च्यानि माये वलि चोपोर  
रोस्त न च्यय छुय अख हवावय  
चानि गनिरुक छुम कसम ॥



पाऽन्य पानस आख बुछने  
 द्राख गूढ्यन्दा बनित  
 ब्याख च्यरोस योर नो कांह  
 चानि कुनि रुक छुम कसम ॥



## तोशान छसा

तोशान छसा बपोश लागय  
 यित मो सत गोर म्यनि आगय ॥  
 सतगुरु लगयो सत संग सय  
 पम्पोश किस हिविस रंग सय  
 यिन चानि बुज्य हेम पोजा नागय ॥

सत गोर लगयो पडिर पऽरी  
 कऽस थम जन्मन हन्ज खऽरी  
 फोलुमुत छुमा प्रेमुक बागय ॥ यि  
 सतगुरु सथ बोल नऽवथस बो  
 सत की वाव्य तोल नऽवथस बो  
 तन मन ब अथि कुन लागय ॥ यि

सतगोर आमुत छुमा चोन ल ल  
 ज्योति रूप हावुन छुय चोन कोल  
 द्यन त राथ ह्यमयो च्य ब जागय ॥ यि



करयो च्य किच पोश माल बो

च्यानि पुछि छोह दिवान छसा बो  
रंग र चडिरमय च्यानि रागय ॥

यि

गोन वखनान छस दान तय राथ  
हाव वोजा दशुन भाव प्रभात  
करिम न तफज्जफ दरिम न मागय ॥ यि

मदरा बो नेशि बोद्ध छसना  
शीतल पानय शेद्ध छसना  
बल राव भवसर की दागय ॥

सत गोर उदास गमच्य बो  
च्य पत दास द्राम च छसा बो  
न्यशकल वुज नाव स्मरच जागय ॥



## मोय मडिरफथ

मोय मडिरफथ छुमय चावानय  
यारि जानान पनने वानय ॥  
सन्य वोगडा वन्य दिवानय  
साकथ बनिथ आव ननिवानय  
मस चडिवन गयि मस्तानय ॥



मलरि २ चव गयि देवानय  
ओर योर सुय रुद पडिन पानय  
दोगन्यार नय रुद अद दानय ॥ यरि

जर जरय सु बतिथ छु पानय  
पीर कमिल साकय छु पानय  
दर्द सत्य वुछ द्राव नूरानय ॥ यरि

बानन यलि तुल मय ठानय  
नप नपय द्राव चम कानय  
सास भास्कर तति मन्द छानय ॥ यरि

योहक च्योनुय छुय बहानय  
ओर मस्ती दी यलि सु पानय  
सनिरय मंज नेरि दुर्दानय ॥ य०

शमहस पथ नेरि परवानय  
गछि दज्जिथ प्रावि न्यरवानय  
तीज मण्डलस सुत्य गछि रलानय ॥ य०

बन्सरी प्रारान तसिन्द थानय  
न्यायि अन्ज रावि नेरि अर मानय  
मेलि जानान बनि यख सानय ॥





## चई सोरुय

चई सोरुय त बुई बहानह  
हा जान नह वन्दयो जान ॥

शर मन्द छुस ब अनजान

परि मति छिम न वोद पोरान

दया करत म दया वानह ॥

हा

तारि गमत्येन च तारनह

फटि मत्यन बोठ खारान

आर कति छिय च्य अस्य प्रारानह ॥ हा

अन हद मंडल युस ब सानह

प्रन वुक जोर बंस बोजान

तस तोर य छि नाद दिवानह ॥

हा

शेरि किञ्चा नेरि युस फरजानह

अमृत तोर छुय वालानह

शेशि कलि गलि गलि चवानह ॥

हा

इगद्राज दीव ह्यथ यिवानह

सलामि तस छिय भजावानह

वछान केह न छुख बनानह ॥ हा

अच्छ रच्छ छस तम्बलावनह

मुनो तति छुख इलान

गोफायि पथ युस गछान ॥



अष्ट सेजह छस पत लारानह  
सुनो स्योद छुब बुछान  
चरनन छिस म्योठ दिवान ॥

दशमो नाद युस बोजानह  
त्रे कारन ति तस छि प्रारान  
दूई त्रविथ सुय आसानह ॥

दम लव दम दिथ दरदान  
अथि ह्येथ बोठ छिय खसान  
सूहम जेरि प्राण अपानह ॥ ह०

होश पोश नूल छुब तोशानह  
ब्रह्मान्ड पशि थर फोलान  
कुञ्जि रुक ओल छुब येरानह ॥

मन न्यूथम हा गिन्दानह  
हनि हनि चई छुब वासान  
मुखन निशि छुब देवानह ॥ हा

मेंच छारान मेच मोचान ह  
मे सान सोर कुन नारान  
मे चं मिलवन गयी ज्ञानह ॥

समाध असामाध सगानह  
नविकल्प च्य क्या हान  
साक्षी सतचितनन्द पानह ॥



चई साकय त चई मय खानह  
पञ्जि पानस छुख मय चावान  
चई छुख मय तय चई पय मानह ॥

ह

चई दिह घ्याता तय ध्यानह  
कर क्या ध्यान छुस मन्द छान  
त्रिगुनाह तीत च्योनुय छु थानह ॥ ह

सवप्न दृष्टा वथ छुख च्य पानह  
प्रज्ञ नविथ पनुनुय पान  
यिमव ज्ञोन तियय मस तानह ॥

संकल्पन करिथ फानह  
चई रोज्ञान द्राम अरमान  
रिन्दव गिन्दुय शिन्ध मैदानह ॥ ह

ब चई यति छुन रोज्ञान  
हैरतुक च्य मै लोयथ कान  
रिन्द जिन्द मूद्य अति हैरानह ॥

हा

चई शमाह त चई परवानह  
पाञ्ज पानस गतह मारान  
वार पाठय जाल दिह अभिमाह ॥ ह

नत कुस बन्द कुस मोकलानह  
ब्रम चलिथ छुय ननान  
कुसू मरद कस जनानह ॥



नत कुस जाव कुस मरानह  
ब्रमह किञ्चा युन गछन रोज्ञान  
ब्रम चलित रिंद आसान ॥ ह

ख्यथ च्यथ करित करानह  
केंह नो छुख पानय जान  
ओर वोर छुख चई नारानह ॥

सो प्रकाशि छुख चई प्रजलानह  
सरिसय चई गाश अनानह  
च्येथ साक्षी बड़ि भगवान ॥ ह

चोर बीद अरदाह पुराण  
गूढ्यन्द गीत छुय जेवान  
समाज सोख मज वे थानह ॥



## लोल आम

लोल आम लोल बन नावस  
नावस लग सय बो ॥

गोस गम पननी बावस  
क्याह च्य कोर थम मदनो  
बाद क्या छुम याद पावस ॥



सीनह मुचरविथ हावस  
ईयम यलि रोबरो  
पेश कश सोरुय व थावस ॥ ना

तनि तनय मिलनावस  
खोनि वयथ कर सहो त हो  
पान पनुनय लरि सावस ॥

राज हंस कोरनम कावस  
तोशि ना ब लोतलो  
पम्पोशि तीन ही ब छावस ॥ न

सु छु बुछान भक्ति भावस  
कंसीय नो दियो दको  
राजसी नय बुछि सु वावस ॥

वति कोसम वथ रावस  
लोल पोशि छक सय बो  
चरणन प्यठ कल थावस ॥ न

लुक कथन कन नय थावस  
क्याह कोरनम म्य बदगो  
लूख त्युलि तन ति टावस ॥

हृदयस मंज वथ रावस  
लोल आमुत छुम म्य लो  
पान पाद न पुश रावस ॥ न



आलवन पान आल नावस  
डेशन यलि सु खोश खो  
गूव्यन्दस बस छुय हावस ॥

नावस



## वाद् छुय पूर

वाद् छुय पूर नाद् ब्यद् सय सूत्य रोज  
दीवी बोज सोज छयन्द सय सूत्य रोज ॥

मशरविथ सम्सारीक सोख त दोख  
पुशरविथ पान दयि सञ्जि बति पख  
वातख अलख गूव्यन्द सय सूत्य रोज ॥

आर च्योनुय यियि परमीश्वरसय  
दिल फिदा कर पनीनस दिल बरसय  
सत गोर सय दीन बन्द सय सूत्य रोज ॥ दी

यलि दर्शुन बनि त्यलि ननि सोरुय  
गूव्यन्कथ अद् त्यलि नयि सोरुय  
बनि सोरुय आनन्द सय सूत्य रोज ॥





## आश्चर अमर

आश्चर अमर छुय स्वरूप च्योन  
छुय नमस्कार हा सोन सोन्दरो ॥

सत च्यथ आनन्द अलोक्यख  
च्यय आत्मा म्योन सोन्दरो ॥

न्यथ नवि खोत नोव वीदय ग्योव  
प्राणि खोत हा प्रोण सोन्दरो ॥

प्रथ कुञ्जी तीजस मंज च्योन गाश  
शूभायि मंज शूभ वुन सोन्दरो ॥

ऋषि मुनी यूगी सन्त साध  
ध्यान दारान आय च्योन सोन्दरो ॥

चेन नुक च्येनुन होशुक होश  
गूढ्यन्द सुय प्रय म्य सोन्दरो ॥



## दित दर्शुन

दिन दर्शुन म्य पननुय  
वन्त च्य वया कम गछी  
करत दया हे म्य भे अन्त ॥

अन्त



## सथ बोज सथगुरु

सथ बोज सतगुरु छुम शक्ति नाथीय  
म्य शक्ति पाथय करिथ गोम ॥

नोन जानानय वन्द स जानीय  
तम्य सुन्द ध्यानय धरिथ गोम ॥

सतगुरु शब्द यलि गोम वनिथ  
मनचि बाजे खनिथ गोम  
पापन त पोन्न्यन त्यलि गोम हरिथ ॥ मथ

न्यबर दोपनम अन्दर अचुन  
दोह द्वारि कायि नचुन छुम  
सम न्यथ सुमन्दरस तरिथ ॥

बोनय असिथ ख चस ह्योरुय  
सोरुय सोरुय हरिथ व्योम  
युस गुरु प्रेय म्य ईयीय बरिथ ॥ यम

कुकिलि हन्दि पाठय दितुम दमई  
बुछुम हमई सूहम सू  
सूहस त हमस अपोर तरिथ ॥

गुरुन दोपनम छोपय छोपय  
छोपय नपय नपय छय  
बुछ नप नपय गोट प्यव हरिथ ॥



मंज लोक चारस सोदा गारस

अहं कारस दुतुम नाद  
नादान गयस सोदा करिथ ॥

बुजर वुछुम शमन शमन  
उं मन रटम रुवन जाय  
यिम आयि शमन तिम गई तरिथ ॥

लल देदि थोवय तन्दुर भरिथ  
मन सूर कठिस गरिथ गोम  
भाग्यवान रुजिय जिन्दय मरिथ ॥



## करु वोञ

करु वोञा सोनुय चार लोलो  
सतगुरु दार अवतार लोलो ॥

यथ संसारस मन्ज हान्य आय  
अनुग्रह च्यानि सूत्य बनि सोन पाय  
तारु वोञा यमि संसार लोलो ॥

अयन्चारस मन्ज गयि सरिय  
करु वोञा च्य पाननीय यऽरी  
जायि जायि छुय अन्दकार लोलो ॥ सत



कासंग मंज च्य असि बोठ खार  
सत संग सय कुन लाग संजा नाव  
तार दियि सत व्यचार लोलो ॥

सत

सतगुरु छया असि च्यानि आश  
हाव बोजा सतसंग कुय प्रकाश  
सत्य लूक च्योन दरबार लोलो ॥ सत

यन प्यठ जन्मस च्य योर आख  
मलिस माजे निशि च्य जाख  
कोरुथ च्य पनुन चार लोलो ॥ सत

हंसन सत्यो थविथ ज्ञान  
तम्य सूर्य वुफ नोवुथ पनुन पान  
खुल गयी सऽरी द्वार लोलो ॥ सत

दतात्री आख अवतार दरिथ  
भव सागरस कत्या च्य तरिथ  
मोक लविथ पापन्य बार लोलो ॥ सत

कल्प वृक्ष छुखना से च्य  
मंगान युस यो दीवान तस ती  
बरि बरि छिय अम्बर लोलो ॥ सत

नावय चोन छुय गूप्यन्द कोल  
दोह खोत दोह छुम गननय लोल  
भक्ति दियि बारम्बार लोलो ॥ सत



सतगुरु च्योनुय छुय दयाल  
सात सात विजि २ सोनुय छयाल  
करु वोजा असिति पारम्पार लोलो ॥ सत

पुशि भाव वजिमय च्यनि तोत्ता  
करतम याद वोजा म्यति साथा  
धारनायि युथ ध्यान दार लोलो ॥ सत

अजा छस करान मान तिमनय सऽति  
भवसागरस तरिथ अजतानि कूति  
तारु वोजा म्यति च्य तार लोलो ॥ सत

बद्री छुय मनसेय च्योनुय श्रैह  
सात सात हृदयस म्यनिस ब्येह  
छम बजान दिलचे तार लोलो ॥  
सतगुरु दार अवतार लोलो ॥



## गुल सय रोस

गुल सय रोस हय गुलजार व्यसिये  
सु छ सोनुय सतगुरु द्वार व्यसिये ॥

सतगुरु सोन क्या ओस शुभान  
तो वुछिथ दीवन छु मन लू भान  
करि तम्य सरी हुशियार व्यसिये ॥

सू



बुछनय न तम्य मुढ तय ज्ञाणी  
सारिनिय क्युत क्या ओस सानी  
मोधुर क्या तसुन्द गुफतार व्यसिये ॥ सू

बुछनय न तम्य पुरुष तय त्रिय  
आसिय न तमिस मन सिय दुय  
कोसुन सारिनय अन्धकार व्यसिये ॥ सू

जन ओसुय फोलवुन पोशे बाग  
क्षन क्षन मनसिय छुम बुजान राग  
बुल बुलस रोस खरि गुलजार व्यसिये ॥ सू

चमनन मंज ओसुय सु गुलाब  
जन छस बुजान अन्दरी खाब  
खाब मंज गयि हुशियार व्यसिये ॥ सु

आसितन फोलवुन पोशे बाग  
गुलालन छुय दिल सय दाग  
बुछ कुस सोन नजर व्यसिये ॥ सु

फोल वुन बागा ओस शूभान  
बुछन वाल्यन मन लूभान  
जन छु गोंडमुत तथ नार व्यसिये ॥

गूव्यन्द कोला ओस नामी  
सारिनय भक्कन हुन्द स्वामी  
दतात्री मुनीश्वर अवतर व्यसिये ॥ सु

पम्पोश मोख क्या ओस शूभान  
होश रसित्यन होश ओस दिवान  
तस ओस मेहर बान दयाल व्यसिये ॥



पालिख पूरहस वैंयकन्ठय  
मालिख थोवहय ओसुस जय  
सन्थन हुन्द हय सर कार व्यसिये ॥ सु

वीदस व्यसतार छुतनय तम्य  
ब्योन ब्योन हविथ छुतनय तम्य  
नन्य पठय गोतायि हुन्द सार व्यसिये ॥ सु

सत सुयि सूत्य तस असिय प्रय  
सात सात करवुम ओसुय लय  
छुतनय हविथ उं कार व्यसिये ॥ सु

गुन वखनान रात तय छन बो  
मन किञ्च सात सात सोरान बो  
भद्रि हुन्द हय गुप्तार व्यसिये ॥  
सु छु सोनुय सतगुरु द्वार व्यसिये ॥



## म्य ज्यूगि

म्य ज्यूगि छुत ज्यूगि पावरय  
दोह राथ वुछमय खावरय ॥

पछ करत म्यनिस वन नसय  
क्या ज्ञान ज्यीव प्यठ अननसय  
बूजिथ करेम कुस बावरय ॥ दों



जर जर जर सुन हालि म्य  
ओला बुछुम प्यठ तालि म्य  
दम दिथ हम सन छिम परय ॥ दो

दम दिथ खच सय श्रुोर कुनुय  
सूहसत हमस कोर कुनुय  
यारन म्य करनम यावरय ॥ दो

क्याह अन्दर क्या न्यबरय  
डीशिय ब छस बे खबरय  
छुम रछन्न मां रावरय ॥ दो

छु शयि रुजिय यियि कोत  
म्य सूत्य पानस नियि कोत  
दऽज रज त न्येरेस मां वरय ॥ दो

गो छयन सोख्य म्य योरकुय  
गब कन म्य आलव तोरकुय  
खस पावरय वोडा आवरय ॥ दो

जाया म्य बुछ मय क्या जबर  
नय शुमशानय नय कबर  
शाहन छि शाही टावरय ॥ दो

कैह सर करिय छिय बोन कुनुन  
कैह फेरवन्य छिय चोन कुनुय  
कैचन गऽमच छय कावरय ॥ दो



कैचन छि आकाशस मुदय  
तिमनय छु प्रेकाशिय बोदय  
रठ मूर्खस निशि माहबरय ॥

दों

यियि मूर्खस निशि दय लये  
च्येयि लाल कुय लोला मोये  
दय जागि सूतयी जावरय ॥ दों

चव भागिवनब सुय मोये  
क्याह चीज छुय हातम तये  
सुय जर सुर जर जेवरय ॥

दों

लोलन गंडय अनवार म्य  
गूव्यन्द नावय सार म्य  
वावस म्य कर नम वावरय ॥ दो



ब सोज

ब सोज वनय शबान  
जानान बोजुम कनय ॥

आश्चर बुछुम इलाह  
न समान न सिला  
दोगनि गरि मय दसवान=दुर्दानह



दरिथ रोजुम दस्तय

लागय अस्तय अस्तय

खावर वुछुमय खोबान=ताबान

लालन करिमय मालय

नालय रोटमख नालय

यक्स वुछुम यक्सान=रवान

मस चयथ आयम मस्ती

हऽवम म्य हम हस्ती

पेचस अन्दर पेचान=मस्तान

द्वोन यलि सपुद म्युलुय

त्रशिवन्य करम बुलुय

शाहन अन्दर शाहान ॥ हमशान

पीरन धुतनम हऽविथ

वीरस सीरा वऽविथ

द्वय त्राव रोट मस दामान ॥

दवान

बूजिथ करतम यऽरी

खऽली वुछुन नऽरी

पऽविथ धुतुनम निशान ॥

कमान

वैराग शास्त्र गरिथ

लोलकि अलमास वरिथ

न रुद तीरय न कमान ॥

निशान

सोरुय होरुय मोरुय

होरि तिखचस होरुय

वज्जान वुछुम ग्रजान ॥

खजान



म्यचे न दरियावय

वावस अन्दर वावय

नोवुथ वुछुम नवान ॥

चवान

व्यन्दय त रुदि नादय

न साद ताये सादय

न सत सतूर शमान ॥

व्यमान

गोरन सूत्यी मायय

नोरिथ छि न्यवानय

वुछुम पननुय पानय ॥

भगवान

गूव्यन्द चय भागिवानय

वुछुमय नव न्यदानय

आना करिथ फानय ॥

द्युनदान



ओम सोरूप ओम

ओम सोरूप ओम सारो

ओम कारो व्यचारो ॥



चारो करुच लुकचारो

चार चारि अथ केह भजन

समसार भ्रम दोह तारो ॥

ओम

व्यचार करत वारो

तारो लगी च्य

ध्यारो रोस्त येमि समासारो ॥ ओम

छुस अन्नत अपारो

धारो धारनायि ध्यान

स्वप्न दृष्टा वथ सारौ ॥

ओमकारो

सूहम सू सेतारो

वारो लोल अथ वाय

प्राण अपानच तारो ॥

ओमकारो

न्यति ज्ञान सुख आधारो

छुस दम २ यी ग्यवान

वज्ञान रव सर्वाकारो ॥

ओमकारो

आदि दीव विघ्न हरतारो

बारम्बारो कर

गुरन तिमन नमस्कारो ॥ ओमकारो

कुस मुकुल गिरफतारो

कल्प्यथ बन्द मूख्य छय

न्यत मुक्त हो च यारो ॥

ओमकारो

ख्यथ च्यथ न्यर आहारो

गंगनवत अलीप पूर्ण

बोज साक्षी न्यराकारो ॥ ओमकारो



शम प्रावख मन मारो

हम गलि ओम स्वरन सत्य

ताफ शोहलि फेरि शहजारो ॥

ओमकारो

च्यतस सत्य ओमकारो

लय करू रात्र द्यन

जिन्द मर बन परम्पारो ॥ ओमकारो

दीश काल रोस्त व्यस्तरो

ह्येकि म्योनुय कुस करिथ

रोस्त बे पुनि पाप आजारो ॥

ओमकारो

तोर असि न तार दिपि तारो

ओमकारो 'गुण्यन्दस'

स्वर ति दोदमुत छु लोल नारो ॥



## सत व्यचार भमन

सत व्यचार भमन फासि सूत्य मारान भ्रमचर

सूर गछान ज्ञान नार सती वासनाये ॥

कर क्याह सतगुरु यावुन म्ये सूर

केह बन्यम न रोस्त चानि दयाये

केह कोरम न अथ मंज स्यठा म्य फयूर ॥



पंजर केर्यतन पानस तिमेल्यतन सूर  
 वृथ दर्य २ न्यथ ख्यतन ति लाये  
 पोज वनुनय मुखन निशि म्येवूर ॥ सूर  
 श्वासन ज्ञान थव वासन करू दूर  
 आसन दार तिय केहे न परवाये  
 मन मार कर व्यचार छुय स्यठा यिकूर ॥ सूर  
 आन्द अमूर्यथ ओवमो म्य भरपूर  
 लगयो लगयो सतगुरो चानि कृपाये  
 होसिल बन्योव अब्दी म्ये सूरूर ॥ सूर  
 व्यषय मुछ बुछ म आसन त्यय स्वर्ग हूर  
 स्वर्ग दच अछ रछ रोजन त्यय दाये  
 बे परवाये बन दिहि अध्यासलेर लूर ॥ सूर  
 हम कुय हम तुल सूकुय वाय खूर  
 यम्य वाय तसुंज नाव आवलनि द्राये  
 संसार सागरस कोर तमी अबूर ॥ सूर  
 दुई चख हसद यिमय छि मनुष्यस कसूर  
 लागान छिस यिन गछनचि क्राये  
 प्राव मुख कर व्यचार यियो सबूर ॥ सूर  
 दिहि दृष्टि त्राव समदृष्टिबन चति पूर  
 मुकली ज्यन मरनुक बुह्य त वाहे  
 मन पम्पोशसस सत च्यथ आन्नद बम्बूर ॥  
 मुकल्योव चुरासी लख चोल म्ये गूर  
 चख दुय त्राव सुय बो कस नाद लाये  
 शख चलय ज्ञोन पनुन पान नूरुक नूर ॥ सूर



छारन क्याह न्यबर च्यत लोल मस मधूर  
दुयी त्राव तुल सुय छय पर्द छाये  
वुछख जायि जायि सुय हाजिर हजूरा ॥ सू

अवांग मनस अगूचर सु ज्ञान सद्वर  
दफ सुय बोय बर मो केह वाये  
पोज वननुय अपज्यार्पन गछि कठूर ॥ सूर

दिहि अध्योस्य संदि खुत काहनो मोकूर  
ज्ञाल दिहि अभिमान 'गून्यन्द' ज्ञान काय  
च्य मंज सोख्य गोमुत जोहूर ॥ सूर



## लोल छुम शिव चोन

लोल छुम शिव चोन च्य सत च्यथ आनन्दय  
चन्द्रम त चन्दुनुय हव शुहुल कर म्य मन ॥

थर छम बर मा करि मूहनो तूर  
खाम सय सत गोरो छय स्यठा क्रूर  
कासि तूर लोल नार च्यय न्यर्द्वन्दय ॥ चन्द्रम

वन वन सूती ओत केह न बनान  
सनान कोन केह च गाल दिहि अभिमान  
वजा वजा कन्य पतिय गोदा पोजा मन्दनय ॥



आत्म व्यचारि नावि क्यथ तार तर  
पान सान हर ज्ञान सोरुय चरा चर  
न्यगुण शेवय पान गछि व्यन्दनुय ॥

चन्द्रम

न्यर्मल व्यग्यान समन्दर सुय  
सत गुर सय शरण गछ प्यत स्वर सय  
च्यथ बुद्ध मन प्रान तस पजि वन्दुनुय ॥

कृपा कर म्य भक्ति वत्सल कैवल  
मङ्गल कल्याण र व ही न्यशलल  
शीतल न्याय म्योन सोर गछि अन्दुनुय ॥

चन्द्रम

चानि आश वाल वाश बन्द बो कोर सो  
च्यदा काश युन गछुन त्रोव तोर सो  
स्वप्रकाश लोल छुम च्य आनन्द कन्दनुय ॥ च

स्वता न्यरविकल्प न्यर व्यकारय  
सदा अपरोक्ष अक्रय आधारय  
ही सदा शेव बोज तो गूव्यन्दुनुय ॥

चन्द्रम



## मन मंजु लिस

मन मंजु लिस मंजु सच्चिदानन्द लालो वे  
गूर गूर करयो गूव्यन्द गूपालो च्येय ॥



कर धियि मूहन रात दोह धिय ह्यालो म्य  
 लोल आव स्यठा शाम सोन्दरो यितो सालो वे  
 यित दित दशुन कर कृपा कृपालो म्य ॥ गूर  
 नित सूती म्य मत करत अवडालो म्य  
 राधा कृष्णय नल्य छन्य पोशि मालो च्यय  
 दीना नाथो कर दया दयालो म्य ॥ गूर  
 भहती मुक्ती दिधि जुव क्या गालो च्यय  
 तोता करान च्यान्यन भक्तियन कालो वे  
 लोल मस चोवथस कोर थस मोत वालो च्ये ॥ गूर  
 मस गोस कसु वन चव माला मालो वे  
 स्यद तफ गोमय अथि मठ जप मालो म्य  
 मन यर्पाय गोमय तर्पाय चय नलिय नालो म्ये ॥  
 आमुत बु हान छुस मोकल व नुह जालो म्य  
 तार दिम कीशिव भव सर कर बालो म्य  
 मन ह्यथ योरय छल करान बाल हालो म्य ॥ गूर  
 नचनावान छुम आकाश पातलो म्य  
 व्यचार वैराग चक्र अमिस गालो म्य  
 नतनो बनि केह खसन प्यठ जहालो म्य ॥ गूर  
 शर मन्द अति बीद कारनन ति जालो छय  
 शर मन्द ग्यवान बान क्याह अद जालो म्य  
 अजर अमर ज्ञान र व अकालो च्य ॥ गूर  
 छिय बीद ग्यवान अखण्ड वे मिसालो च्य  
 आंवांग मनस अगूचर ला जवालो च्य  
 परि पूर्ण छुवन मंज दीश कालो वे ॥ गूर



आधार न्यविकार सारि कुय रखि पालो च्य  
 वन्दयो दोन पादन बो कपालो च्य  
 सरस्वती राधि कायि चोन द्युत लोल प्यालो म्य ॥  
 वन तस गूढ्यन्दस यियि शुद्ध बोद्ध व्यशालो वे ॥



## जय जय कार

जय जय कार तिमन सन्त पुरुष  
 यिम बन्धेयि सम दृष्ट ॥

सृहम त्रावि जपि छोन सू  
 सास बद्य मंत्र जादू  
 पोरन न तस कर्यतन ति यष्ट ॥

यिम

यन्द्रय करान छिय कार  
 पनुन २ च म हार  
 स्वधर्म प्राव बनम भ्रष्ट ॥

यिम

सत च्यत आनन्द स्वभाव  
 न्यविकार चोनुय द्राव  
 सम च्य मंजु येष्ट अनिष्ट ॥

यिम

मऽरी प्रावो सहज भाव  
 कैवल कैवली भाव आव  
 आवागव नुक चोल कष्ट ॥

यिम



दयि कूप तस युस स्वरि न पान  
व्ययि गुरन हुन्द जुवो ज्ञान  
पापन हुन्द छुस अर्यष्ट ॥

यिम

सत व्यचार बारम्बार  
कर तो पूर दयी ओत सार  
ज्ञान बनि अज्ञान गछि नष्ट ॥

यिम

कर क्षन २ ब्रह्म अभ्यास  
दीश काल व्यव चोन न्यवास  
व्ययि व्ययि ओत करम दीह पुष्ट ॥

यिम

गूव्यन्द ज्ञान सोर हतो  
सम तायि अमृत न्यतो  
गूव्यन्द रुद सदा सन्तुष्ट ॥

यिम



## आत्म ध्यान दार

आत्म ध्यान दार दारनाये  
वासनाये चठ तो ॥

सत गोर छुम चोन साये

सखिय मूहनि लठ तो

कम पुरुष इत्य गयि जाये ॥

वास



खोच जुव मुह मायाये  
कम क्रध लूभ चठ तो  
वीरव ति पोर त्राहि त्राहे ॥

वास

दीश दीश फीऽर त्रशिनाये  
बऽड वीर च पथ हठ तो  
ज्यन मर नच लगिन क्राये ॥

वास

ल्यूख यियि कर्म लीखाये  
तथ जाह गछि न गठ तो  
त्राव वस २ बुह वाये ॥

वास

खोदी हुन्द पर्द छाये  
थोद तुल जठ पठ तो  
दय वृछ अद जायि जाये ॥

वास

समादी व्यथान आये  
सन्यव कोरुय न हठ तो  
छोड़ युत सु असी द्राये ॥

वास

सूहम बे परवाये  
सार्य संझूप चठ तो  
पोज वन्नस बरम वाये ॥

वास

सम अमृत पजि माये  
च्य करिथ ग्रठ ग्रठ तो  
अद छुय नमू नमाये ॥

वास

कल्य काल काल कायाये  
नियि त्राव याव यठ तो  
अष्ट स्यज त्यय बनन दाये ॥

वास



गूग्यन्दर अन्दर चाये

प्यठ गछिथ छय शिनि छट तो

चायि बे वायि गुफाये ॥

वास

वोंत कांह गुर कृपाये

नत वीरन ति नठ तो

शेव खोश उम पूजाये ॥

वास

गूग्यन्द यमि वुपाये

मुकली दिञा लठ लठ तो

पान ह्यथ शेव कुलि शाये ॥

वास



## यियि तनय सोन

यियि तनय सोन जर जरो

अन्नरीश्वरो हरो हो ॥

विज्ञान गण श्री शिव शङ्करो

कासि प्रेयम यम थरो हो

चोनुय म्य गङ्गा जटा दरी ॥

अमरी

अद्वयत अमृत चाव अमरो

अथि च्यय अभय त वरो हो

अमर बनाव वर अजरो ॥

अमरी



स्वयं प्रकाश च्यन मातरो

अवांग मनस अगूचरो हो

अस्ति बांति प्रयि रूप च्य ज़र ज़रो ॥

अमरी

सूख लोकचार बुझा क्या करो

गोमो यावुन भरो हो

कृपा कर तम श्री सत गुरो ॥

अमरी

ज्ञान चरन कमल चाञ्च न्यथ स्वरो

वसान लोल ओश जरो हो

सोज़ आम रोज़ बोज़ तम आरचरो ॥

अमरी

अन्दरी पानस छुम यी शरो

करो जिन्दय मरो हो

कड़ तम शर म्य ही आश्चरो ॥

अमरी

वर कर शक्ती पात नज़रो

अनज्ञान छुस दर बदरो हो

दया करतम दया सागरो ॥

अमरी

गम सार्य कास्तम दिगम्बरो

आमुत छुस जगत अरो हो

म्य रछ रछ बनि परमेश्वरो ॥

अमरी

गूव्यन्द पान स्वर त्राव अरसरो

चठ वासनाये परो हो

अद फेरखना गर पत गरो ॥

अमरी





## भगवानो गयि च्यानि

भगवानो गयि च्यानि म्य जान  
हान चीजमो म्य सऽरय ॥

सोर दय जोन तम्य पान सान

ममुता यम्य मऽरय

त्रशवय ताफ तस शेह लान ॥

हान

वीद यति पंथन लगान

कांह पनुन तति न गरय

प्यव हरतस यूग गन्यान ॥

हान

शिनिहय सोवायि शुभान

तति शुद्ध बुद्ध ति चारय

तिफालि नादान बनन छु व्यदवान ॥

हान

सलिख मलिख सपवान

पलिख त चाक वऽरय

दीबता ह्यथ छिस डोलान ॥

हान

अष्ट स्यज पत पत लारान

चोन लोल तस धारय

स्योद प्रोद जाह छु न बुछान ॥

जीवन मुक्ती बगि खसान

सम दृष्टि सङ्कि सारय

करान प्रारब्द गुर्घ्य दोरवान ॥

हान



हर मुख शेवय छि जानान  
कंसि सूत्य थवन न वारय  
तिमनय छिय बनान मस्तान ॥

हान

पान वारे यिम प्रज्जनावान  
दद्य तिमन पाप बारय  
तिमय सदा सन्तुष्ट रोज्ञान ॥

हान

गूढ्यन्द द्राघ च्यति अरमान  
तर नस कांह न तारय  
न्यस्त्रय गोनी शिव चोन पान ॥

हान



## दिह दोह आवुय

दिह दोह आवुय सोरनय  
क्या वुनिति छुखना मोरनय ॥

सूरुय लोकचार जर जरय  
गोयना हतो यावुन बरय  
कुन बुछत पनन्यन जोरनय ॥

कसरे न जाह करुथ यलाज  
पानस च्य नाहकय खोरुथ रिवाज  
पजि जायि कति छुय फोरनय ॥

क.



क्या गोय च्य नोव २ बंद करन  
प्रोन कोरनुत छुखन स्वरन  
पत्य मुय वुनि छुखन होरनय ॥

क.

त्रावुन प्यायि दम कपठ  
आशि पाशि वासनाय चठ  
बोज मो वनुन सोन वोरनय ॥

चिकचाव कथ प्यठ सऽ बरुन  
कऽत्य काल अखर छुय मरुन  
स्वर पान पनुनय फोरनय ॥

क.

संसार हो जलरिजाल  
बोन मो च यियि काल  
पानय जलरि पान मोरनय ॥

क.

यमि नो स्वर योत यिथ यि पान  
मुय जन्म २ छुय नचान  
खर बन्य २ बोर सोरनय ॥

संसार सोकल ह्य स्वप्ना  
सुख पाया जिसने जाना  
न्यथ अन्यथ तम्य व्यचोरनय ॥

क.

न्यवरी ओतय वनम वाज  
दुय चख हसद मल नाग पाज  
पोज यम्य पान वटि खोरनय ॥

क.



बाल पान पानय गोय सरय

भवसरय चयय जर जरय

गोविन्दन पान तोरनय ॥

ब.



## यीच ह्यकख तीच

यीच ह्यकख तीच शोद्धी

करत बुद्धी हा जुवो ॥

प्रजन छम लोल नदी

वजन ओमा जुवो

न माह चयय गयि स्यदी ॥

कर

कॅह नो बनि वद्धि वदी

काल टाठ काया जुवो

चल्य ह्यथ ति लरि लथ लदी ॥

कर

संकल्प कर्यजि रघी

बुछ तमाशा जुवो

चोन सरुरे स मद्यी ॥ कर

छाड़ान यस छयन्य पद्यी

सुय चय अमा जुवो

चमान वनि यिञा कदी ॥



दय दिधि तार छय स्यदी

छव यियस, दया जुवो

अमन कर्य कम गदी ॥

कर

आत्म ज्ञानी छि थदी

तिम नस्य नमा जुवो

कांसि हंज न तिमन बदी ॥

कर

शोदी बनि जल खोदी

त्राव तो गोय क्या जुवो

प्रावुन सररि अदबी ॥

कर

गूव्यन्द वीदच यि व्यदी

सुय चोन आत्मां जुवो

लोल नारय अस्थ हा ददी ॥



## लोल नार हुयव

लोल नार ह्युव तेज न कांह नार

तमि सूत्य जिगर बुजुम

यार प्योम बे आर व्यसिये

वार नय वन नस छुम ॥



पान सान शिव सोर जोनुम

आनन्द अमृत चोम

प्रथ वखतय सूहम सू

बोलान छिम रुम रुम

मज रुत क्याह दज दजस

बाकय कांह रुजम न कोम ॥

यार

मुकल्योस भ्रम निशे

तति थय यामत कनन गोम

युस म्य छज्याव सुय बोय

वीदुक भजन यि डुम डुम

जोन पूर्ण पान पननुय

युन गछुन मोक ल्योम ॥ यार

सुय बुय छुस आवाहन

नारायनस करियोम

ज्ञान अंगनस मंज दिहि

अभिमान ग्यव हुमुम

श्रेह चे रेहह हन हन मन

जन मुबक कोफूर दोजुम ॥

शोर बन्दर चायि अन्दर

रुत मन्दर डेव्योम

शुकल सोन्दर शेव नाथय

जाल रोट परान उोम

व्यगन्यान भास्कर सु शंकर

अज्ञान शीन गाज्योम ॥

यार



ओम गूव्यन्द गूव्यन्द ओम  
हम गोल त ताफ शेह ल्योम  
च त बू तय हु त यी तय  
गव सोर जगत गुम  
श्रोक्ता वक्ता सु पानय  
कस वन क्याह बन्योम ॥ यार



## कह्यताम २ मनि

कह्यताम २ मनि दुय चजिम  
फोजिम व्यचार बागस ही ॥

प्राण चि कुकिल बोलनि लजिम  
सूहम सू वुञा कथ जागस  
सू सोन जुव जोन जाह बुद्ध न डजिम ॥ फो

तफ जफ करान हन हन गजिम  
च्यथ बोद मन प्राण बो लागस  
पुजि तस लायख वोञा क्रय तजिम ॥ फो

व्यवीक तवीर अभिमान वीर थजिम  
ज्ञान नार जाज्य तफ मुह मागस  
अज्ञान तर चज समता वजिम ॥ फो



क्या वन वजि वजि ताल ज्यव म्य फोजिम  
ग्यवान म्य आत्मा आगस  
वीद गूव्यन्दस द्वयत बुद्ध चजिम ॥ फो



## ईश्वर गर सोनुय

ईश्वर गर सोनुय यित  
दर्शुनवित मोकलव अस्य ॥  
अमृत दर्शुन दित नित  
चानि खऽतर प्यवान अस्य वस्य २  
अछय लोस वतन वुछित ॥ दर्शुन  
बनि मनि सोख सन मोख यित  
दुख मिटि सर्व शक्ति सस्यति  
बनव अस्य गहव न छित ॥ दर्शुन  
याबुन कलि काल दोदरित  
मंगान अस्य न लरि जायि हस्य  
ससि दर्शुन हाव कुजि होत ॥ दर्शुन  
त्राव वस वस हम त यित  
युस चोन जुव वजि वन तस्य  
गूव्यन्द हा ब्रह्म दित ॥ दर्शुन





## समतायि अमृत च्यथ

समतायि अमृत च्यथ जिन्द मर्यजे  
श्रेह सान सोर्यजे सुहम सू ॥

पननिस स्वधर्मस प्यठ धर्यजे

परधर्म त्राव नरुक छुय

थोद वोथ ज्ञान न्यथर मुचरजे ॥

श्रेह

वैराग विवीक वीर ह्यथ चर्यजे

सत संग सनतूष सम काबू

चलन यंदर्यये चूरन फरिजे ॥

श्रेह

करनस न करनस वुछना कर्यजे

और कुछना कर्यजे प्यारो तू

गन्यान सोथ वनि भवसर तर्यजे ॥

श्रेह

वीद ति छिय बनान कॅह न व्यसर्यजे

कर पान सर च्य सुय हूँ ब हूँ

पान पाव च्यतस जाह न मशिरजे ॥

श्रेह

पान सान सोर शिव मनि यी मर्यजे

छुय बनान च्य सतगुर परम प्रभू

परमात्म ध्यान क्षन क्षन दर्यजे ॥

श्रेह

सत च्यथ आनन्द आत्मा र्जयजे

साक्षी दृष्टा न्यति शुद्ध शम्बू

जव पनुन सुय ज्ञान दिहि अध्यास खर्यजे ॥



ओम तथसत न्यथ प्रभात पर्यजे

गूढ्यन्द सोरिजे गूढ्यन्द गू

मद रसित्यन सूत्य द्यनत रात बर्यजे ॥

श्रेह



## हे निःकर्जन दीजे दर्शन

हे निःकर्जन दीजे दर्शन, कीजिये कृपा अब मुझे ।  
इन्तजारी कर रहा हूं, आईए इस शब मुझे ॥  
टिक टिको बांधे पड़ा, देखता हूं राह को ।  
गश है पड़ी मेरे दिल को ताब। नहीं कुछ अब मुझे ॥  
क्या कसूर हम ने किया है, दूर रहता हम से क्यों  
हो गया भी हो अगर कुछ, माफ कीजे सब मुझे ॥  
क्यों दया तुमको न आती, हम को क्या रोना ही है ।  
आंसू आंखों से है जारी खुष्क दोनों लब मुझे ॥  
क्यों जुदा हम से तू रहता, रहम हम पर तू करो ।  
तेरी फुरकत ने जलाया, यह हुवा गजब मुझे ॥  
दिल की मेरी बेकरारी तब मिटेगी जी जरूर ।  
शुब दर्शन तू कृपालो देवेंगे जब मुझे ॥  
प्रेम के अग्न से सीना हुवा बिरयान है ।  
हो गया गूढ्यन्द बेताब कर नजर यारब मुझे ॥





## अरे प्यारो करो व्यचार

अरे प्यारो करो व्यचार सकल समसार स्वप्ना है ।  
सिवा ईश्वर के प्यारो, यहां कोई न अपना है ॥  
उठो हुशियार हो जावो  
सभी गलफत को मिटावो  
लगावो ईश से मन को  
अगर कैवल की चाहना है ॥  
मनुष्य दिह को भी पाकर  
सुरे न आपको जो नर  
नरक का डर उसी को है  
नरक में उस को तपना है ॥  
न रहती हश मतो दौबलत  
हकूमत और नाहिकमत  
तू गफलत क्यों करता है  
यह फानी कारखाना है ॥  
सब विशयो से मन को मोड़  
हिरन की तरह तुम मत दोड़  
तृष्णा छोड़ यह दुनिया  
सुराबे के समाना है ॥  
तुम दो ब्रा इससे मत खावो  
करो सोच असलियत पावो  
जगावो जलद अपने को  
गनीमत यह जमाना है ॥



यह काया जल जायेगी  
न माया साथ आयेगी  
न माई बाप पुत्र भाई  
धर्म एक साथ जाना है ॥

हरि का नाम दिल से जाप  
मिटेंगे तुम को तीनों ताप  
मिटेंगे पाप तब सारे  
अगर सुख तुझ को पाना है ॥

यह दिह जो काल का हैं ग्रास  
इस पर रखना क्या विश्वास  
सभी बसवास का सन्यास  
करो अखिर को मरना है ॥

गूढ्यन्दा तू हुआ हुशियार  
है बालक खेल बत संसार  
तेरे दिल ने किया करार  
सब संसार पछाना है ॥



हाव दर्शुन अकाल काल

हाव दर्शुन अकाल काल कलिकाल  
कालकि काल काल सम हारय ॥



नाल छुस दिवान प्रज्ञान जन नाल  
नाल मति रटहथ गंगा दारय  
नाल थफ दिमहय वुछ हथ तय लाल ॥ क

भाव हय गोस गेम यितम कृपाल  
हान आमृत बो मंज व्यवहारय  
विजगत पाल सोन यित यमि साल साल ॥ क

आमस निशि डोल मुत छुस मोत बाल  
दोदमुत छुस चानि लोल नारय  
छन २ च्य रोस कोड़ कमि कशाल ॥ क

बहुना छव नेरि मंज हसा फाल  
कर यियि यमुन्द छुम खारय  
तिहुन्द दुय्यर तोताजा किथ चाल ॥

दया अदीनन दीन दयाल  
कर वर बोज तम जार पारय  
बेकस प्योमुत छुस बो कमि हाल ॥  
अनुग्रह यस चोन सू कति सा जाल  
मूह ने बन्द गछि समसारय  
चव दाम तम्य व्यचार अमृत प्याल ॥ क

ही शंकर आश्चर क्याकर जाल  
यम थर कमथ बाल पारय  
वन्दयो पादन च्यान्यन कपाल ॥ क

चोन ध्यान सन्योव बन्योव मन आल  
म्योन लोल च्यानि न्यर विकारय  
च्यय वुछान चोपर्य चानि ख्याल ॥ क



प्रारान गूढ्यन्द ह्यथ प्रेम पोशिमाल  
भक्ति वतसल केवल अपारय  
सन्मुख प्रिस दिस डाल रटो नाल ॥

काल



## रछि वजे लछि

रछि वजे लछि नावे  
वछि २ दिजा हो चलिम ॥

सत च्यथ आनन्द अपारय न्यविकारय जय २  
न्यर मुक्त केवल सारय अपारय जय जय ।

अजर अमर दये न्यमये जय जय ।  
न्यरद्वदय मृत्यजये न्यर मये जय जय ॥

अवांग मनस अगूचरय आश्चरय जय जय ।  
अक्रयये च्यन मातरय दिगम्बरय जय जय ॥

वनि हनि २ दय हो यिवो मनि दुय दूरय करिव  
सजा वोगनि छारुन नो ब्रोठ कनि छु पान सीख

युस ,म्य छांज्याव म्य निशे द्राव आरम आम मनस  
छुप न कलाम सुब न शाम तोर अभाव रात छनस ।

वद्य २ गित्य हो गयाम पद्य छन्याम छयि  
न्यश बोद स्यद त सादय अस्य हा लोल न चनि तयि ।



मार मति मार कोरथस लऽकचार लोल नार दद्य ।  
 भार बूक आय बार सोन बोज छयन्यायि छाड़ि २ पद्य ।  
 छायि गित्यन ब्रथ्य गछान बुट २ मन छुम करान ।  
 सत गोर च्य ह्युव नस कांह छुस बुछ नय पशान ।  
 विज्ञान र व ही कीशव छव सोनुय आय आर  
 यव तव भव सरस गव गूव्यन्दय पार ॥



## ही सदा शिव सीव

ही सदा शिव सीव चान्य पाद  
 दद्य म्य अपराद च्य जय जय ॥

सत च्यथ आनन्द न्यर्मल अगाध  
 कैवल च च्यन मययी  
 सादन हुन्द च्य छुव साद ॥ दद्य

शिव चीन जुव गाल प्रमाध  
 बुछ च्य मुय मुयी  
 सम भाव प्रोव यिमव तिमय साद ॥ दद्य

पननुय कर स्वरूप याद  
 कर वासनाये छययी  
 सत गोर वाक्यन होजि दाध ॥ दद्य



न्यमधान सत्य कर्त्यजि सम्वाद

बर दोह त राथ चलि रवयो

स्वर महा वाक्य छु दयो नाद ॥

दद्य

त्रशना मोमता बड वोपाद

त्राव चय पानय दयो

वासनीय हिश कांह न व्याद ॥

दद्य

जोन यिमव पान तिमन रुद्य शाद

चोख विज्ञान मयीयो

वृत्त या गृहस्त सू साध ॥

दद्य

यिन गछनुक मोकत्योव म्याद

चोल मर मर वहा वही

असि मंज न अन्त अन्त मद्य आद ॥

दद्य

व्यथानय आयि समाध

गुव्यन्द चति न्यर भयि

स्वर थन शिव कोरनय प्रसाद ॥

दद्य



सर्व शक्तिमान कृपा

सर्व शक्ति मान कृपा निदानो

विज्ञान र व शिव बड़ि भगवानो ॥



वर वोत वाद पाल ज्याद नस पजि

च्य बगर काह छुम न लजि वति बोज पजि

शरणे आसय छुस बो प्रारानो ॥

शक्ति पात नजर कर वर अख कटाक्षा

भक्ति वत्सल न्यर्मल कम गछि च्य क्याह

पूजायि लागय दिह अभिमानो ॥ नि

न्यगुण सगुण च्य दुशवय हो

अस्ति बांति प्रिय रूप हा च्य ब लगयो

भक्तयन मुक्ती बनि च्यानि ध्यानो ॥ वि

यस प्यठ दया च्यनि तस नो काह गम

तस यम करान तोता यस चोन प्रेयम

त्रेशवय दुख चलन बनि कल्यानो ॥ वि

चोन छुम प्रेयम स्वयं प्रकाशो

हम गम कास तम च्यदा काशो

चोन क्षन क्षन ध्यान छुस धारानो ॥ वि

गीत चोन ह्यकि कुस ग्यविथ तीथ च गुणनय

अवांग मनस अगूचर वीद वननय

साद सतजन ख्यथ गयि अरमानो ॥

चय सृष्टि थ्यत समहारय करान

दोश काल रोस्त ग्यवान च्य वीद तय पोरान

आश्चर च सोन जुव छुख शुभानो ॥ वि

च्य नंज अनन्त ब्रह्मा विष्णु रोदर

फोक डूडा ही योरान च्य ज्ञान सोदर

सत च्यथ आनन्द छिय वीद ग्यवानो ॥ वि



ओमकार स्वरूप अनूप केवल

आज्ञान दादि बल पूजि व्यचार ब्यल

कर शेव शंकर तन मन प्राणो ॥

वि

आव जाव भ्रम संसार सोर मशराव

भक्ति गूव्यन्द ज्ञान यूग अथि आव

आप सहित सर्व को शिव जानो ॥

वि



दयो च्योन दर्शुन म्य

दयो च्योन दर्शुन म्य गोछ

योछ अज ताज वुज हावतम ॥

समसारस ओनथस गोछ

समतायि अमृत चाव तम

पननि तरफ चुत तन मन ति कोछ ॥

वासनायि म्यानि कड़ डम्बि लंछ

अत गत निश मोकलाव तम

दजि लाग तस ज्ञान नार कोछ ॥ योछ

जल कुनय तरंग तय पोछ

तरंग नाव नहाव नावतम

च्य चय सोरुय असि योछ ॥

योछ



वीद काम दीन बनाव म्य वोछ  
विज्ञान द्वोद व्यठ रावतम  
अधोन गूव्यन्द स्यठा ओछ ॥ योछ



## लोल नार म्य

लोल नार म्य सीन जोलुथ  
कोन पोलूथ वाद ताय ॥

जान छुन गछुन यि गोलुथ  
वाद कम पजि न ज्याद ताय  
क्या बन्योख युत दोर चोलुथ ॥

को०

मरव हो नख न बोलुथ  
वाद अस्य स्यद साद ताय  
यिन डालख किन डोलुथ ॥

कोन

छुय यि गूव्यन्द कोन पोलुथ  
बे कस उफ ताद ताय  
रछधतन क्याजि चोलुथ ॥





## दय सोरुय रफ ताय

दय सोरुय रफ ताय नाव नहावनाव  
प्राव सहज भाव भाव बडराव ॥

पायस प्यत होशस आजाव जाव  
मोक लाव ज्योन मरुन मर २ ताव  
हाव भाव रूप नाव नाव सय अभाव भाव ॥

सन्तूषुक तोन्दरय च तपाव पाव  
पान याद थाव ज्ञान चोट पाक नाव  
आव जाव ची बोछि चलि मथ दिखाव खाव ॥

अपज्युक छुन त्रविथ चक चाव चाव  
चाव मनि वोछ वीदच गाव बनाव  
विज्ञान द्वोद सृत्य मस बन नाव नाव ॥ प्रा०

सुधर्मस प्यठ मर भ्रम मिटाव टाव  
तुल्यतन ति मुखं मुखन यि स्वभाव  
व्यचार कुलि मुखन हुन्द स्वभाव भाव ॥ प्रा०

शम दम वैराग मन शोमराव राव  
त मत पान हतस मोकलाव  
प्यत स्वरस छुय न अख हवाव दाव ॥ प्रा०

द्वाद शान्त मण्डलस युस वाचाव चाव  
वथ शीरथ ह्योरि बोन नचाव  
खोत रटिथ सु हवाव हवाव वाव ॥ प्रा०



व्यचार देगि विज्ञान अन पकाव काव

लूबक टाव टाव करि न तस ह्याव

रुत द्राव वार अन्न अथ वुछ छाव छाव ॥

प्रा०

ज्ञान जल सूत्य वार तन मन नाव नाव

न्यर्मलस मंजु चाञ्च पान म मशराव

गुव्यन्दम मन मंजु शान्ति त लाव लाव ॥ प्रा०



## शिव जुव ज्ञान पनुन

शिव जुव ज्ञान पनुन कर च्यथ ईकागरत

व्ययि केह मत करत जिद भरत दित समाध ॥

असति बांति प्रयि रफ पान चोन सर बसरत

आश्चरत च्यन मातरे त न्यर्मल अगाध

वांग मनस गुचर अवांग मनस गुचरत ॥

व्ययि

ज्ञान पान हथ सथ च्य शिव जरह जूरत

करत दूर मनि दुय हसद गाल प्रमाध

विज्ञान सागर च अमर त अजरत ॥

कोरुमत क्रोवनुत सोर मुत च मशरत

मुचरत ज्ञान व्यथर करत पान याद

करनस न करनस वुछना ओत करत ।

सूत्य संतन न्यम छन २ रात भरत

भरत लोल ६त्य मन सीव तिहन्द पाद

अमर पान हावनय चलो यम थरत ॥



वुछ व्यचार सुय वुय गोख कथ दरबदरत  
अन्दर त न्यबर त छारान दिवान नाद  
कस चय मति कति यियि अथि पान स्वरत ॥

दम दम हाथ न्यथ ओम ओम परत  
मरत मनि ओम चलि ज्यन मरनचो व्याध  
मरत जिन्द त्यलि छु पोज़ त्राव वनुन चरत ॥

कुस जानि तस गूव्यन्द छु पोज़ परत  
न्यविकार सारि कुय योहय छु बुनियाद  
गूव्यन्द अति वीद सन्त ह्यथ गयि शरत ॥



## तार छन भव दियि

तार छन भव दियि तार  
व्यचार तो ओमकार जुवो ॥

सोमि कथ कर सौम व्यवहार  
सोम शोंग सोम हुशियार जुवो  
रोज़ सोम करिजि आहार ॥

व्यचार

ओम कारय व्यचार छुय सार  
प्रथ सात बारम्बार जुवो  
शम यियि करि पारम्पार ॥

व्य०



वासना त्राव आसन दार

श्वासन हस बाल खार जुवो

सूहम सू सूत्य वुशचार ॥

व्य

ईकान्त त शान्त बन मन मार

करख साक्षात कार जुवो

ज्यन मरन निशि बनी मोकजार ॥

व्यचा

सत गोर कृपा अच बकार

अनि गट कासि यख बार जुवो

यियि गाश छटि पक नस बार ॥

व्य

ब्रू मधि मंज वतिथ प्रार

अद द्वाद शान्तस लार जुवो

ब्रू मधि मंज खस कर करार ॥

व्यचा

जिन्द मरत छुय नमस्कार

च्यत सम अमृत दार जुवो

वशिना फुटी फेरि शेहजार ॥

व्यच

रुत क्या प्रेयनुक सबजार

गूव्यन्द कर नजार जुवो

शेवय चोपेर कति समसार ॥

व्यच





## गफलत से उठ ज्ञान

गफलत से उठ ज्ञान दीप को जलाव  
पुशराव दयस पानय जुवो ॥

मन से सब संकल्प हटाव

जिन्द मर कर दय जानय जुवो

कोरमुत क्रोवमुत स्वरमुत मशराव ॥

पुश०

आहिस्ता त्रिकूटी पर चड़ाव

प्राण सूहम सू रानय जुवो

रटिथ दिस माल प्रमादय त्राव ॥

पुश०

मन जीथ मन पर आज्ञा चलाव

वासनायि गाल छन जानय जुवो

वासनायि पक्षोयन हंज पख फुटराव ॥

सच्चदानन्द है जिसका स्वभाव

दुयी त्राव सुय भगवानय जुवो

चय छुव व्यचार कर पान याद पाव ॥

जीना मरना भ्रम है आव जाव

धारनायि धार आत्म ध्यानय जुवो

तरख च मरि प्राव सर्व आत्म भाव ॥

पुश०

याद कर स्वरूप भ्रम को मिटा

सब का आधिष्ठानय जुवो

हाव भाव द्राव केवल रूप तय नाव ॥ पुश०



सतगोर चरणो में मन लगाव  
 वन्द तस तन मन प्राणय जुवो  
 गूढ्यन्द त्यलि छुय नो च्य कांह वाव ॥

पुश०



## पत च्य मारान

पत च्य मारान गत च्य पाम्पूर  
 सूर गोम पानस वलो वलो ॥

यित दित दशुंन ओस तो दस्तूर  
 यिख न चठ जाम सूर मलो मलो

बोठ लायि मार पान कर कुञ्ज छार क्रूर ॥

सूर

मार मटि खसी चार कर जरूर

आर यिथि नय भक्ति वत्सला सलो

शक्ति पान नजर कर च ज्ञान सदूर ॥

सूर

चामर दुप दीप आलवय कोफूर

गोड दिमय अशि के जलो जलो

जटि गङ्गा हटि वालिथ विहूर ॥

सूर

विज्ञान भास्कर शंकर त्राव नूर

वटन आमुत पम्पोश फलो फलो

हाव मऽख दऽख कास अज्ञान अवूर ॥

सूर



चानि लोल दऽख बोथ मत रोजतम दूर  
 हाव तम दशुन बलो बलो  
 भर गव यावुन लोऽचार वुञ्ज सूर ॥ सूर  
 कल्यान र वु शेव कर तम मंजूर  
 शीनकि पाठय विगलो गलो  
 चानि ध्यान सूत्य प्राव अब्दी सरूर ॥ सू  
 मारि युस मनस तस्य दपान बोहदूर  
 मारि ते तिमन गलो गलो  
 मारुन सू क्याह ीजय स्यठाह कूर ॥ सूर  
 गूव्यन्द कुलिस न्यत प्रयमुक व्यूर  
 प्रारान भवसर डलो डलो  
 यित सुवह शाम म्य बनिथ पम्पूर ॥ सूर



## विज्ञानुक सुमन्दर सु

विज्ञानुक सुमन्दर सु शङ्कर हा टाठे  
 आश्चर अजर अमर परम इश्वर हाटाठे ॥  
 भी मज्य सरस्वती शरमन्द रुज अती  
 करान अस्तुती वीदन ति हा हा हा टाठे ॥  
 यति वीद तस पुराणय कारन ति हारान  
 अमि हाल क्या करानय असि हि नर हाटाठे ॥



कस ताकत यिहुन्द गीत ग्यवि यिम छि गुणा तीत  
हीथ करिथ वनन सोन पनुन बजर हा टाठे ॥

कर सना म्य यियम शुभ दर्शुन सु दियम  
नियम सूत्य पानस नेरियम शर हाटाठे ॥

रेह गंडनम लशे जाह माथ तिहंज न मशे  
जाम तन सूत्य अशे गयम तर हा टाठे ॥

वनतस म्योन बोजि नाद कांछा सुसोजि नाद  
रोजिना कन दरिथ बोजि अर चर हा टाठे ॥

छुकस कर म्य बुलगार ब्ययि यियम पनुन यार  
बल यख दम ब बेमार वैद सतगोर हा टाठे ॥

अशि कनि खून ब हारस प्रछिनय म्य बेमारस  
मारस नत पानय छयम जहर हा टाठे ॥

यू कोता सु बे आर खुश छुसां करुन मार  
अशिस म्य लजिम दार गोस न असर हा टाठे ॥

आर कोन छुस यिवान दर्शुन कोन दिवान  
रिवान छुस ब अमी करितन नजर हा टाठे ॥

कोर नस तम्य ब बेताब सुज्य तन खतया जवाब  
ओस बोड़ लाभ ती म्य छुस दर बदर हा टाठे ॥

सोनय गयि म्य पारय न्यविकार यारय  
दारय अथ स्यठाह तेज लोल खंजर हा टाठे ॥

लोल नार सूत्य जलिन शीनय पठय गलिन  
बलिन जोयि जोयि म्यूल सागरस हा टाठे ॥

यारि लूक ना ब मंगान परि लूक ना निरवानय  
भक्ति दान कोवल दियितन वर हा टाठे ॥



मारन कथ वज्र छोह सोरान आयि दोह दोह  
हारस सपद्यव पोह यिनि लोग बुजर हा टाठे ॥

माज्य जनिम सुगणय मोल जोन न्यगुणय  
अरपनय ब दोश्वुजा छुम आसर हा टाठे ॥

गूढ्यन्द कथ च रिवन यिम खस्य कृत्य छि चवन  
ग्यवन छुख स्यठाह मीठ लोल च लहर हा टाठे ॥  
विज्ञानकृय समन्दर सु शंकर हा टाठे ॥



## शरमन्द वीर ति रुद्य

शर मन्द वीर ति रुद्य मन्ज मायाये मज मायाये  
परान छि त्राहि त्राहे लोलो त्राहे लोलो ॥

काल शाह सूत्य वजिरन मारन प्राये मारन प्राये  
सुय पगाह गदा गदाये लोलो दाये लोलो  
नेरन फरन ड्यूठ वोन ड्यूठ वोन नाये ॥ परान  
पाद यस आस मलन हूर तय दाये हूर तय दाये  
सुय पगाह फेरन ताप क्राये लोलो क्राये लोलो  
खोर नन वोरुय करान वुह्य वाये करान वुह्यव वाये ॥

क्याह कम गछी अथ चानि बार गाये चानि बार गाये  
ईश्वर गोर थवि साये लोलो साये लोलो  
अस्य शरन दोहय तोहि आये तोही आये ॥ परान



मार कर्ष त्रशनायि व्ययि आशाये व्ययि आशाये  
बडय बडय वोर वासनाये लोलो नाये लोलो  
दः ॥ द्युत स्थठा यमि मोमताये यमि ममताये ॥

साद सथ जन खुश सुत्य समताये सत्य समताये  
शान्ती ति विद्याये लोलो विद्याये लोलो  
पान सान शिव जोनुख जायि जाये जोनुख जायि जाये ॥

बया भरुस अपिजि प्यठ यथ कायाये यथ कायाये  
कलि काल काल करि जाये लोलो जाये लोलो  
खयि कांह नत होचि दजि कुनि शाये दजि कुन शाये ॥

ईश्वर गोर कर सोन उपाये सोन वोपाये  
सायि त्राव बेपरवाये लोलो बाये लोलो  
गूव्यन्द हायि जायि गछम पननि छाये पननि छाये ॥ परान



## परम ब्रह्म ईश्वर

परम ब्रह्म ईश्वर नमू नमा  
क्षमा कर क्षमा कर क्षमा कर क्षमा ॥

यत्तम स नितम म्य दितम दशुन  
दया कर दया कर दया कर दया  
अस्य तन मन धन च्य अरपन करव  
कृपा कर कृपा कर कृपा कर कृपा ॥



छि प्रारान यि लारान चय ओरय

सदा कर सदा कर सदा कर सदा

छि शरमन्द आनन्द कन्ध च बोज

वफा कर वुफा कर वुफा कर वुफा ॥

च सन्मुख यि मुख दि दःख सोनुय

दफा कर दफा कर दफा कर दफा

म्य चोन यूग रुग कासि ती छुम दवा

शफा कर शफा कर शफा कर शफा ॥

अच्यथ च्यथ बनाव तम म्य मन तयबोध

सफा कर सफा कर सफा कर सफा

छु गूव्यन्द ारान च नारान वर

यछा कर यछा कर यछा कर यछा ॥



## दयस पानय च पुशराव

दयस पानय च पुशराव यि दिह मशराव देखो

ननी तस युस अन्दर चाव अजब भक्ति भाव देखो ॥

फोलुय होश पोशि कुल च तोशान कोन बुल बुल

ब रोशन छुस न बिलकुल बहार हो आव देखो ॥

म्य हो गरि खाते गरे फली गुल लोल थरे

भरी मंज मनि छरे करुम अज काव देखो ॥



सौम्वर्य पोश छत्य वोजली ब आसय ह्यथ च्य डाली  
म्य मोकड़ अज च खाली चमो कर गाव देखो ।

अजयब लोल सब्जार वुछन सूत्य बलि बेमार  
यि बोलान जानावार तम्मना द्राव देखो ॥

अलान छय पोशि लंजे च ब्यह दिथ लंजि पंजे  
वुछान छुस ब प्यठ प्यंजे यिमय पोश लाव देखो ॥

भरी रस मस प्यालय यितम सालय च लालय  
ब प्रारान कमि हालय मलालय त्राव देखो ॥

गुव्यन्द यस ओस छारान यस कित्य पोश चारान  
च्यतस प्योस ध्यान धारान तस म्योन नाव देखो ॥



## म्य मन बोर भक्ति

म्य मन बोर भक्ति भावय, च म्योन विश्वास देखो ।

च्य प्ययिनय पास सोनुय, शरन च्य आस देखो ॥

म्य नो परवाय केह गम, अगर गेल्यम ति आलम ।

फकथ च्य स्योद म्य वुछ तम, शरन च्य आस देखो ॥

म्य च्य पान पुशरोवुय, यि समसार मशरोवुय

यि मन अमृत चोवुय, चोलुम तलवास देखो ॥

कुस मरि कस मारि हो यम, म्य जोनुय ज्योन मरुन भ्रम

म्य चोन स्यठाह छु प्रेयम, गत्यम यम त्रास देखो ॥



शरम क्या पजि कथे म्य, छारुन खोतुम रथे म्य  
छरिथ आख अथे म्य लोबूम जन तास देखो ॥

चव म्ये समरसय, बनी मद होश मसय  
यि संसार मोठ तसय, कोरुख अथ वास देखो ॥

अमां केह छुम न व्यचान, ब रोस च्य केह न मुचान  
अन्दर अन्दरी बो न चान, कोरुम अभ्यास देखो ॥  
तोरुम पानय सोरम ओम, बन्योसय मसत बेगम  
वुछुम करान सूहम, श्वास वश्वास देशो ॥

गूव्यन्दस द्राव अरमान अमी च्ये मटि कोर पान  
बनेययस च्यानि ज्ञान, आस व्यकास देखो ॥



## कसर म्याज कर

कसर म्याज कर दफा दीवी  
म्य प्यठ कर अज कृपा दीवी ॥

ब च्यय पथ कर तन मन धन  
अर्पण च्यय न्यूथम मन  
तना अथ्य मंज नफा दीवी ॥

म्य प्यठ

च्य छुयना कांह ति वनन म्योन  
म्य छुम लोल चोन यित सोन  
वनय नोव प्रोन जफा दीवी ॥

म्य प्यठ



म्य बेमारस कर नजर  
म्य समयिकि जोश खोतमुत जर  
यम्य दादिस कर शफा दीवी ॥

म्य प्यठ

म्य चय कुन रात्र द्यन मन  
वुथन बेहन ह्यवन चवन  
करुन चोनुय जफा दीवी ॥

म्य प्यठ

जुन चमकन सास बद्य चन्दरम  
यि मुख चोन कास बुन हय गम  
म्य शम दम कर दया दीवी ॥

म्य प्यठ

च बोझ म्याञा नाल रठ नालय  
यिमय बाय या नितम सालय  
बो मोत वालय हपा दीवी ॥

म्य प्यठ

म्य गूव्यन्दस शुद्ध बुद्ध मन  
कर च्यथ शीतल चन्द्रम जन  
च्य व्यन कांह नय सफा दीवी ॥



बरिथ प्रय करतो

बरिथ प्रय करतो क्रय  
वुछतो गरि चानि दय ॥



|                              |       |
|------------------------------|-------|
| बोनुय छरिथ छयनख              |       |
| पतो पान ती ब नख              |       |
| म्य क्या कोर यि हय हय ॥      | बुछतो |
| यस छारान सु चययी             |       |
| फकत कास च दुयई               |       |
| नेरी शर चली भय ॥             | बुछतो |
| सर्व जीव दीव कारणय           |       |
| यसुन्द ध्यान दारनय           |       |
| करानन छुय जय जय              | बुछतो |
| पुशराव तस कुनिस पान          |       |
| नेरी अद च्य अरमान            |       |
| मशराव ज्यन मरनुक भय ॥        | बुछतो |
| त्रावख यलि दिह अभिमान        |       |
| बनि त्यलि तसन्ज ज्ञान        |       |
| मनो नाश वास ना खयय ॥         | बुछतो |
| कुनुय मान कुनुय जान          |       |
| कुनुय पान जनिथ मान           |       |
| यि वथ स्यज पज कथ छय ॥        | बुछतो |
| म्या जोनुम पनुन जव           |       |
| सु शिव यस दोयुम न कांह ह्युव |       |
| ज्ञान सोदुर मृत्यंजय ॥       | बुछतो |
| यी वनख यी खनख                |       |
| ती चय अखर वनख                |       |
| ति वन बसू न्यरामय ॥          | बुछतो |



चय्य बो बहानय

सु सोरुय छु पानय

ननी त्यलि ह्यख यलि पय ॥

बुछतो

गूव्यन्द पान पुशरविथ

सोरुय केह मश रविथ

ग्यवान, ह्यथ लोलजा नय

बुछतो घरि चानि दय ॥



## बोज तम बोज

बोज तम बोज तम, क्या म्य भगवान गोम

बोज तम म्योन ॥

ठान रोस बान गोम

मायि रोस बान गोम ॥

बोज तम०

गंड रोस्त ह्योल गोम

पाहिल रोस ह्योल गोम

फल रोस्त ह्योल गोम ॥

बोज तम०

मेव रोस्त कुल गोम

मुशक रोस गुल गोम

ठठि रोस्त कदुल गोम ॥

बोज तम०



|                         |          |
|-------------------------|----------|
| आसन रोस्त लाफ गोम       |          |
| शेहलि रोस्त ताफ गोम     |          |
| ववन रोस्त वाक गोम ॥     | बोज ताम० |
| तोरि रोस्त छान गोम      |          |
| चारि रोस्त दान गोम      |          |
| माल रोस्त वान गोम ॥     | बोज०     |
| स्वर रोस्त ग्यवुन गोम   |          |
| नार रोस्त प्यवुन गोम ॥  |          |
| सग रोस्त ववुन गोम ॥     | बोज०     |
| गोरि रोस्त गुपुन गोम    |          |
| नून रोस्त स्युन गोम     |          |
| बोजन रोस्त वनुन गोम ॥   | बोज      |
| सोन रोस्त सोनुर गोम     |          |
| लाल रोस्त मोनुर गोम     |          |
| माजि रोस्त शुर गोम ॥    | बोज०     |
| रंद रोस्त तख्त गोम      |          |
| श्रव रोस्त मुख्त गोम    |          |
| दादि रोस्त सख्त गोम ॥   | बोज०     |
| कपर रस्त्य वजन गयि      |          |
| राज रोस्त प्रजा गयि     |          |
| धर्म रोस्त लजा गयि ॥    | बोज०     |
| द्वोद रोस्त कश्य गयि    |          |
| लोल रोस्त दर्य गयि      |          |
| पुरुष रोस्त त्रिय गयि ॥ | बोज०     |



डोनि रोस गुल गयि

पानि रोस कोल गयि

प्यवन रोस चोल गयि ॥

बोज

अथ रोस्त नर गयि

टोंगरि रोस्त पर गयि

पश रोस्त लर गयि ॥

बो०

अर्थ रोस्त पाठ गोम

धन रोस्त हाठ गोम

फाल रोस्त प्राठ गोम ॥

बोज०

छु शर मंजु मनि

गुव्यन्द कस बनि

तस ननि यस बनि ॥

बोज तम म्योन



जय जय आनन्द गण

जय जय आनन्द गण

विनती सुनो रे भगवान् ॥

वैकुण्ठ नाथ आवो

सन्मुख मुख दिखावो

मिटावो दुःख निरञ्जन ॥

वि०

आकर साथ लीजे

कृपा हम पै कीजे

दीजे शुभ दर्शन ॥

वि०



मेरे दर्द का ईलाज  
वैद से न होगा महाराज  
मोहताज तेरे हैं मोहन ॥

वि०

मनोहर तेरा मुख  
दर्शन से हटे दुःख

सुख प्राप्त हो उसी क्षण ॥

वि०

तुझ से फखत यह दान

मांगते हैं भक्ति ज्ञान

निरवान शुद्ध बुद्ध मन ॥

वि०

साधू फकीर सन्यास

उन को तेरी आस

उदास फिरते बन बन ॥

वि०

सेवू चरन कमल

शीतल तेरे हैं कोमल

फल पावों जाऊ अर्पन ॥

वि०

दर्शन देके प्रसन्न

करो हे पर परा नन्द

गूढ्यन्द को नारायण ॥

वि०



## शिव शंकर ईश्वर

शिव शंकर ईश्वर गर सोन बोल  
भक्ति वत्सल सर्व शक्ति मानो बोज ॥



आकाश पृथ्वी लूक पाताल तल

प्रथ कांह जीव च्य छारानो बोज

पूर्ण ब्रह्म अश्चर सर्व मंगल ॥

भक्ति

लोल दिम पनुन त्युथ युथ न जाह वोडल

होशकि होश प्राणकि प्राणो बोज

अस वनि रस रस मन न्युथम छल ॥ भक्ति

प्रारान छिय जल वुल चय मूल तल

तारि गमत्यन च्य तारानो बोज

शरने आसय अचल अटल ॥

भक्ति

हाव तम मुख दुख चलि ही वेमल

विज्ञान रव शिव नारानो बोज

भवसर चानि दर्शन पम्पोश फोल ॥

पूजा करय बोज पोरि प्यठ लोल ब्यल

भक्ति भाव पोश छुस छारानो बोज

मनि सर गोऽदिमय बो अशि केजल ॥

भक्ति

यमि पूजायि त्रयि ताप रुग बो बल

आश तोश छुख च जल कुमलानो बोज

वफ कर शक्ति पात दात पनने खल ॥

भक्ति

गर आमुत गूव्यन्द छुखो कर्म फल

आनाथ प्रारान भगवानो बोज

विनती कन दार तार तम कैवल । भक्ति





## नादा बु मरिमन्दि

नादा बु मरिमन्दि लायान छसय,  
राधा बु गूव्यन्दु प्रारान छसय ॥

यिख नय तु बर गछु दूर्यर न्याने,  
हयख नय खबरहा मरबु शरच्यानि  
जर जर औश हारान छसय ॥

बाल पानप्यठ द्रायस मच बनिथिय,  
लूकु लजाये पथ यच त्राविथिय,  
रात दयन नाव च्योनुय स्वरान छसय ॥

च्यानि लोल, पुछि गीमुतम्ये यच हौल  
बाल चन्द्र हाव मोख वाक्य च्यन पौल  
लोलु पोश च्यानि वेरि चारान छसय ॥

तन ज्ञाज थम म्य लोल नारय  
मन चूरि न्यूथ वारवारय  
तनु मन धन अर्पन करान छसय ॥

राज्ञाना बनावथन बार थस लोल  
लोल हच वरथन पोलुथ च्ये कोल  
छाल मारान वतऽ छारान छसय ॥

मुर्ली नादा रसूल त्रावुथ  
मुहनी रूप सुन्दर होवुथ  
सय रूप मन मंज बु धारान छसय ॥



बन्सरी नादु मन म्ये तम्बूलोवुथ  
राधा स्वामी चये प्रकटोवुथ  
सुय ध्यान धारनायि धारान छसय ॥

दोपथम बुय छुसय मऽज तय मोल  
त्राविथ छुनु छ्वा च्योन कोल  
दिचथमनुन नजरु यथ हालस छसय ॥

वाद कोरुमुत पनुन पालुन गोछ  
दूर्यर च्योन म्ये नो चालुन गोछ  
हारान ओश बु चालि चालि छसय ॥

सन्तन सीत लोग मुत च्ये करार  
आसान छस बो यति बेकरार  
गमऽच्छिर बु उदास बेकस छसय ॥

आसम न खबर हयक च यूत दूर  
लोलन च्यान्य कोरमुत म्ये थचमूर  
बोला वुछ वोन्य कमि हाल छसय ॥

गुव्यन्द कौल छुय नाव च्योनुय  
कमलायि छुय ना भाव च्योनुय  
क्षण क्षण च्यानिस ख्यालस छसय ॥

बन्सरियुन ओसुयस्यठा लोल  
तीम सिन्दु मोख अदु बोयुथ डोल  
कमला बु सुय सोज बोजान छसय ॥





## चिय हो ओसुख

चिय हो ओसुख हनि हनि  
राधायि कोडुख वञ्जे ॥

रव उदय गोख पूरिलने  
प्रव व्ययि तस मञ्जे  
तवु प्रजल्योख हनि हनि ॥

तस भोवुथ गोडु सोरुय  
मुचरिथ थोव थस च्ये तोरुय  
योरथस तु छुय धन्य धन्ये ॥

सऽल कोरनय तमि गगनस  
मऽल ओनुनेय जगतस  
कलि काल अयि जगि तारनये ॥

प्रजनोवुन पान पनुनय  
अदु होवुन सारिनिय  
शहजार फयूर च्यानि वन्ये ॥

भवसर तमि कीत्य तारो  
असि छये सऽय हितकारी  
भक्तन आमच गट कासने ॥

आगुर छुक चि पान्य पानय  
सागर सो ननि वानेय  
कतरन आमुच म्युल सो करने ॥



राज्ञायि दोर पानय ओवतार  
 वोत सारिनिय उपकार  
 असि आमित तस शरने ॥

कमलायि हिन्दु कृपायि सीत  
 बन्सरियस बनेय जीत  
 पूज करान ताहि सु मन्ज मजा ॥



## कुनुय औसुम

कुनुय औसुस = कुनुय रोजस  
 कुनुय थोवनस = गौरन बु शब्दस  
 कुनुय नो कांह = कुन्यर पानस  
 म्युल म्य गछिय = गोरस त पानस ॥

शाहस खोतुम पम्पोश माये

शाहस ओसुस जूने ग्राये

शाहस आयम गोर सन्ज छाये

शाहस वोदनस निशे पानस ॥

म्युल म्य

रच्छी बुछ योम = गोरय सोरय

रच्छी बुछयोम = सोरई मोरय

रच्छी गय्यम रोवुम मोलय

रच्छी थोवथस मंजय ज्ञानस ॥ म्युल म्य



नव्यर वुछम = नव्यर न जांह

नौवय नौवय नौवय न कान्ह

बुइय छुस नौवय = नव्यस पानस

न्यविस जहानस = न्यवस मकानस ॥

पोशस दपान गछ रोज छाये

पोशय छुस पकान = पोशय ढाल्य

माय छय्स पोशस = गूव्यन्द नावस

त्राव्यस कथे = थस जानानस ॥

म्युल म्य गछी गोरस त पानस ॥



## अस्य ओस

अस्य ओस कुसतान्य

अस्य वुछ क्याह तान

कोत सना गव सु सोनय प्रकाश ॥

गठि मन्ज कड़थई

गाश हव्यथई

अइ ल्योक त्रविथई चोल सू आकाश ॥

को

गाशा ओसुय = वन पोहस मन्जई

कोत सना गछव = वोजा अस्य दास ॥

को



गूढ्यन्द सोन छु प्रजलान  
 चम्कान छु माहे तांबान  
 राधा स्वामी आमत ओस  
 दयाल सुन्दुय बनित दास ॥  
 सैलाब खारयई = वत्य सारय छच्छथई  
 सूहम रठि थई = बनित गव पाथ परम प्रकाश ॥  
 दमह दुय्त म = दमह छोड़मय  
 खारथ वुछ मय = राधाय निशे  
 सु ज्योति प्रकाश ॥  
 बढी त राधायि = खोनि मन्ज ब्यहत्य  
 पोशन वुछई = दिलस मन्ज  
 गूढ्यन्द गाश ॥



## सोन सतगुर गवय

सोन सतगुरु गवय परम धामय  
 परम शिवन सोहय वोर पानय ॥  
 आमुत ओस अवतार दरिथ  
 अस्थि पपियन गव पाप हरिथ  
 दितुनय तम्य असि अमृत धामय ॥  
 कासाऽन अस्थि जन्मच खऽरी  
 कर नय तम्य कच्चा यऽरी  
 कासाऽन अस्थि जन्मच हानय ॥ परम  
 बताव्री मुन्नीश्वर ओस आमुत  
 संसार पुछि ओसुय जामुत  
 मोकलविन शेहर त गामय ॥ परम



सास वदिनय वर तम्य छुतुनय

मायायि हुन्द जर तिमन चोटुनय

म्यति पननुय शर हय द्रामय ॥ परम

नूरक नूर ओसुय शूभान

तस डीशिय मन ओस लूभान

करुन वयकुन्ठ कुन प्रस्थानय ॥ परम

वति दिवता तय व्ययि कारन

जायि २ तस अस्यि प्रारान

सूज हस पलिक तय व्यमानय ॥ परम

मोक लोवुय तम्य पनुन पानय

रुजिस नय जन्मच हानय

त्रिकारन छिस तति प्रारानय ॥ परम

तम्य ह्योतनय यलि तोत सखरुन

रुम रुम बोलान ओसुय उम

दयाल सन्त ह्यत बोठ तस आसय ॥

इन्दराजन रुद कति बोलुन

तमुन्द वाक्य किथ पठय पोलुन

बद्री योहय छुय अरमानय ॥ परम



सोन सतगरु ओस

सोत सतगरु ओस भाग्यवानय

विषन भगवानस सूत्य तस जानय ॥



तोरय सुय ओस बोज वानय  
करिहे कुस तस सूतय मानय  
ज्ञान सोदरय ओस आसनय ॥

वि

परम पदवी ओसुय प्रविथ  
नन्य पठयो छुतनय हविथ  
बीद व्यस्तोरुय तम्य पानय ॥

रुम २ सू ओसुय ललवान

जाय जाय तस ओसुय मोलवान  
शिव त ब्रह्मा तसन्दय प्राणय ॥

वि

राधा स्वामी सुय पानय  
तस पुशरिथ पनुनुय पानय  
तस सूतिन गव वुफानय ॥

वि०

सालिग्राम ओसुय प्रजलानय  
नूर तम्य सन्दि त्वूर चलानय  
यती कोरनय पानस फानय ॥

इथ पाठय कृष्णस सूत्य अर्जुन  
तिथ पाठय सुय तंसुन्दुय फरजन्द  
निरञ्जन ओस सोरानय ॥

वि

श्री रामस सूत्य यिथ पठय हल मत छु आसान

भगवानस सूत्य गूढ्यन्द कोल बासान  
जिन्द पानय प्रोवुन न्यर्वानय ॥

वि

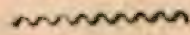
बद्री प्रथ विज ई छु बासान  
सतगुरु छुमय खुर कासान  
दयाल ह्यथ तति आ सानय ॥

वि

॥ ॥



## सन्त कथा



- 1 कथा भक्ती हन्त वन्य म्यबूजमच छम  
दयस नो केहति त्युथ ठोठ युथ छु प्रेयम ॥
- 2 सदा शिव द्राव अकि दोह गोवरि हथ  
करिन लग सल्ल वननय भ्रशबसय वयथ ॥
- 3 पकानय अऽस्य वति प्रेयमय ग्यावानय  
तिथुय वागुर तिमन आवुय मिथानय ॥
- 4 सदा शिवन ब्रशबय प्यठ वोठ छिन्य  
नेजिर यामय गोवय मैदान तिमन शुन्य ॥
- 5 करनि लवग जायि अथ प्रणाम डण्डवथ  
वुछय गौरी दोपुन क्याह ताम छय कथ ॥
- 6 तिथुय छीन गौरिये वोठ कोरुन प्रणाम  
प्रिछनिलजि शम्बू हस कम्य सुन्द यिछु यि दाम ॥
- 7 वनुस फीरिथ शिवन योरय असानय  
नेवन दारि औसुक ओश वसानय ॥
- 8 शम्बू लोग वननि ही गौरी वुनय बोज  
अमा मन सावि धानय गोड करिथ रोज ॥
- 9 गछिथ यह सास वरिये वोथन सदय  
करान आसनय सत संग साधय ॥
- 10 वनिथ क्याह हाकि ज्यव सुमरन करिथ मन  
सो जायि छूच युथ छुय व्यशन भवन ॥



- 11 तिहिन्दनय पादनय प्रणाम कोर म्येय  
थोवुय करिथ म्य ब्रौठिय वोनमय च्येये ॥
- 12 यि ब्रूजिय गौरिये अयावु असोनुय  
होत पोत फोरिथय ब्रशबस रव सोनुय ॥
- 13 शिवन दोप गौरिये छय्व बोज नादान  
च भक्तन हुन्द महिमा छबन जानान ॥
- 14 जपन छुस नाव यमि सुन्द राथ तय छन  
सु रामय फेरनय पत पत छु भखत्यन ॥
- 15 ब वाये वायि अकि दोह वयकोट चास  
बुछुम खल्ली स्वर्ग भगवान न तति द्रास ॥
- 16 वनिथ क्याह हाक वापस यिथ छननिथ प्योस  
बुछुम पथ कुन म्य सुथ सन्थन निशे ओस ॥
- 17 छुयो म्योनुय रूप साधय सतजन  
म्य छिम टऽठी लगय तिहिन्दन ब चरणान ॥
- 18 वनय क्याह भखित मानय म्यडिन प्राणाय  
करन तिम प्रेमम गङ्ग जलय छि श्रानय ॥
- 19 तिमन न कांह मल न हृदयस तिम छिन्यमल  
सरल च्यथ ब्ययिछि उपकऽरी त निशकल ॥
- 20 छुस असली रूप म्योनुय योत सोरुय  
तिमय गयि स्यद यिमव जोनुय व्यचोरुय ॥
- 21 करन तिम सरसय मज् ओम ओमय  
परन तिमनय छि रुम रुम ओम ओमय ॥
- 22 स्यठाह शरमन्द गयि दीवी ति ब्रूजिय  
दुबारह खऽच सोब्रशबस डण्ड वथ दिथ ॥



- 23 खसिथ शम्बू ति द्रायि वऽन्यो कैलास  
वनन शम्बू अमिसय दासन द्वन्दय ब दास ॥
- 26 बनिथ यलि आव सन्थय पान भगवान  
बलय राजस मोन्गुन त्यलि तम्य द्युतुसदान ॥
- 25 अमा पुश प्योस तोते अर्ध पादय  
द्युतनस जव पनुन कोरनस न वादय ॥
- 26 तुलिथ ब्रह्माण्ड प्यठ अख पाद होवुन  
दोयुम खोर तल पाताल वात नोवन ॥
- 27 युथुय ब्रह्माजीयस मां नजरि सुय गव  
छलन बापत ब्रह्मा जी तुजयदिव ॥
- 28 सु छलिथ चरनो दकय च्यव गव प्रसन्न तमिस मन  
तवे दोपमय लगय बो सन्त चरणन ॥
- 29 फिरिथ बाकी गडस थोव प्यठ कलसम्ये  
छु गंगा नाव कोरु मुत अथ जलस म्ये ॥
- 30 लगन साधन हुन्दि खोर यतिथय बोज  
तिम छिय बडि तीर्थ शख त्राव खोश रोज ॥
- 31 बोथन ब्येहन तिमन छुय म्योन ध्यानय  
बुछानय तिम चौपऽरी पान सानय ॥
- 32 बुछानय छिय चौपऽरी गौरिये म्ये  
गछन योत २ त्युहुन्द प्रकरम छु सुय म्ये ॥
- 33 तिमन छयना समाधो राजि रोशन  
तवे दोपमय लगय बो सन्त चरणन ॥
- 34 तिहुन्दुय छयोत त च्योन गयि म्यानि सीवा  
व्यय केह करनय सो गयि म्यानि पूजा ॥



- 35 शीङ्गुन तिहुन्ददुय छुय डुब्बवथ करुन म्ये  
छि कथ तिहुन्जय करुनि गोथय ग्यवञा म्ये ॥
- 36 निरुदय करुन रोस्त छुख चति निरुदय  
तिमन छुय द्वर गोमुत काम कूद्याय ॥
- 37 सऽर्यनछि कर यिमनय नमस्कार  
यिमय दिववनि छि यथ सम्सारसय तार ॥
- 38 छि यिम अटल वऽथो यथ भवसरस मज्ज  
करिथ व्यवहार निर्मल छिय गरस मन्ज ॥
- 39 तिहुन्दे दर्शनय पापन बनन नाश  
उद्धय गछूनय मने मंज ज्ञान प्रकाश ॥
- 40 बनन छुय साद संगय सूत्य मुक्ती  
बनन अटल श्रदा वाननछि भल्लि ॥
- 41 यमिस बनि साध दशुन तसछि बडिड भाग  
तमिस करुनय सोफल गवतिर्य प्रथाग ॥
- 42 तमो कर्कधान तफ तिर्य सऽरी  
तमो कर्क तिर्यनय हन्दि श्रान सऽरी ॥
- 43 अकिस सातस ति साधन निशि व्यहनस  
सु फल छुय यी करिथ तप वरिय सासस ॥
- 44 बडयन योन्यन हुन्दुय फल साध दशुन  
दयो गूव्यन्दस गोछ यी दोहय धुन ॥
- 45 कर सतसंग युस अद सूत्य सन्थन  
वनय महिमा तम्यस अद कूत आसन ॥
- 46 करुन तिम यस कृपा तस क्याह बनोनय  
वुछन तिम शिव औपडिर जुवछिय पनोनय ॥



- 47 गच्छिथ तिर्थन छु अख फल जीव प्रावन  
यमिस सन्तय छि सम्रवान तस छु चौगन ॥
- 48 बौनुस गौरीय दोयुम सन्तय कथा वन  
स्यठा गोम पऽद प्रेयम छस थविथ कन ॥
- 49 वननि लोग गौरिये कुन पान शम्बू  
सु शम्बू सोदर यस कल्यान कुय छुय ॥
- 50 भरत खन्ड यमि सन्दे नावूक छु यथ नाव  
वनय बिलकुल छोटुय कथ वार कन थाव ॥
- 51 भरत राजस यले वैराग आवूय  
सु सन्तन साधनय छारान द्रावय ॥
- 52 यछा अऽसस मनस मंज ह्यम ब उपदीश  
तमी अमि सन्कल्प किञ्ज कृत्य छऽडिन दीश ॥
- 53 दोह अकि वातनय वोतुय तपोवन  
बुछिन अति रंग रंगय साघ सतजन ॥
- 54 बुछिन यूगी मुनीश्वर ब्रह्मचारी  
बुछिन मन्डेज सादन हन्ज चौपऽरी ॥
- 55 अजब ईकान्त यामत नजरि आसय  
मनन योछू नस करुन गोछ यति निवासय ॥
- 56 बुछिन गंङ्गा वसान बोलान शिवय शिव  
स्यठा खोश गव भरत राजस बुछिथ जुव ॥
- 57 बुछिनि त्वग ग्वूर यिमन मन्ज कस ब धारन  
भरत राज ओस मनस मंज यी व्यचारन ॥
- 58 शरण गछि २ प्युवुय सारिन परन सुय  
नेवन डालनय सन्तय चरणय ॥



- 59 वुछुन अग्द कुन यिमन सज् अख छु साधा  
अलोक्यक अछ मुन्नरिथ यस समाध ॥
- 60 स्यदय मूगी जानी दोद यानय  
जत्यद्वय शान्त रूप शुभायि मानय ॥
- 61 मन चरणन मलन जून जनि जोरा  
भरत राजन युथय वुछ तुजिन दोरा ॥
- 62 धुतुन प्रणाम बारम्बार अतिनस  
थोबुन सतसंगसय अति कन सोगुस रस ॥
- 63 ग्यवान अजिंस विजि २ भक्ति अमृत  
युथुय ती बूज भरतन तन गयी सथ ॥
- 64 वथित चरणन करुन प्रणाम ब्ययि तम्  
शरण गछय परन प्यव वोन यि अद तम्य ॥
- 65 जन्म कत्याह गयम म्य तोहि छारान  
म्य लखिमव अज वोझा कहि ताम कहिताम ॥
- 66 छिवना तोहि दीन बन्दो जान सागर  
दया दृष्टि करिव तोहि वरिव म्य ईश्वर ॥
- 67 शरण आस भक्ति वत्सलो कृपालो  
अनाथस प्यठ दया करतो दयालो ॥
- 68 यि बूजिथ तस गोरव दिति मटि मटे  
दोपुहस केह न फिकरा असि च मटे ॥
- 69 प्रणामा दिथ भरत जी खोतय जंगल  
अनिन फल फूल तडलसी पूजि कित ब्यल ॥
- 70 करिथ आव सू गङ्गाय जल ति श्रानय  
अथस वयथ अर्ग पोशि ब्यल यानय ॥



- 71 गोरु पादन लिशे श्विन कोरुन म्यूठ  
करिथ प्रणाम गुलि म न्दथ पत्थर ब्यूठ ॥
- 72 छिना सत गोर दवाये हन्दि व्यदानय  
भरत भक्तिस धुतुरव सत नाम दानय ॥
- 73 गोरव पानय मुचरिथ थोबुस तोरुय  
दोहय दपहस करुन क्याह गछि ति सोरुय ॥
- 74 गछिय कंह दोह त्रिबीनी तीर्थ आवय  
करनि सरबरय लगि बरनी चावय ॥
- 75 गछनि लगि साद्य ग्रहसती यात्रये  
तुलिख डेरय पत्यकिन हत्थ द्राये ॥
- 76 भरत राजनि संगी गयि अज्ञायाये  
गछव अस्ति गुरन मंगनि आये ॥
- 77 गोरव दोपहरव अच्छा गछिव स्यठाह जान  
करिथ प्रणाम गरुन तिम द्रायि दोरान ॥
- 78 भरत जी पान ब्यूठ सेवायि भापत  
मलनि त्वग गोर पादन आज्ञा हाथ ॥
- 79 बोनुस गुरुनय च कोनो घोख भरतो  
अम्युक कारण छु क्याह प्रछनीय छुसय बो ॥
- 80 भरतन फोरथिय द्रोप ही भगवान  
समिथ तिर्थय छि यति नस तुहुन्दि चरण ॥
- 81 यि बूजिथ कोर गोरव भरतस शाबाश  
बनि नोन बुज हन्दिन नेत्रन च्य जल गाश ॥
- 82 गोरव भरतस बोनुय बोजा ब्येह च न्यबर  
फिरिथ श्विजि च पत कुटि यायि हुन्दबर ॥



- 83 ब कर आराम च गछ फेर न्याबर बेह  
करी रवोश यखतियारय करत छु रसिछ ॥
- 84 करिथ प्रणाम भरत भक्तय न्यबर द्राव  
वनय कोता मने मंज ओस तस भाव ॥
- 85 फिरिथ बर थोव नम्य कुटियायि हुन्दुय  
त्युथुय ब्यूठूय सु युथ रुजस नजरय ॥
- 86 गछिथ परहा प्रूशे सात मरथन  
बुछिन गुरिनय प्यठ त्रिय तार दोरन ॥
- 87 स्यठा मलीन बुछिनख नऽल्य वस्त्र  
कनन जेवर कहुन जून ओस शस्त्र ॥
- 88 स्यठा मोकुय बुछिथ गयि तस ति नफरत  
भरतनय कर नय कर यिमव कथ ॥
- 89 गुर्गव प्यठ वोठ छिन्यख नन वारि आये  
जने त्रिशिदय तिमय कुटियायि चाये ॥
- 90 अचिथ अन्दर कोरख कुटियायि बन्दबर  
मलनि लजि सन्थ चरणन द्राव खय शर ॥
- 91 भरतस गव यि शख क्याह ताम छुय कथ  
अचिथ बर बन्द यिमवय क्याजि कोर अथ ॥
- 92 भरतय बुछिनिल्वग यिम नेरनय कर  
गछिथ पहरा न्यबर तिम द्रायि सोन्दर ॥
- 93 नजर यामत प्ययस मचुरुय तिमव बर  
भरत मनसय अन्दर लोग करनि आश्चर ॥
- 94 बुछिथ भरतस यिमय गयि अकल तस दंग  
बुछुन आश्चर युहुन्दुय रूप तय रंग ॥



- 95 स्मृताह तिम रूप वानय तीज बरिथय  
मनोहर क्या सोन्दर पैराव करिथय ॥
- 96 भरतस आव देमाग सपुद सु मोहतर  
पकन तिहिन्दे हरन ओस मुशक अम्बर ॥
- 97 खसिथ वनवय गुर्यनय दार त्रस्वख  
भरतस बुथ पनोनय वार होबुख ॥
- 98 यिथय पठिठन बुछुय भरतन पगाह ती  
बुछुमुत काल ओसुस आश्चर यी ॥
- 99 तिथय पठयो तिम आईय त द्राये  
भरतय बेयिअद रुदय जागे ॥
- 100 युथुय तिम द्रायि गुर्यनय खसनि लजे  
भरतन थफ करज पत्य किन करिथ जय ॥
- 101 भरतस कोर तिमव फोरिथ जयकार  
भरत लोग प्रछिनि तिमनय बुछन वार ॥
- 102 दोपुनख नाव क्याह छुव तोहि माता  
दोपुस गङ्गायि छस गङ्गायि जमना ॥
- 103 यि छय माता सरस्वती त्रेयम जनि  
म्य नय थरवय खथिय काह कथ वनयननि ॥
- 104 भरतन याम बूज कोरनख प्रणामय  
भरत राज्य व्यचारीन लोग यि तामय ॥
- 105 दोपुनख योर तोहि अयेव क्याजे  
मनस मंज छयम गमचि अख शंखाये ॥
- 106 तुहुन्दुय रूप ओसुव बोंड मकुरुय  
बुछुन छुस ओर नीरिथ अऽन नूरुय ॥



- 107 अम्युक कारण छु क्याह माता वनिव जल  
सथय वनिज्यम त केह वनिज्यम न छल बल ॥
- 108 यि बूजिथ वनवय लजय असजने  
वनान्य अद लजि गुरिनय खसजने ॥
- 109 भरतो भ्रम च्य गोमुत छुय मनस मज  
छि किथ तिम संकल्प नारायनस मंज ॥
- 110 भरतो मन च कर गोड साविधानय  
च्य क्याह गोय ब्रम च अजिसिथ व्यदवानम ॥
- 111 त्रिबीनी तिथस लनिमत्य वे दोह वस्य  
छि तोत आमत्य स्थठाह अज पऽपीय यऽत्य ॥
- 112 स्थठाह रत्य आयि भक्त कांह नय पूर  
करिथ पापय न ह्योक हय सोनुय दूर ॥
- 113 तवय यिहन्धन रणन निशि असि वऽत्य  
छि अजिकिस समयस पूर्ण धिमय यऽच ॥
- 114 अगर यिम तोत यिहन असि स्थील न युन ओस  
अवय योत यिथ असे सन्कल्पय कोस ॥
- 115 स्थठाह तोर आयि पऽपी कोरुख श्रानय  
छलिथ मन प्राण व्यज पऽठय धितुख दातय ॥
- 116 तिमन चलि सानि श्रानय पाप सऽरी  
तिमय असि लगि त अस्य सऽपिन व्यकऽरी ॥
- 117 छिन ययिस पाप तोत तामथ हरऽनय  
न योत तामथ लगन सन्तय चरणनय ॥
- 118 तवय अस्य सन्थ चरणन आयि शरणे  
हरनि लोग तीज अस्य पाप हरने ॥



- 119 लगन यामथ छि तिर्थस साध चरणय  
बनन निर्मल सु अद पापय छि हरदनय ॥
- 120 छि सऽरी पाप सऽनिय तिम ह्यवानय  
मगर सन्तन न यिम केह छिय करानय ॥
- 121 छि यिम रोज्ञान हवालय ईश्वर सय  
छु वऽतिथ ईश्वरऽय सुय जर जरसय ॥
- 122 छु कर्मुक फल दिवन सुय पान ईश्वर  
योमस यी वाति दी तस ती बराबर ॥
- 123 करन यिम साधनय हन्जय छि न्यन्दा  
छि यिम पापय खसन अद बन्य क्याह ॥
- 124 छि यिम सन्तन त सादन ग्येलनय बोज  
यिमय पापय तिमनय म्येलनय बोज ॥
- 125 करन निन्दा दिवन साधन छि पामय  
तिमन क्युत ईश्वरन थोव यी वनत्सय ॥
- 126 ह्वडन असनय कडन ब्रेड यिम छि सादन  
खसन पापय तिमन यिम बारि थव कन ॥
- 127 बरन भावय करन तोता छि सन्तन  
मिन सन्तन हुन्दय पोञा फल छु मेलन ॥
- 128 न सन्तन छिय पोञा तय पाप रोज्ञन  
वोनुय असि प्रेयेम किञा छुख कन च थावन ॥
- 129 योमस सन्तन हुन्दुय योत भय चत्रावय  
सु सन्तय दीव किञा ब्रूँठि आवय ॥
- 130 वनानय यी तिमय त्रनवय द्राये  
गयय तिम तोत यति प्यठ ब्रूँठ आवे ॥



- 131 भरतत्वग दपनि हय हाय हाय हाये  
यि क्या क्वर म्य यि क्या बोज गोम वाये ॥
- 132 गरु न्यर्मल छि मनसय क्याह गयम राय  
मनस मंजय गोरय न्यन्दा करम हाय ॥
- 133 म्य पानय नरकसय मंजय करम जाय  
जिन्दय मोर वाति जालुन यी छु उपाय ॥
- 134 वनन शास्त्र छु प्रायाचित अम्युक यी  
ग्वरय न्यदा कर वुन पात की छुय ॥
- 135 भरत जी पाने ओस पण्डित पटीय  
सु ज्ञानन कथ कथय क्या वातनय छुय ॥
- 136 खसिथ जंगल अनुक ज्युन कोरुख अम्बार  
दोपनय जाल पानय करुख व्यचार ॥
- 137 गुरुस गोड आज्ञा हाथ गछि युनुय  
तवय पत पान जालुन पजि करुनुय ॥
- 138 नतय खऽस दूशिसय प्यठ व्याख अपराद  
दवन २ गुरुस निशि गव रटिन पाद ॥
- 139 वदन २ गुरुस वोननय वृतस्थय  
दियिव आज्ञा म्य पानय जाल वोजा बय ॥
- 140 गुरुन दोनस भरतो छुख च मुखय  
करन कोनो छुख व्यचार केह चय ॥
- 141 तिर्थ सपुद ब्ययि म्यानि दरशनय शऽद्ध  
च्य कति छिय पाप वोजा ती कोन छय बऽद् ॥
- 142 भरतन याम बूजुय आव तस होश  
दवन २ चरणन लाऽगनय पोश ॥



- 143 दिह्य जालख यि दिह छा चोन वनतम  
भरतो क्याह गवुय अथ बुनि छुया भ्रम ॥
- 144 मनन व्यचार पाप दिह सय कथ च्य पुशरुथ  
च नय दिह मयन रुथ क्याजे पान मश रुथ ॥
- 145 च छुख निर्मल करिथ काविथ त सोरुय  
अंहकारय किने छोटमुत रुथ बोरुय ॥
- 146 अंहकार त्राव त्रावुन गव हतो यी  
न जानोन य जगत गछि नय च्यत बुय ॥
- 147 परे छन भाव त्राव प्राव ब्रहम भावय  
शिवय जान पान सानय प्रथ हवावय ॥
- 148 योहय निशचय च दर कर बा व्यचारय  
छु आत्म न्यविकल्पय त्राव व्यचारय ॥
- 149 भरत बूजिथ बन्योवुय निविकल्पी  
बन्याव जीवन मुक्त दवन दवानय ॥
- 150 यमराज्जन यमय दूतन वोनूनय  
समय भरतस छुय वोजा गछि अनोनय ॥
- 151 धर्मराजनि कलमय केह दीतव  
टिकानय गयिजि भरतुन जीव अनव ॥
- 152 वुछुख अन्दरय त न्यवरय शिव सु गोमुत  
ब छुस भरतय अम्युक अभिमान प्योमुत ॥
- 153 वुछिथ यी अश्चरस यम दूत संपनि  
लगी पोत २ चलिन ह्यति हय कडिपन ॥
- 154 तिमव वोन क्याह हावव धर्म राजस  
छु यति सोरुय शिवय वोजा क्या वनव तस ॥



- 155 कडोनुय कुस निमोनुय हाय तोरुय  
अन्दर न्यबर बनयोमुत शिव यि सोरुय ॥
- 156 गयि यम दूत शेछि ह्स्थ धर्म राजस  
तोहे महाराज असि सृजिव निशि कस ॥
- 157 भरत नय नाव मात्र ताजा तोरय  
बन्योमुत अन्दर न्यबरय शिव सोरुय ॥
- 158 वननि लग्य धर्म राजस यम केकर  
चूली चूरे बुछिथ सुय चायि थर थर ॥
- 159 च या मारख जि सन्त तय साद्य सऽरी  
तिहिन्द उपदीषनय यिम जीव तऽरी ॥
- 160 करन उपदीश छिख आत्म ज्ञानय  
तवय तिम च्य ति असि छिय बुथफिरानय ॥
- 161 लगन यिमनय छि सन्तन हिन्द चरणय  
बनन निर्मल तिमन छिय पाप हरनय ॥
- 162 कख क्याह असि च क्या करख तिमनय  
छि सायस सन्त सतगरुय यिमनय ॥
- 163 करव क्या असि सन्तन निशि न केह ह्योक  
सिर्फ असि दिह अभिमानी अनिथ ह्योक ॥
- 164 धर्म राजन वोनुख बुजिव थविव कन  
न गछि जाह तोत गछुन यति आसि सतजन ॥
- 165 तमी सातय वते गौरी तोनुय गोस  
सिखिम दृष्टी किनी बुछुमय स्वरन ओस ॥
- 166 ब छुस सोरुय कुनुय चीतन दोवय  
छुसय सारी निशे अतीत ते बुय ॥



- 167 मनुक धर्मय कथन च्यन्तन छु सोरुय  
ब चीतन अमि ति निशि छुस अतीथय ॥
- 168 अतथिय अमि ति निशि छुस अतीथय  
वनन पानस सुयी ओसुय म्य वुछमय ॥
- 169 म्य वोनमस ही भरथी दन च धन्य धन्य  
स्वरूपस पननिस छुख म्यूल मुत वोज ॥
- 170 भरतन ओर असुना छुनिथ वोननम  
म्य मन्ज म्यलुत न म्यलुन छा च्य छय भ्रम ॥
- 171 छु मायाये त दृशस मंज यि म्येलुन  
म्य च्यजिनस अन्दर नय पजि च्ये तेलुन ॥
- 172 म्य वोन मस यलि चय चीतन सोरुय  
त्यले चय दृश अदृष्य म्यलुन न म्युल छुय ॥
- 173 भरतस छोप गयि गव न्यविकल्पय  
अवस्था तस बनेयो क्या वनय बय ॥
- 174 म्य तव पत वोनस दोयि लटि भरतो  
च वन कुस छुख म्य पृछानय छुसय बो ॥
- 175 यि बुज्जिथ भरतनय तमि यिजि न केह वोन  
तमी विजि भरत भावय तस विशे छचोन ॥
- 176 गछिथ केह काल वनने लोग छु आश्चर  
छु पानय शिव प्रिछन पानस कथय कर ॥
- 177 म्य वोन मस ही भरत च्यय निशे आस  
अ कर आत्मनि रूयय शख म्य चय कास ॥
- 178 म्य निशि गछ दूर वोन भरतन म्य फीरिथ  
भावाचे पद सुजीव किन ह्योकन नीरिथ ॥



- 179 दोयुम कुस छुम्य ब्योन सुय ब च्य हाव नय  
बूर्यामि रुरय छुसय चीतन गनय ॥
- 180 वनन यी गव भरत ब्ययि मन्ज समजय  
सु गोय मन्ज त्रानिय सारेय अपजय ॥
- 181 विद्ध भुक्ती ति प्रस्वन परम पदवी  
वनी तमिसिन्ज कथय पानय म्म वुछथय ॥
- 182 शिवन दोपनस जि यिम सन्त आश्चरी छिय  
स्यठाह प्रसन्न यी बूथि गयि सो गौरी ॥
- 183 दोपुस दीवी म्य वनतम वार पठो  
छि किथ तिम आस वञ्ज यिम च्यानि टठो ॥
- 184 शम्बू नाथन वोनुस फीरिथ वनय बोज  
अमा गोड सावि दानय मन करिथ रोज ॥
- 185 स्यठाह दुर्लभ छु प्रज्जनावून भक्त जन  
वनयथि आस वञ्ज छिय तथ च थव कन ॥
- 186 अमा बोज तोति केह तिहिन्दी च लक्षन  
करन उपकार रात्र धन छि सथ ज्ञन ॥
- 187 गृहस्ती आसनय या तिम विरक्तय  
म्य निशि दोनवय हिवी छिय तिम त भक्तय ॥
- 188 करन उपकार साधन पननि वंसे  
दिवय तिम सरिनय सख दुःख न कंसे
- 189 तिमय गयि साध यिम पर उपकरी  
तवय वोनमय लगय बो पडिर पडरी ॥
- 190 तिहुन्द हृदय छु रागय दीश रोस्तुय  
दयाये हन्दि न्यदानय ज्ञान सोस्तुय ॥



- 191 उधुगी आस वजा तिम छिय जित्यद्वय  
करन जीवन सतुक उपदीश निर्भय ॥
- 192 सहज यूगुक अभ्यासी तिम छि साक्षय  
उत्तम यूगी तिमय गयि थव च यादय ॥
- 193 यिमय सन्तय छि छुख सरल सोभावय  
छु भखित वत्सलय अदत्यु हुन्द नावय ॥
- 194 महा गंभीर च्यथ निर्मल छु साधन  
तवय वोनमय लगय बो सन्त चरणन ॥



